TAKLEEF NA DIJIYE (HINDI)

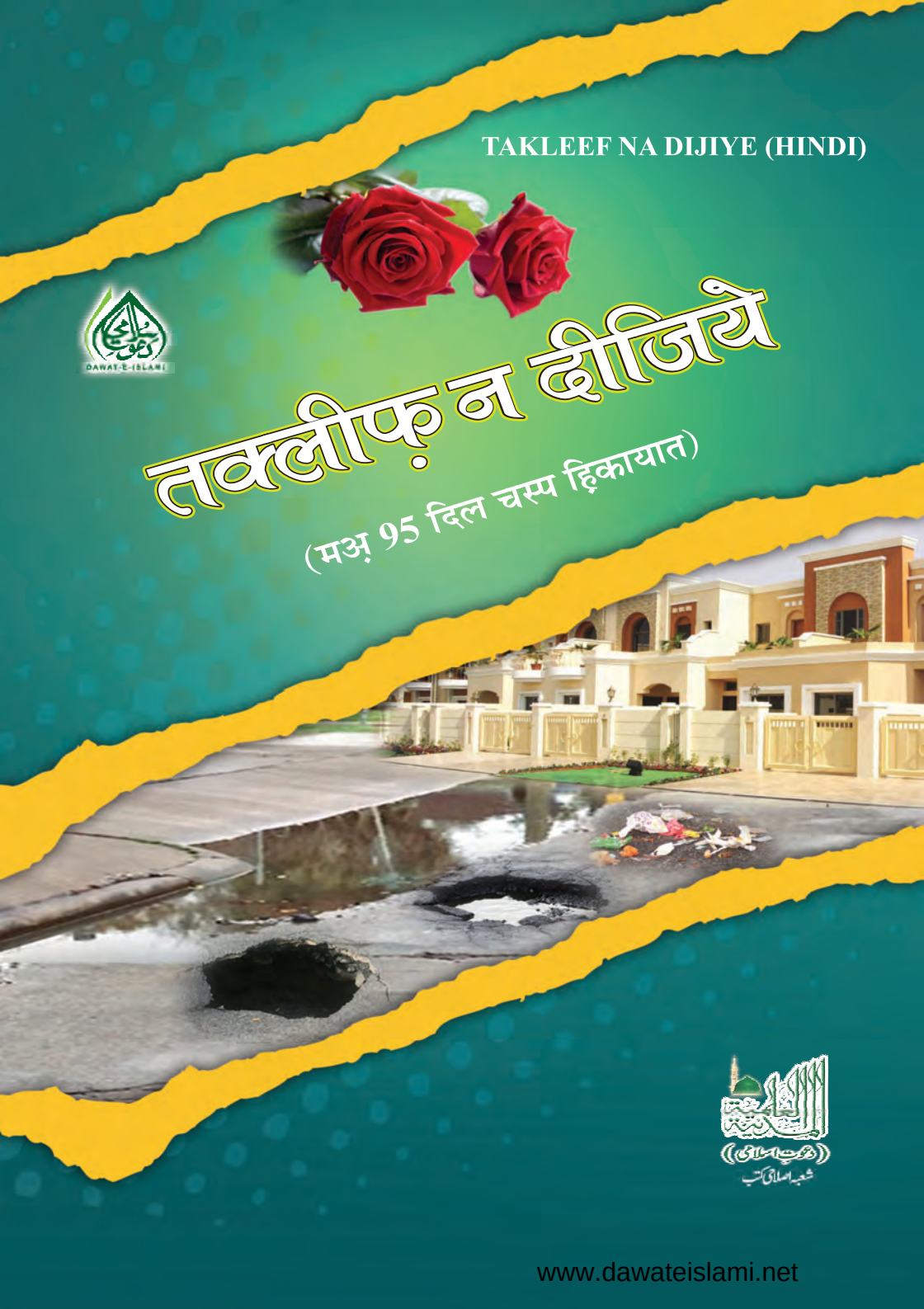

तक्लीफ़ न दीजिये

(मअ़ 95 दिल चस्प हिकायात)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सत्र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = ٹھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

तक्लीफ़ न दीजिये

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, देहली-6

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

नाम किताब : **तक्लीफ़ न दीजिये**

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 24 जमादिल उख़रा, सि. 1437 हि. ह़वाला नम्बर : 207

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"तक्लीफ़ न दीजिये" (उर्दू)

(**मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना**) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
03-04-2016

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"तहम्मुल व बुर्दबारी" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "12 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ

मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الكبير للطبرانی، ج٦، ص٥٨١، حديث: ٢٤٩٥)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (6) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (7) कुरआनी आयात और (8) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (9) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (10) जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (11) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (12) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं[1] **:**

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

1.....तादमे तह़रीर (जमादिल उख़रा 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है । तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक **1425** हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़्फ़िरत हो गई

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरा एक इस्लामी भाई था, मरने के बा'द उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया। मैं ने पूछा : किस अ़मल के सबब ? कहने लगा : मैं ह़दीस लिखता था जब भी शाहे ख़ैरुल अनाम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़िक्रे ख़ैर आता मैं सवाब की निय्यत से صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखता, इसी अ़मल की बरकत से मेरी मग़्फ़िरत हो गई। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص٤٦٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत 1

गन्दुम की बाली

हज़रते अ़ल्लामा इब्नुल ह़ाज मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने अस्ह़ाब के साथ गन्दुम के खेत के पास से गुज़रे तो उन के साथ जाने वाले एक शख़्स ने गन्दुम की बाली को छुवा और फ़ौरन हाथ हटा लिया। बुज़ुर्ग ने येह मन्ज़र देख लिया और उसे हुक्म फ़रमाया कि खेत के मालिक से इस मुआ़मले को मुआ़फ़ करवाए। उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! गन्दुम की बाली तो उसी त़रह़ मौजूद है और मेरे हाथ लगाने से इस में कोई कमी नहीं आई। बुज़ुर्ग ने इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : तुम्हारा क्या ख़याल है कि अगर एक हज़ार या इस से ज़ियादा लोग यहां से गुज़रें और सब तुम्हारी त़रह़ इसे हाथ लगाएं तो क्या इसे नुक़्सान पहुंचेगा ? उस ने जवाब दिया : जी हां । इरशाद फ़रमाया : तुम ने जो किया है वोह उस ज़ुल्म में से तुम्हारा ह़िस्सा है, फिर उस शख़्स ने जब तक गन्दुम के मालिक से मुआ़फ़ नहीं करवा लिया आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने न उस से कलाम फ़रमाया और न ही उसे अपनी सोह़बत में रहने की इजाज़त दी । (المدخل،۱/۲۸٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक इस दुन्या में तन्हा आता है और अकेला ही रुख़्सत होता है लेकिन यहां रहता तन्हा नहीं बल्कि दूसरे लोगों के साथ ज़िन्दगी बसर करता है, हमारी ज़ात से कभी किसी को राह़त पहुंचती है तो कभी तक्लीफ़ और कभी कुछ भी नहीं या'नी तक्लीफ़ न राह़त, अगर दीगर मुसलमानों को हम से राह़त पहुंचेगी तो निय्यते ख़ैर होने की सूरत में हमें इस का सवाब मिलेगा, बिला वज्हे शरई तक्लीफ़ पहुंचाएंगे तो अ़ज़ाब की ह़क़दारी है और तीसरी सूरत में न सवाब न अ़ज़ाब । कोशिश होनी चाहिये कि हम बाइ़से ज़ह़मत नहीं सबबे राह़त बनें । इस ह़वाले से हमारे रवय्ये मुख़्तलिफ़ होते हैं, बा'ज़ इस्लामी भाइयों की इस त़रफ़ ख़ूब तवज्जोह होती है कि हमारी ज़ात से किसी को तक्लीफ़ न पहुंचे, अगर उन से किसी मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंच भी जाए तो उन्हें एह़सासे नदामत होता है और वोह तौबा कर के उस से हाथों हाथ मुआ़फ़ी मांग लेते हैं, जब कि कुछ इस्लामी भाई इस ह़वाले से ग़फ़्लत का शिकार होते हैं और उन्हें इस की कोई परवाह नहीं होती कि उन्हों ने किसी को

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ पहुंचा दी है और कई इस्लामी भाई इस बात की ख़्वाहिश तो रखते हैं कि किसी को उन से तक्लीफ़ न पहुंचे लेकिन मा'लूमात की कमी और ग़ैर मोह़तात़ अन्दाज़ की वज्ह से अक्सर उन्हें पता ही नहीं चलता कि वोह अपनी ह़रकातो सकनात से दूसरे को तक्लीफ़ में मुब्तला कर चुके हैं, इन्सान के हाथों सिर्फ़ ज़िन्दा इन्सान ही तक्लीफ़ नहीं उठाता बल्कि मुर्दों, फ़िरिश्तों, जिन्नों और जानवरों को भी तक्लीफ़ पहुंच जाती है। इसी त़रह़ के तक़रीबन 78 मुआ़मलात की निशान देही इस किताब में करने की कोशिश की गई है कि हम किस किस त़रीक़े से दूसरों के लिये बाइ़से तक्लीफ़ बन सकते हैं ? नीज़ मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाने की क्या क्या वईदें हैं ? और तक्लीफ़ से बचाने की कैसी कैसी नवीदें हैं ? जिस को किसी से तक्लीफ़ पहुंच जाए और वोह इस पर सब्र करे तो उस के लिये क्या क्या बिशारतें हैं ? इस किताब का नाम शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **"तक्लीफ़ न दीजिये"** रखा है जब कि दा'वते इस्लामी के "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" के इस्लामी भाई ने इस की शरई तफ़्तीश फ़रमाई है, इस किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों को पढ़ने की तरग़ीब दे कर अपना सवाब खरा कीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इस मदनी मक़्सद के हुसूल के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की सआ़दत भी अ़त़ा करे। आमीन

शो'बए इस्लाही कुतुब अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

अच्छा कौन और बुरा कौन ?

एक मरतबा रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें अच्छे बुरों की ख़बर न दूं ? सब ख़ामोश रहे, तीन बार येही इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : जी हां या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें हमारे बुरे भलों की ख़बर दीजिये ! फ़रमाया : तुम्हारा भला वोह शख़्स है जिस से ख़ैर की उम्मीद की जाए और उस के शर से अम्न हो, और तुम्हारा बुरा वोह शख़्स है जिस से ख़ैर की उम्मीद न की जाए और उस के शर से अम्न न हो।

(ترمذی ، کتاب الفتن ، باب (ت : ٧٦) ، ٤/ ١١٦ ، حدیث : ٢٢٧٠)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से कि "जिस से ख़ैर की उम्मीद की जाए और उस के शर से अम्न हो" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी क़ुदरती त़ौर पर लोगों के दिलों में इस की त़रफ़ से इत़्मीनान हो कि येह शख़्स किसी को तक्लीफ़ नहीं देता, हो सकता है तो ख़ैर ही करता है। "जिस से ख़ैर की उम्मीद न की जाए और उस के शर से अम्न न हो" के तह़्त मुफ़्ती साह़िब फ़रमाते हैं : या'नी क़ुदरती त़ौर पर लोग इस से डरते हों कि येह शख़्स ख़त़रनाक है इस से बचो, इस से ख़ैर न पहुंचेगी, शर (या'नी बुराई) ही पहुंचेगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 579)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي नक़्ल फ़रमाते हैं : इस ह़दीस में इशारा है कि साथियों के साथ अ़द्ल करना वाजिब है और अ़द्ल तीन चीज़ों के ज़रीए़ हो सकता है :

www.dawateislami.net

(1) ज़ियादती न करना (2) ज़लील करने से बचना (3) तक्लीफ़ न देना। क्यूंकि ज़ियादती न करने से महब्बत बढ़ती है, ज़लील करने से बचना सब से बड़ी मेहरबानी है और तक्लीफ़ न देना सब से बड़ा इन्साफ़ है। अगर येह तीन चीज़ें न छोड़ी जाएं तो आपस में दुश्मनियां जनम लेने लगती हैं और फ़साद बरपा हो जाता है।

(فیض القدیر،حرف الهمزة،۳/ ۱۳۲،تحت الحدیث:۲۸۵۷)

मुसलमान का ख़ून, माल और इज़्ज़त मुसलमान पर ह़राम है

हमारा प्यारा मज़हबे इस्लाम हर मुसलमान की जान, माल और इज़्ज़त के तह़फ़्फ़ुज़ की ज़मानत देता है चुनान्चे, हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हुरमत निशान है : كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُهٗ وَمَالُهٗ وَعِرْضُهٗ या'नी हर मुसलमान का ख़ून, माल और इज़्ज़त दूसरे मुसलमान पर ह़राम है।

(مسلم ، کتاب البر والصلة، باب تحریم ظلم المسلم ...الخ،ص ۱۳۸٦،حدیث:۲۵٦٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : कोई मुसलमान किसी मुसलमान का माल बिग़ैर उस की इजाज़त न ले, किसी की आबरू रेज़ी न करे, किसी मुसलमान को नाह़क़ और ज़ुल्मन क़त्ल न करे, कि येह सब सख़्त जुर्म हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 553)

मुफ़्ती साह़िब एक और मक़ाम पर लिखते हैं : मुसलमान को न तो दिल में ह़क़ीर जानो ! न उसे ह़क़ारत के अल्फ़ाज़ से पुकारो ! या

www.dawateislami.net

बुरे लक़ब से याद करो ! न उस का मज़ाक़ बनाओ ! आज हम में येह ऐब बहुत है पेशों, नसबों या ग़ुर्बतो इफ़्लास की वज्ह से मुसलमान भाई को ह़क़ीर जानते हैं कि वोह पंजाबी है, वोह बंगाली, वोह सिन्धी, वोह सरह़दी इस्लाम ने येह सारे फ़र्क़ मिटा दिये । शहद की मक्खी मुख़्तलिफ़ फूलों के रस चूस लेती है तो उन का नाम शहद हो जाता है । मुख़्तलिफ़ लकड़ियों को आग जला दे तो उस का नाम राख हो जाता है । यूं ही जब हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का दामन पकड़ लिया तो सब मुसलमान एक हो गए, ह़बशी हो या रूमी !

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 552)

दामने मुस्त़फ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया
जिस के हुज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

जिस ने मुसलमान को तक्लीफ़ दी उस ने मुझे तक्लीफ़ दी

बिला इजाज़ते शरई मुसलमान को तक्लीफ़ देना कितनी बड़ी जुरअत है इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाएं कि **आ'ला ह़ज़रत**, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़ह़ा 342 में त़बरानी शरीफ़ के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِىْ وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰه (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शरई) किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी ।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط، ۲/ ۳۸۷، حدیث ۳۶۰۷)

www.dawateislami.net

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सूरतुल अह़ज़ाब आयत 57 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक जो ईज़ा देते हैं* **अल्लाह** *और उस के रसूल को उन पर* **अल्लाह** *की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और* **अल्लाह** *ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है ।*

ज़रा सोचिये कि कौन सा मुसलमान इस बात को गवारा करेगा कि वोह **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ईज़ा दे और जहन्नम के अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ क़रार पाए ! हम क़ह्रे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार عَزَّوَجَلَّ से उसी की पनाह मांगते हैं ।

ख़ुदाया ! किसी का न दिल मैं दुखाऊं
अमां तेरे अबदी अ़ज़ाबों से पाऊं

किस क़दर बद तरीन जुर्म है !

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि कुत्ते और सुवर को भी नाह़क़ ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) देना ह़लाल नहीं तो मोमिनीन व मोमिनात को ईज़ा देना किस क़दर बद तरीन जुर्म है ।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, ज़ेरे आयत : 58)

www.dawateislami.net

हिकायत : 2 क़ियामत का ख़ौफ़ दिलाने पर बेहोश हो गए

सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम عليه رَحمَةُ الله السلام से रिवायत है : एक रोज़ हम इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के साथ कहीं से गुज़र रहे थे कि बे ख़याली में इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का मुबारक पाउं एक लड़के के पैर पर पड़ गया, लड़के की चीख़ निकल गई और उस के मुंह से बे साख़्ता निकला : يَا شَيْخُ اَلَا تَخَافُ الْقِصَاصَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ! या'नी **जनाब ! क्या आप क़ियामत के रोज़ लिये जाने वाले इन्तिक़ामे ख़ुदावन्दी से नहीं डरते ?"** येह सुनते ही इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم पर लरज़ा त़ारी हो गया और ग़श खा कर ज़मीन पर तशरीफ़ लाए, जब कुछ देर के बा'द होश में आए तो मैं ने अ़र्ज़ की, कि एक लड़के की बात से आप इस क़दर क्यूं घबरा गए ? फ़रमाया : "क्या मा'लूम उस की आवाज़ ग़ैबी हिदायत हो।" (اَلْمَنَاقِب لِلْمُوَفَّق، ٢/ ١٤٨)

अ़त़ा हो ख़ौफ़े ख़ुदा ख़ुदारा, दो उल्फ़ते मुस्त़फ़ा ख़ुदारा
करूं अ़मल सुन्नतों पे हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 573)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरों को ईज़ा देने वालो ! ख़बरदार !!!

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"अश्कों की बरसात"** में इस **हिकायत** को नक़्ल करने के बा'द सफ़्ह़ा 18 पर लिखते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह तसव्वुर भी नहीं

www.dawateislami.net

किया जा सकता कि इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم जान बूझ कर किसी पर ज़ुल्म करें और उस का पैर कुचल दें, बे ख़याली में सरज़द होने वाले फ़े'ल पर भी आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के सबब बेहोश हो गए और एक हम लोग हैं कि जान बूझ कर न जाने रोज़ाना कितनों को त़रह़ त़रह़ से ईज़ाएं देते होंगे, मगर अफ़्सोस ! हमें इस बात का एह़सास तक नहीं होता कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ियामत के रोज़ हम से इन्तिक़ाम लिया तो हमारा क्या बनेगा ! (अश्कों की बरसात, स. 18)

बद अख़्लाक़ी की दो अ़लामतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : आदमी के बद ख़ुल्क़ होने की अ़लामत येह है कि वोह अपने अह्ले ख़ाना के पास इस ह़ालत में जाए कि वोह ख़ुशी से मुस्कुरा रहे हों और इसे देख कर ख़ौफ़ से अलग अलग हो जाएं और एक अ़लामत येह है कि बिल्ली उस से (डर कर) भाग जाए या कुत्ता ख़ौफ़ की वज्ह से दीवार फलांग जाए।

(تنبیہ المغترین،ص۱۹۹)

ख़ुश ख़ुल्क़ी के दरजात

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ख़ुश ख़ुल्क़ी का अदना दरजा येह है कि किसी को जानी, माली, इ़ज़्ज़त की ईज़ा न दे। आ'ला दरजा येह है कि बुराई का बदला भलाई से करे, येह बहुत आ'ला चीज़ है, जिसे ख़ुदा तआ़ला नसीब करे। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 461)

www.dawateislami.net

بدی را بدی سہل باشد جزا

اگر مردی اَحسِن اِلٰی مَن اَسا

(या'नी बदी का बदला बदी से देना तो आसान है अगर तू मर्द है तो बुराई करने वाले के साथ भी भलाई कर)

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 342)

सज़ा का मुस्तहिक़ है

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی बहारे शरीअ़त जिल्द 2 सफ़ह़ा 407 पर लिखते हैं : जो शख़्स मुसलमान को किसी फ़े'ल या क़ौल से ईज़ा पहुंचाए अगर्चे आंख या हाथ के इशारे से वोह मुस्तह़िक़े ता'ज़ीर है।[1]

(الدر المختار، کتاب الحدود، باب التعزیر، ٦/١٠٦)

बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब

शर्हुस्सुदूर में है, बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब हैं : (1) नमाज़ में सुस्ती (2) शराब नोशी (3) वालिदैन की ना फ़रमानी (4) मुसलमानों को तक्लीफ़ देना।

(شرحُ الصُّدور ص ٢٧)

---

1 : **ता'ज़ीर :** किसी गुनाह पर ब ग़रज़े तादीब (अदब सिखाने के लिये) जो सज़ा दी जाती है उस को ता'ज़ीर कहते हैं, शारेअ़ ने इस के लिये कोई मिक़्दार मुअ़य्यन नहीं की है बल्कि इस को क़ाज़ी की राए पर छोड़ा है जैसा मौक़अ़ हो उस के मुताबिक़ अ़मल करे। ता'ज़ीर का इख़्तियार सिर्फ़ बादशाहे इस्लाम ही को नहीं बल्कि शोहर बीबी को, आक़ा ग़ुलाम को, मां बाप अपनी औलाद को, उस्ताज़ शागिर्द को ता'ज़ीर कर सकता है। (बहारे शरीअ़त, 2 / 403 बह़वाला الدر المختار، کتاب الحدود، باب التعزیر، ٦/١٠٦) इस के तफ़्सीली मसाइल जानने के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 2 के ह़िस्से 9 सफ़ह़ा 403 का मुतालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

मुझे दे दे ईमान पर इस्तिक़ामत

पए सय्यिदे मोहूतशम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 573)

हिकायत : 3

छड़ी बाग़ में वापस रख आए

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ दह्हान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मरतबा अपने घरवालों में से किसी के साथ गुफ़्तगू करते हुए एक बाग़ से गुज़रे तो कुत्तों को भगाने के लिये वहां से एक शाख़ उठा ली और घर लौटते वक़्त मस्जिद में रख दी। मस्जिद में मौजूद लोगों से कहा : इस का ख़याल रखना ! येह मैं ने एक क़ौम के बाग़ के पास से गुज़रते वक़्त उठा ली थी। लोगों ने कहा : ऐ अबू शा'शा ! इस शाख़ की क्या अहम्मिय्यत है ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर बाग़ से गुज़रने वाला हर शख़्स एक एक शाख़ लेता रहे तो बाग़ में कुछ भी नहीं बचेगा। चुनान्चे, सुब्ह़ हुई तो आप वोह शाख़ उसी बाग़ में वापस रख आए !

(حلية الاولياء، جابر بن زيد، ٣/١٠٣، رقم: ٣٣٣٥)

दो अच्छी और दो बुरी ख़स्लतें

मन्क़ूल है : दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि इन से अफ़्ज़ल कोई ख़स्लत नहीं : (1) अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाना (2) मुसलमानों को नफ़्अ़ पहुंचाना, जब कि दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि इन से ज़ियादा बुरी कोई

www.dawateislami.net

ख़स्लत नहीं (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक ठहराना (2) मुसलमानों को तक्लीफ़ देना। (اَلْمُنَبِّهات، ص۳)

करूं या ख़ुदा मोमिनों की मैं ख़िदमत
न पहुंचे किसी को भी मुझ से अज़िय्यत

हिकायत : 4

इबादत का ता'ना देने का अन्जाम

बहरुल उ़लूम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان अपने दादा मर्ह़ूम अ़ब्दुर्रह़ीम बिन दोस्त मुह़म्मद का तज़किरा करते हुए फ़रमाते हैं : दादाजान एक बाज़ार में मज़दूरी करते थे, एक दफ़्आ उजरत लेने के लिये उस शख़्स के पास गए जिस के यहां मज़दूरी करते थे तो उस के लड़के ने कहा : अभी गुज़श्ता हफ़्ते तो ख़र्ची ले कर गए थे, आज फिर चले आए, इतनी इबादतो रियाज़त तो करते हैं, उसी से ख़ूब ढेर सारा रूपिया क्यूं नहीं मांग लेते ! दादाजान ने उन को कोई जवाब न दिया, फ़ौरन घर वापस लौट आए और देर तक येह फ़रमाते रहे : कैसे लोग हैं ! येह मुसलमान कहे जाएंगे ? **अल्लाह** का नाम लेने और बन्दगी करने पर ता'ना देते हैं। भला उन लोगों को क्या एह़सास होता, अलबत्ता ह़ज़रत इस जुम्ले पर निहायत दुखी रहे और आप ने उस शख़्स के लिये काम करना छोड़ दिया। बहरुल उ़लूम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मज़ीद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला किसी की सरकशी पसन्द नहीं फ़रमाता, मेरे ज़माने तक वोह लोग ज़िन्दा रहे, सारी अकड़ फूं ख़त्म हो गई थी। उन में एक साह़िब तो इस त़रह़ मरे कि मरते दम उन्हें कोई एक चमचा पानी देने वाला न था ह़ालांकि तीन चार जवान बच्चे मौजूद थे। (بحرالعلوم نمبر ملخصاً، ص۲۲۴)

www.dawateislami.net

लोगों को तक्लीफ़ देने वाला मलऊ़न है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने मुसलमान को तक्लीफ़ या धोका दिया वोह मलऊ़न है।

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الخیانة والغش، ۳/۳۷۸، حدیث: ۱۹۴۸)

हिकायत : 5

लोगों को तक्लीफ़ देने वाले का अ़ज़ाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चल रहे थे, हमारा गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रुक गए लिहाज़ा हम भी आप के साथ ठहर गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मुतग़य्यर होने लगा यहां तक कि आप की क़मीस मुबारक की आस्तीन कप कपाने लगी। हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या माजरा है ? इरशाद फ़रमाया : क्या तुम भी वोह आवाज़ सुन रहे हो जो मैं सुन रहा हूं ? हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप क्या समाअ़त फ़रमा रहे हैं ? इरशाद फ़रमाया : इन दोनों अफ़राद पर इन की क़ब्रों में इन्तिहाई सख़्त अ़ज़ाब हो रहा है वोह भी ऐसे गुनाह की वज्ह से जो ह़क़ीर है (यानी इन दोनों के ख़याल में ह़क़ीर था या फिर येह कि इस से बचना इन के लिये आसान था)। हम ने अ़र्ज़ की :

www.dawateislami.net

वोह कौन सा गुनाह है ? इरशाद फ़रमाया : इन में से एक पेशाब से न बचता था और दूसरा अपनी ज़बान से लोगों को अज़िय्यत देता था और चुग़ली करता था। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर की दो टहनियां मंगवाईं और उन में से हर एक क़ब्र पर एक एक टहनी रख दी। हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह चीज़ इन को कोई नफ़्अ़ देगी ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां ! जब तक येह दोनों टहनियां तर रहेंगी इन से अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होती रहेगी।

(صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق، باب الأذكار، ٢/٩٦، حديث: ٨٢١)

आग में फेंक दिया जाएगा

मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से जिस के पास दराहिम व सामान न हों वोह मुफ़्लिस है। फ़रमाया : मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आया और यूं आया कि इसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का माल खाया, उस का ख़ून बहाया, उसे मारा तो इस की नेकियों में से कुछ इस मज़लूम को दे दी जाएं और कुछ उस मज़लूम को फिर अगर इस के ज़िम्मे जो हुक़ूक़ थे उन की अदाएगी से पहले इस की नेकियां ख़त्म हो जाएं तो उन मज़लूमों की ख़ताएं ले कर इस ज़ालिम पर डाल दी जाएं फिर इसे आग में फेंक दिया जाए।

(مُسلِم، كتاب البر والصلة، باب تحريم الظلم، ص١٣٩٤، حديث: ٢٥٨١)

www.dawateislami.net

ख़ारिश मुसल्लत कर दी जाएगी

मुसलमानों को तक्लीफ़ देने वाले जहन्नम जैसे मक़ामे अ़ज़ाब में मज़ीद अ़ज़ाबात का सामना भी करेंगे चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : जहन्नमियों पर एक क़िस्म की ख़ारिश मुसल्लत कर दी जाएगी, जिस की वज्ह से वोह अपने बदनों को खुजाएंगे यहां तक कि उन में से किसी की हड्डी ज़ाहिर हो जाएगी तो निदा की जाएगी : ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे इस की वज्ह से तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां ! तो निदा देने वाला कहेगा : येह उस का बदला है जो तुम मुसलमानों को तक्लीफ़ देते थे ।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الالفة، الباب الثالث،۲/۲٤۲)

खाल तक उतार लेंगे

मुसलमानों की इ़ज़्ज़त की धज्जियां उड़ा कर ख़ुश होने वाले संभल जाएं कि इस का अन्जाम बहुत बुरा होगा चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शजरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ समुन्दर के कनारे होते हैं इसी त़रह़ जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में बुख़्ती ऊंटों जैसे सांप और ख़च्चरों जैसे बिच्छू रहते हैं । अह्ले जहन्नम जब अ़ज़ाब में कमी के लिये फ़रियाद करेंगे तो हुक्म होगा कनारों से बाहर निकलो वोह जूं ही निकलेंगे तो वोह सांप उन्हें होंटों और चेहरों से पकड़ लेंगे और उन की खाल तक उतार लेंगे वोह लोग वहां से बचने के लिये आग की त़रफ़ भागेंगे

www.dawateislami.net

फिर उन पर खुजली मुसल्लत् कर दी जाएगी वोह इस क़दर खुजाएंगे कि उन का गोश्त पोस्त सब झड़ जाएगा और सिर्फ़ हड्डियां रह जाएंगी, पुकार पड़ेगी : ऐ फुलां ! क्या तुझे तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां । तो कहा जाएगा : येह उस ईज़ा का बदला है जो तू मोमिनों को दिया करता था ।

(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْھِیب،کتاب صفة الجنة والنار،فصل فی ذکر۔۔الخ،٤ / ٢٨٠، حدیث:٥٦٤٩ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या अब भी बाज़ नहीं आएंगे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान को बिला वज्हे शरई तक्लीफ़ देने वाला अपनी ज़िन्दगी में, मौत के वक़्त, हिसाबे ह़श्र में और सब से बढ़ कर अ़ज़ाबाते जहन्नम की वज्ह से ख़ुद तक्लीफ़ में आ जाएगा, क्या येह सब कुछ हमारी आंखें खोल देने के लिये काफ़ी नहीं है ! क्या अब भी हम मुसलमानों को तक्लीफ़ देने से बाज़ नहीं आएंगे ! आइये देखते हैं कि हम किस किस अन्दाज़ से दूसरों के लिये बाइसे तक्लीफ़ बन सकते हैं ? चुनान्चे,

﴾1﴿ मुसलमान को घूर कर देखना

किसी को डराने या ख़ौफ़ज़दा करने के लिये सिर्फ़ हाथ पाउं या छड़ी या अस्लिह़ा ही इस्ति'माल नहीं होता बल्कि येह काम आंखों से भी लिया जाता है, चुनान्चे, हमारे मुआ़शरे में तेज़ निगाहों से घूर कर डराना बहुत मा'मूली समझा जाता है (बिलख़ुसूस बच्चों को), लेकिन येह नादानी है। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : जो अपने भाई की त़रफ़ डराने वाली नज़रों से घूरे **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ियामत के दिन डराएगा।

(شعب الایمان،باب فی طاعة اولی الامر،فصل فی ذکر...الخ،٦/٥٠،حدیث: ٧٤٦٨)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : भाई से मुराद मुसलमान भाई है या'नी जो शख़्स किसी मुसलमान को बिला क़ुसूर तेज़ नज़र से घूर कर डराए वरना क़ुसूर मन्द को घूरना-डराना ज़रूरी है। (मज़ीद लिखते हैं :) इस से इशारतन मा'लूम हुवा कि मुसलमान भाई को रह़मत की नज़र से देखना सवाब है कि **अल्लाह** तआ़ला उसे इ़नायत की नज़र से देखेगा। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 369)

आंख से तक्लीफ़ पहुंचाना जाइज़ नहीं

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसलमान की त़रफ़ आंख से इस त़रह़ इशारा करे जिस से तक्लीफ़ पहुंचे। (احیاء علوم الدین،کتاب آداب الالفة...الخ،الباب الثالث،٢/٢٤٣) एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : किसी मुसलमान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसलमान को ख़ौफ़ज़दा करे।

(ابوداؤد،کتاب الادب،باب من یاخذ...الخ، ٤/٣٩١، حدیث:٥٠٠٤)

अल मदद या शहे अबरार मदीने वाले

क़ल्ब से ख़ौफ़े ख़ुदा दूर हुवा जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 432)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ एहसान जता कर ईज़ा देना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना हालात ऐसे हैं कि अव्वल तो कोई किसी ज़रूरत मन्द पर एहसान करने, उस की ख़ैरख़्वाही और मदद करने के लिये तय्यार नहीं फिर अगर किसी पर एहसान कर भी दे तो ज़र्फ़ इतना कमज़ोर होता है कि उस एहसान के बदले में येह ख़्वाहिश होती है कि सामने वाला इस के एहसान के बोझ तले दबा रहे, उस की हर सहीह ग़लत बात पर हां में हां मिलाए, उस की किसी ग़लती की निशानदेही न करे, अगर कभी वोह क़ाबू से बाहर होने लगे या उस की शान में कुछ गुस्ताख़ी कर बैठे तो उस पर एहसान जताना अपना हक़ समझा जाता है (मगर जिसे **अल्लाह** बचाए), एहसान जताने के लिये मुतअद्दिद जुम्ले बोले जाते हैं जो अक्सर सामने वाले पर ता'ने के तीर बन कर बरसते हैं और उस के कलेजे को छलनी कर जाते हैं, मसलन ❁ तुम फटे पुराने कपड़ों में मेरे पास आए थे मैं ने तुम्हें तरस खा कर नोकरी दी थी ❁ तुम्हारे पास दो वक़्त खाने को नहीं था मुझे तरस आया तो तुम्हारे घर में महीने भर का राशन डलवाया था ❁ याद है जब तुम्हारा कारोबार तबाह हो गया था और तुम फुटपाथ पर आ गए थे मैं ने तुम्हें क़र्ज़ में मोटी रक़म फ़राहम की थी तो तुम ने दोबारा कारोबार शुरूअ़ किया था ❁ मालिके मकान ने कई महीने का किराया न देने की वज्ह से तुम्हें मकान ख़ाली करने का नोटिस दे दिया था मैं तुम्हारा किराया न देता तो तुम दर बदर की ठोकरें खा रहे होते ❁ तुम्हारा बच्चा बीमार था दवाई के लिये पैसे तक न थे मैं ने उस का इलाज कराया था ❁ तुम्हारी वालिदा को

www.dawateislami.net

कितना अरमान था सफ़रे मदीना का, मैं ने अपने ख़र्च पर उन्हें उ़मरे के लिये भेजा था ۞ जब पोलीस ने तुम पर झूटा केस डाल दिया था मैं ने तुम्हारी जान छुड़ाई थी वरना आज जेल में सड़ रहे होते ۞ तुम ने जितनी तरक़्क़ी की है उस में मेरा हाथ है।

नेकी कर दरिया में डाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एह़सान जताने वाला इस त़रह़ की बातें कर के ख़ुश तो बहुत होता है लेकिन इस का अन्जाम जान ले और इ़ब्रत पकड़े तो कभी किसी पर एह़सान न जताए बल्कि **"नेकी कर दरिया में डाल"** के मक़ूले पर अ़मल पैरा हो जाए। पारह 3 सूरए बक़रह की आयत 264 में इरशादे रब्बानी है :

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰىۙ (پ۳، البقرۃ:۲٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی लिखते हैं : एह़सान रखना तो येह है कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और इस को मुकद्दर (या'नी रन्जीदा व मलूल) करें। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 3, अल बक़रह, ज़ेरे आयत : 262) तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है : एह़सान जताने का मत़लब येह है कि किसी पर एह़सान करने के बा'द उसे यूं कहा जाए कि मैं ने तुम्हें फ़ुलां फ़ुलां चीज़ दी है और सारे एह़सानात गिनवा कर उन एह़सानात का मज़ा किरकिरा कर दे।

(خازن،پ:۳،البقرۃ،تحت الآیۃ: ۲٦۲، ۱/۲۰٦)

www.dawateislami.net

जन्नत में नहीं जाएगा

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : एह़सान जताने वाला, वालिदैन का ना फ़रमान और शराब का आ़दी जन्नत में नहीं जाएगा ।

(نسائی، کتاب الاشربۃ،الروایۃ فی الخ،ص۸۹۵،حدیث: ۵٦٨٣)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी येह लोग अव्वलन जन्नत में जाने के मुस्तह़िक़ न होंगे । ख़याल रहे कि गुनाहे सग़ीरा हमेशा करने से कबीरा बन जाता है । शराब ख़ोरी ख़ुद ही सख़्त जुर्म है फिर इस पर हमेशगी डबल जुर्म । (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 530)

एह़सान जताना कब बुरा है ?

एक और मक़ाम पर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : ख़याल रहे कि बन्दे का बन्दे को एह़सान जताना अगर ता'ना ज़नी के लिये हो तो बुरा है अगर मुत़ीअ़ (या'नी फ़रमां बरदार) करने के लिये हो तो अच्छा, **अल्लाह** तआ़ला या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बहुत जगह अपनी ने'मतों के एह़सान जताए हैं ताकि बन्दे उस की इत़ाअ़त करे उस का एह़सान मानें येह उसी का करम है, मन्नान के एक मा'ना येह भी हैं या'नी एह़सान जताने वाला ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 333)

www.dawateislami.net

एहसान जताने की बुन्याद

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی लिखते हैं : एहसान जताने की बुन्याद येह है कि सदक़ा देने वाला येह समझे कि मैं ने इस पर इन्आ़म और एहसान किया जब कि ह़क़ येह है कि फ़क़ीर तो मोह़सिन है कि उस ने उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ क़बूल किया जो उस के लिये त़हारत और जहन्नम से नजात का ज़रीआ़ है कि अगर वोह क़बूल न करता तो येह उस के सबब गिरवी रहता। (احیاء علوم الدین ،کتاب اسرار الزکاۃ،بیان دقائق الآداب...الخ،۱/۲۹۱)

नुक़्सान उठाने वाले तीन अफ़राद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन शख़्स वोह हैं जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन न तो कलाम करेगा न नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न उन्हें गुनाहों से पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : वोह तो टोटे और ख़सारे ही में पड़ गए, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन हैं ? फ़रमाया : तहबन्द लटकाने वाला, एहसान जताने वाला और झूटी क़सम से माल बेचने वाला।

(مسلم،کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم...الخ، ص٦٧، حدیث:١٧١)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : कलाम से मुराद मह़ब्बत का कलाम है, देखने से मुराद करम का देखना है और पाक फ़रमाने से मुराद गुनाह बख़्शना है या'नी दूसरे मुसलमानों पर येह तीनों करम होंगे

www.dawateislami.net

मगर इन तीन क़िस्म के लोग इन तीनों इनायतों से महरूम रहेंगे लिहाज़ा इन से बचते रहो। (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) या'नी जो फ़ेशन के लिये टख़्नों से नीचा पाजामा-तहबन्द इस्ति'माल करें जैसे आज कल जाहिल चौधरियों का त़रीक़ा है और जो किसी को कुछ सदक़ा व ख़ैरात दे कर उन को त़ा'ने दें, एह़सान जताएं, लोगों में उन्हें बदनाम करें कि फ़ुलां आदमी हमारा दस्ते निगर रह चुका है और जो झूटी क़सम खा कर धोका दे कर माल फ़रोख़्त करें। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 244)

हि़कायत : 6 भलाई नहीं रहती

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने एक शख़्स को सुना कि वोह दूसरे से कह रहा था : "मैं ने तेरे साथ भलाई की और येह किया, वोह किया।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस शख़्स से फ़रमाया : "ख़ामोश हो जाओ, जब नेकी को शुमार किया जाए तो उस में कोई भलाई नहीं रहती।"

(الجامع لاحكام القرآن،پ٣،البقرة،تحت الآية:٢٦٤،٢/٢٣٦،جزء:٣)

एह़सान के बदले में दुआ़ भी त़लब न करतें

जो किसी पर एह़सान करे और इस बात की तमन्ना करे कि सामने वाला एह़सान के बोझ तले दब कर मेरे सामने जी जी करता रहे, मेरी आव-भगत करे, मेरा बन्दए बेदाम बन कर रहे तो ऐसी तवक़्क़ोआ़त रखने वाला ग़लत़ी पर है, हमारे बुज़ुर्गाने दीन जब किसी पर एह़सान करते तो जवाबन दुआ़ के त़लबगार भी नहीं होते थे कि कहीं येह दुआ़ उन की नेकी का बदला न हो जाए और अगर कोई दुआ़ दे भी देता तो बदले में उस के

www.dawateislami.net

लिये दुआ़ कर दिया करते, चुनान्चे, इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی लिखते हैं : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब फ़क़ीर की त़रफ़ कोई हदिय्या भेजतीं तो ले जाने वाले से कहतीं कि इस के दुआ़इया कलिमात को याद रखे, फिर इस जैसे कलिमात के साथ जवाब देतीं और फ़रमातीं : दुआ़ के बदले इस लिये दुआ़ दी है ताकि हमारा सदक़ा महफ़ूज़ रहे। अल ग़रज़ ! सालिह़ीन तो दुआ़ की तवक़्क़ोअ़ भी नहीं रखते थे, क्यूंकि येह बदले के मुशाबेह है और वोह दुआ़ के बदले दुआ़ दिया करते थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी ऐसा ही किया करते थे। (احیاء علوم الدین،کتاب اسرار الزکاۃ،بیان دقائق الآداب...الخ،۱/۲۹۲)

हि़कायत : 7 चीज़ वापस कर के एह़सान किया है

एक बुज़ुर्ग ने किसी की दी हुई चीज़ वापस कर दी, लोगों ने इस बात का बुरा माना तो उन्हों ने वज़ाह़त की : मैं ने तो उन पर एह़सान किया है कि अगर मैं उन का अ़त़िय्या क़बूल कर लेता तो वोह मुझ पर एह़सान जताते, उन का माल भी जाता और सवाब भी। (کیمیائے سعادت،ص۸۴۳)

हि़कायत : 8 कोई चीज़ हाथ में न देते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सह़ल सु'लूकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی सख़ी लोगों में थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कोई चीज़ किसी के हाथ में नहीं देते थे बल्कि उसे ज़मीन पर रख देते थे और लेने वाला उसे ज़मीन से ले लेता था।

www.dawateislami.net

इस की वज्ह येह इरशाद फ़रमाते थे कि दुन्या की इतनी हैसिय्यत नहीं है कि इस की वज्ह से एक हाथ दूसरे हाथ के ऊपर नज़र आए।

(المستطرف، ۱/ ۲۷۵)

हिकायत : 9 थेली तो मिलती मगर देने वाले का पता न चलता

हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन लोगों के पास जो सजदे में होते दिरहमो दीनार से भरी थेलियां ले कर जाते और उन की चप्पलों के पास ऐसे अन्दाज़ में रख कर आ जाते कि उन्हें थेली का तो पता चल जाता मगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पता नहीं लग पाता। किसी ने उन से अर्ज़ की : आप ख़ुद जाने के बजाए किसी के हाथ थेलियां क्यूं नहीं भिजवाते ? फ़रमाया : मैं नहीं चाहता कि जब कभी वोह मेरे क़ासिद को देखा करें या मुझ से मिला करें तो एह्सान तले होने की वज्ह से शर्मिन्दगी मह्सूस करें। (مختصر منهاج القاصدين،ص۳۹)

बना दे मुझ को इलाही ख़ुलूस का पैकर

क़रीब आए न मेरे कभी रिया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ तीसरे फ़र्द की मौजूदगी में सरगोशी करना

जब तीसरा फ़र्द मौजूद हो तो एक दूसरे के कान में सरगोशी नहीं करनी चाहिये कि इस से उसे तक्लीफ़ पहुंचने का अन्देशा है, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है :

www.dawateislami.net

لَا يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ وَاحِدٍ فَإِنَّ ذٰلِكَ يُؤْذِى الْمُؤْمِنَ وَاللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ يَكْرَهُ أَذَى الْمُؤْمِنِ

दो अफ़राद तीसरे को छोड़ कर सरगोशी न करें क्यूंकि उस से एक मोमिन को तक्लीफ़ होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मोमिन की तक्लीफ़ को ना पसन्द फ़रमाता है। (ترمذی،کتاب الادب،باب ماجاء لا یتناجی ۔۔الخ، ٣٧٧/٤، حدیث : ٢٨٣٤)

एक और ह़दीसे पाक में इरशाद फ़रमाया गया : जब तुम तीन हो तो दो शख़्स तीसरे को छोड़ कर चुपके चुपके बातें न करें जब तक मजलिस में बहुत से लोग न आ जाएं, येह इस वज्ह से कि उस तीसरे को रन्ज पहुंचेगा। (بخاری،کتاب الاستئذان،باب اذا کانوا اکثر۔۔۔الخ،١٨٥/٤،حدیث:٦٢٩٠)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी अगर तीन साथियों में से दो ख़ुफ़्या सरगोशी करेंगे तो तीसरे को अन्देशा होगा कि कोई बात मेरे ख़िलाफ़ तै की जाएगी, मेरे ख़िलाफ़ मश्वरा कर रहे हैं। जब तीन से ज़ियादा आदमी हों तो बाक़ी किसी को येह ख़त़रा न होगा कि मेरे ख़िलाफ़ साज़िश हो रही है। ख़याल रहे कि येह मुमानअ़त वहां है जहां तीसरे को अपने मुतअ़ल्लिक़ येह शुबा हो सकता हो अगर येह शुबा न हो सके तो बिला कराहत येह अ़मल जाइज़ है लिहाज़ा येह ह़दीस उस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने घर में तशरीफ़ फ़रमा थे कि फ़ाति़मा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ह़ाज़िर हुई ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने उन्हें मरह़बा कहा और उन से कुछ सरगोशी फ़रमाई।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 557)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तीसरे फ़र्द को भी चाहिये कि दो अफ़राद की सरगोशी की सूरत में हुस्ने ज़न का जाम पी कर उ़म्दा इबादत का सवाब कमाए कि येह दोनों अपने किसी मुआ़मले में बात चीत कर रहे होंगे ।

मुझे ग़ीबतो चुग़ली व बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ मेज़बान को तक्लीफ़ देना

एक दूसरे के घर आना जाना हमारी समाजी ज़िन्दगी का अहम हिस्सा है, इस में मुसलमान भाई से मुलाक़ात की अच्छी निय्यत कर ली जाए तो सवाब की ह़क़दारी भी है, लेकिन किसी के घर जाने से पहले पेशगी इत्तिलाअ़ दे दी जाए तो बहुत बेहतर है क्यूंकि अचानक मेहमान आ जाने की सूरत में बा'ज़ औक़ात घरवाले आज़माइश में आ जाते हैं मसलन वोह ख़ुद किसी जगह जाने के लिये तय्यार खड़े होते हैं या कोई और मेहमान उन के घर पहले से मौजूद होता है या वोह वक़्त ऐसा होता है कि सब घरवाले सो चुके होते हैं या घर की सफ़ाई सुथराई की ह़ाजत होती है या मेहमान की ख़ातिर तवाज़ोअ़ के लिये घर में मुनासिब अश्या नहीं होतीं ।

किसी के घर जा कर हम कई क़िस्म के अफ़्आ़ल करते हैं जिन में से कुछ करने के होते हैं और कुछ न करने के। **"करने के कामों"** में उसे सलाम करना, बीमार हो तो इ़यादत करना, ख़ुश हो तो उस की हौसला

www.dawateislami.net

अफ़्ज़ाई करना, ग़मगीन हो तो ग़म ख़्वारी करना जब कि न **"करने के कामों"** में उस के रहन सहन, घरेलू सामान, लिबास वग़ैरा में कीड़े निकालना, दा'वत करे तो खाने में ऐब निकालना, त़रह़ त़रह़ की चीज़ों की फ़रमाइश कर के उसे आज़माइश में मुब्तला करना। इस क़िस्म के जुमले बोल कर मेज़बान को तक्लीफ़ न पहुंचाइये : ۞ आप के घर का पंखा बहुत आहिस्ता चलता है, यहां तो ए.सी भी नहीं है ۞ ह़ैरत है आप के यहां फ़्रीज नहीं है ۞ दीवारों का प्लस्तर उखड़ा हुवा है ۞ रंग न होने की वज्ह से आप का घर भूत बंगला दिखाई दे रहा है ۞ कमरे बहुत छोटे हैं ۞ सोफ़े बहुत पुराने हैं ۞ टी वी का साइज़ बहुत छोटा है कुछ दिखाई ही नहीं देता, मदनी चैनल देखने का लुत़्फ़ तो बड़ी स्क्रीन पर आता है वोह क्यूं नहीं ले लेते ۞ टोइलेट (Toilet इस्तिन्जा ख़ाने) की सफ़ाई भी करवाई है कभी ? मैं अन्दर गया तो मारे बदबू के मेरा सर फटा जा रहा था ۞ आप के घर में बच्चों का शोर बहुत होता है ۞ आप बड़े कन्जूस लगते हैं घर में लाइटें होते हुए भी उन्हें रोशन नहीं करते। **इस** के इ़लावा मुख़्तलिफ़ फ़रमाइशें करने पर भी मेज़बान तक्लीफ़ में आ सकता है, मसलन ۞ खाने में इतनी तेज़ मिर्च ! साथ में कुछ मीठा ही बना लेते ۞ सादा पानी ही ले आए मैं तो लस्सी का शौक़ीन हूं ज़रा एक गिलास बनवा लीजिये ۞ खाने के साथ सलाद खाने का मूड हो रहा है, ला दीजिये।

ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते

खाने में किसी क़िस्म का ऐब नहीं लगाना चाहिये मसलन येह न कहें कि मज़ेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया क्यूंकि खाने में ऐब निकालना मकरूह ख़िलाफ़े सुन्नत है, जी चाहे तो खाएं वरना हाथ रोक लें।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी खाने को ऐ़ब नहीं लगाया (या'नी बुरा नहीं कहा) अगर ख़्वाहिश होती तो खा लेते और अगर ना पसन्द फ़रमाते तो छोड़ देते।

(بخاری، کتاب الاطعمة، باب ماعاب النبی ﷺ طعاماً، ۳/ ۵۳۱، حدیث: ۵۴۰۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी खाने पकाने में कभी ऐ़ब न निकाला कि नमक कम है या ज़ियादा, जैसा बा'ज़ लोगों का आ़म त़रीक़ा है कि बिग़ैर ऐ़ब निकाले खाना खाते ही नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 14)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को ऐ़ब नहीं लगाया जाता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन ख़ल्फ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़्कूरा ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : येह अ़मल हुस्ने अदब में से है क्यूंकि जब बन्दा अपने ना पसन्दीदा खाने को ऐ़ब लगाता है तो वोह बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रिज़्क़ ठुकराता है, और बा'ज़ औक़ात इन्सान उस खाने को भी पसन्द नहीं करता जिसे दूसरे पसन्द कर रहे होते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को ऐ़ब नहीं लगाया जाता, उन का तो शुक्र अदा करना लाज़िम होता है। (شرح ابن بطال، کتاب الاطعمة، باب ماعاب النبی طعاما، ۹/ ۴۷۸)

अपने घर में भी खाने में ऐ़ब न निकालें

इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : खाने में ऐ़ब निकालना अपने घर पर भी

www.dawateislami.net

न चाहिये, मकरूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है : (सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की) आ़दते करीमा येह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमाया वरना नहीं। और पराए घर ऐ़ब निकालना तो (इस में) मुसलमानों की दिल शिकनी है और कमाले हि़र्स व बे मुरव्वती पर दलील है। "घी कम है या मज़ा का नहीं" येह ऐ़ब निकालना है और अगर कोई शै इसे मुज़िर (नुक़्सान देने वाली) है, उसे न खाने के उ़ज़्र के लिये उस का इज़हार किया न कि बत़ौरे त़ा'न व ऐ़ब मसलन "इस में मिर्च ज़ाइद है मैं इतनी मिर्च का आ़दी नहीं" तो येह ऐ़ब निकालना नहीं और इतना भी (उस वक़्त कि जब) बे तकल्लुफ़ी ख़ास की जगह हो और उस के सबब दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को और तक्लीफ़ न करनी पड़े मसलन दो क़िस्म का सालन है, एक में मिर्च ज़ाइद है और येह आ़दी नहीं तो उसे न खाए और वज्ह पूछी जाए तो बता दे। और अगर एक ही क़िस्म का खाना है, अब अगर (येह) नहीं खाता तो दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को इस के लिये कुछ और मंगाना पड़ेगा, उसे नदामत होगी और तंगदस्त है तो तक्लीफ़ होगी तो ऐसी ह़ालत में मुरव्वत येह है कि सब्र करे और खाए और अपनी अज़िय्यत ज़ाहिर न करे। واللّٰہ تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या, 21 / 652)

ह़िकायत : 10 मेरा लोटा गिरवी न होता

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ علیہ رحمۃ اللّٰہِ الْمُتِین बयान करते हैं कि मैं अपने एक दोस्त के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ियारत के लिये गया, उन्हों ने रोटी और नमक से हमारी मेज़बानी की और

www.dawateislami.net

फ़रमाया : अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें तकल्लुफ़ करने से मन्अ़ न फ़रमाया होता तो मैं तुम्हारे लिये तकल्लुफ़ करता। मेरे दोस्त ने कहा : पूदीना भी होता तो ज़ियादा अच्छा था। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बाहर गए और अपना लोटा गिरवी रख कर पूदीना ले आए। जब हम खा चुके तो मेरे दोस्त ने कहा : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ قَنَّعَنَا بِمَا رَزَقَنَا" या'नी तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें अ़ताकर्दा रिज़्क़ पर क़नाअ़त की तौफ़ीक़ दी। ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : अगर तुम मौजूद रिज़्क़ पर क़नाअ़त करते तो मेरा लोटा गिरवी न होता। (المستدرك،كتاب الاطعمة،كرامة الخبز...الخ،٥/ ١٦٩،حديث : ٧٢٢٨)

पूछगछ न करे

तुम्हारी आमदनी ह़राम है या ह़लाल ? येह खाना या पानी कहां से लाए हो ? जैसे सुवालात नहीं करने चाहिये, **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जब तुम में से कोई अपने मुसलमान भाई के पास जाए तो उस का खाना खाए और पूछगछ न करे, उस का पानी पिये और पूछगछ न करे।

(شعب الايمان،باب فى المطاعم والمشارب،٥/ ٦٧،حديث:٥٨٠١)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : ख़्वाह म ख़्वाह उस से येह न पूछो कि येह खाना या दूध-पानी कहां से आया है ? तेरी कमाई कैसी है ? ह़राम है या ह़लाल ? कि इस में बिला वज्ह भाई मुसलमान पर बद गुमानी है और साह़िबे ख़ाना को ईज़ा रसानी। ख़याल रहे कि मख़्लूत़ आमदनी वाले के हां दा'वत खाना दुरुस्त है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 80)

www.dawateislami.net

किसी के खाने के बारे में तफ़्तीश न की जाए

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : शरए मुत़ह्हर में मस्लह़त की तह़सील से मुफ़्सिदा (या'नी नुक़्सान देह चीज़) का इज़ाला मुक़द्दम तर है मसलन मुसलमान ने दा'वत की (और) येह उस के माल व त़आ़म की तह़क़ीक़ात कर रहे हैं : कहां से लाया ? क्यूंकर पैदा किया ? ह़लाल है या ह़राम ? कोई नजासत तो इस में नहीं मिली है ? कि बेशक येह बातें वह़्शत देने वाली हैं और मुसलमान पर बद गुमानी कर के ऐसी तह़क़ीक़ात में उसे ईज़ा देना है ख़ुसूसन अगर वोह शख़्स शरअ़न मुअ़ज़्ज़म व मोह़तरम हो, जैसे आ़लिमे दीन या सच्चा मुर्शिद या मां बाप या उस्ताज़ या ज़ी इ़ज़्ज़त मुसलमान सरदारे क़ौम तो इस ने (तह़क़ीक़ात कर के) और बेजा किया, एक तो बद गुमानी दूसरे मूह़िश (या'नी वह़्शत में डालने वाली) बातें, तीसरे बुज़ुर्गों का तर्के अदब। और (येह ख़्वाह म ख़्वाह का मुत्तक़ी बनने वाला) येह गुमान न करे कि ख़ुफ़्या तह़क़ीक़ात कर लूंगा, حَاشَا وَكَلَّا अगर उसे ख़बर पहुंची और न पहुंचना तअ़ज्जुब है कि आज कल बहुत लोग पर्चा नवेस (या'नी बातें फैलाने वाले) हैं तो इस में तन्हा बर रू (या'नी अकेले में उस से) पूछने से ज़ियादा रन्ज की सूरत है كَمَا هُوَ مُجَرَّبٌ مَعْلُوْمٌ (जैसा कि तजरिबे से मा'लूम है। ت) न येह ख़याल करे कि अह़बाब के साथ ऐसा बरताव बरतूंगा, हयहात ! (अह़िब्बा (दोस्तों) को रन्ज देना कब रवा है ? और येह गुमान कि शायद ईज़ा न पाए, हम कहते हैं शायद ईज़ा पाए, अगर ऐसा ही "शायद" पर अ़मल है तो उस के माल व त़आ़म की

www.dawateislami.net

हिल्लत व तहारत में "शायद" पर क्यूं नहीं अमल करता। मअ हाज़ा अगर ईज़ा न भी हुई और उस ने बराहे बे तकल्लुफ़ी बता दिया तो एक मुसलमान की पर्दादरी हुई (या'नी ऐब खुल गया) कि शरअन नाजाइज़। ग़रज़ ऐसे मक़ामात में वरअ व एहतियात की दो ही सूरतें हैं : या तो इस तौर पर बच जाए कि उसे (या'नी मेहमान नवाज़ को) इजतिनाब व दामन कशी पर इत्तिलाअ न हो या सुवाल व तहक़ीक़ करे तो उन उमूर में जिन की तफ़्तीश मूजिबे ईज़ा नहीं होती मसलन किसी का जूता पहने है वुज़ू कर के उस में पाउं रखना चाहता है दरयाफ़्त कर ले कि पाउं तर हैं यूं ही पहन लूं وَعَلٰی هٰذَا الْقِیَاس या कोई फ़ासिक़े बेबाक मुजाहिरे मो'लिन इस दरजे वक़ाहत व बे हयाई को पहुंचा हुवा हो कि उसे न बता देने में बाक हो, न दरयाफ़्त से सदमा गुज़रे, न उस से कोई फ़ितना मुतवक़्क़ेअ हो न इज़हारे ज़ाहिर में पर्दादरी हो तो इन्दत्तहक़ीक़ उस से तफ़्तीश में भी हरज नहीं, वरना हरगिज़ बनामे वरअ व एहतियात मुसलमानों की नफ़रत व वहशत या उन की रुस्वाई व फ़ज़ीहत या तजस्सुसे उयूब व मा'सियत का बाइस न हो कि येह सब उमूर नाजाइज़ हैं और शुकूक व शुब्हात में वरअ न बरतना नाजाइज़ नहीं। उज़्ब के अम्रे जाइज़ से बचने के लिये चन्द ना रवा बातों का इर्तिकाब करे, येह भी शैतान का एक धोका है कि उसे मोहतात बनने के पर्दे में महज़ ग़ैर मोहतात कर दिया। ऐ अज़ीज़ ! मदारात ख़ल्क़ व उल्फ़त व मुवानसत (या'नी लोगों से अच्छी तरह पेश आना और उल्फ़त व महब्बत का बरताव करना) अहम उमूर से है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, 4 / 526)

www.dawateislami.net

हिकायत : 11 हलाल को हलाल ही जानो

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाज़िली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहुत बड़े मुत्तक़ी बुज़ुर्ग थे। एक मरतबा आप और आप के अस्हाब कई दिन तक भूके रहे, फिर इस्कन्दरिया के एक आ़दिल शख़्स ने उन के लिये खाना भेजा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने अस्हाब को वोह खाना खाने से मन्अ़ कर दिया और उन हज़रात ने भूके पेट रात गुज़ारी, जब सुब्ह़ हुई तो इरशाद फ़रमाया : इस खाने को खा लो, आज रात मुझ से कहा गया : हलाल को हलाल ही जानो जब तक तुम्हारे दिल में कोई ख़याल न आए और तुम किसी मर्द या औ़रत से उस के बारे में न पूछ लो। (فیض القدیر، ۱۰/۳۷۳)

हिकायत : 12 येह ह़राम है

हज़रते सय्यिदुना याक़ूत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि एक शख़्स ने मेरे सामने खाना रखा और उसे खाने पर इसरार किया। मैं ने उस खाने पर ज़ुल्मत (या'नी तारीकी) देखी तो कहा : "येह ह़राम है" और नहीं खाया। फिर मैं हज़रते सय्यिदुना मुर्सी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : मुरीदीन की जहालत में से एक बात येह भी है कि उन के सामने खाना रखा जाए और वोह उस खाने पर तारीकी देखें तो कहते हैं : "येह ह़राम है।" ऐ मिस्कीन ! तुम्हारी परहेज़गारी अपने मुसलमान भाई के बारे में तुम्हारी बद गुमानी के बराबर नहीं है। तुम ने येह क्यूं न कहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नहीं चाहता कि मैं इस खाने को खाऊं। (فیض القدیر، ۱۰/۳۷۳)

www.dawateislami.net

हिकायत : 13

मुर्दार ऊंट

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने एक साथी से नफ़्स के लालच व हिर्स में मुब्तला होने के मुतअ़ल्लिक़ येह हिकायत सुनी, उस ने बताया कि एक बुज़ुर्ग हमारे पास तशरीफ़ लाए, हम ने अपने एक पड़ोसी से एक भुना हुवा ऊंट ख़रीदा और अपने साथियों के हमराह उन की दा'वत की। जब उन्हों ने अपना हाथ खाने के लिये बढ़ाया और एक लुक़्मा उठा कर मुंह में रखा तो फ़ौरन ही बाहर फेंक दिया और इस के बा'द खाने से अलग होते हुए कहने लगे कि तुम सब खाओ ! मुझे एक ऐसी तक्लीफ़ है जो मुझे खाने से रोक रही है। हम ने अ़र्ज़ की : अगर आप नहीं खाएंगे तो हम भी नहीं खाएंगे। तो उन्हों ने फ़रमाया : तुम जो बेहतर समझो, बहर हाल मैं नहीं खाऊंगा। इस के बा'द वोह वहां से चल दिये और हम ने उन के बिग़ैर खाना पसन्द न किया। फिर एक दूसरे से कहने लगे कि हमें ऊंट भूनने वाले को बुला कर इस ऊंट की हक़ीक़त के मुतअ़ल्लिक़ पूछना चाहिये, मुमकिन है ना पसन्दीदगी की कोई वज्ह हो। चुनान्चे, हम ने भूनने वाले को बुलाया और उस से मुसलसल और बार बार पूछते रहे तो आख़िर उस ने इक़रार करते हुए बताया : येह ऊंट मुर्दा था और मेरा नफ़्स इस मुर्दा ऊंट को बेच कर क़ीमत हासिल करने के लालच में मुब्तला हो गया, पस मैं ने इसे भून लिया और इत्तिफ़ाक़ से तुम लोगों ने इसे ख़रीद लिया। येह सुन कर हम ने वोह ऊंट टुकड़े टुकड़े कर के कुत्तों को खिला दिया। फिर जब मैं काफ़ी दिनों के बा'द उस बुज़ुर्ग से मिला तो अ़र्ज़ की : किस वज्ह से आप ने ऊंट का गोश्त खाना छोड़ा था और क्या आ़रिज़ा लाहिक़ हुवा था ? तो उन्हों ने

www.dawateislami.net

बताया : 20 साल तक मेरे नफ़्स ने किसी खाने का लालच न किया, लेकिन जब तुम लोगों ने खाना पेश किया तो मेरा नफ़्स उस खाने की ऐसी हि़र्स में मुब्तला हो गया कि इस से पहले कभी उस ने ऐसा न किया था, चुनान्चे, मैं ने जान लिया कि खाने में कुछ ख़राबी है लिहाज़ा मैं ने नफ़्स की हि़र्स की वज्ह से खाना छोड़ दिया। (قوت القلوب، ١٥٣/١)

खाने की हि़र्स से तू या रब ! नजात दे दे

अच्छा बना दे मुझ को, अच्छी सिफ़ात दे दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) मिल कर खाने में तक्लीफ़ न दीजिये

बहुत मरतबा हमें कोई चीज़ मसलन खजूरें, आम, मिठाई वग़ैरा दूसरों के साथ मिल कर खाने का इत्तिफ़ाक़ होता है, ऐसे में बा'ज़ इस्लामी भाई हि़र्स व लालच की वज्ह से बड़े बड़े हाथ मारते हैं और दूसरों का हि़स्सा भी खा जाते हैं, येह सख़्त ना पसन्दीदा, दूसरों को अज़िय्यत पहुंचाने वाला अन्दाज़ है, ह़ज़रते सय्यिदुना जबला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि जब हम क़ह़त़ साली का शिकार थे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا हमें खजूरें इनायत फ़रमाते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जब हमारे पास से गुज़रते तो इरशाद फ़रमाते : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस त़रह मिला कर खजूरें खाने से मन्अ़ फ़रमाया है, हां अगर कोई शख़्स अपने भाई से इजाज़त ले ले तो फिर कोई ह़रज नहीं।

(بخاری،کتاب المظالم،باب اذا اذن انسان...الخ، ٢/١٢٩،حدیث:٢٤٥٥)

www.dawateislami.net

शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस हदीस के तह्त लिखते हैं : जब चन्द आदमी बैठ कर खाना खा रहे हों तो येह सख़्त मा'यूब और ना पसन्दीदा है कि अगर कोई ख़ास चीज़ सब के खाने के लिये आई हो तो कोई शख़्स ज़ियादा मिक़्दार में खाए। इस की एक सूरत येह है मसलन खजूरें हैं, सब लोग एक एक खा रहे हों और कोई शख़्स दो या दो से ज़ाइद खा रहा है, येह खाने वाले की हिर्स, तंग दिली, दून हिम्मती के साथ साथ दूसरे शुरका को ईज़ा पहुंचाना है इस लिये हदीस में इस से मुमानअ़त फ़रमाई गई और यहां इस हदीस में ख़ुसूसी वज्ह येह थी कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) ने येह खजूरें सब शुरका के लिये भेजी थीं सिर्फ़ खाने के लिये और मिल्किय्यत हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) की थी। दूसरे की मिल्क में इस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तसर्रुफ़ सख़्त मा'यूब है। उन्हों ने इस मक़्सद से भेजा था कि इसे सब लोग बक़दरे ज़रूरत और हिस्सा रसदी खाएं इस लिये नहीं भेजा था कि एक शख़्स दूना (या'नी डबल) खा ले, हां अगर खाना अपनी मिल्क हो तो इख़्तियार है आदमी जैसे चाहे खाए। (नुज़हतुल क़ारी, 3 / 673)

हिकायत : 14 अनोखा दस्तर ख़्वान

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल हसन इन्ताकी عليه رحمة الله الباقى के पास एक बार बहुत से मेहमान तशरीफ़ ले आए। रात जब खाने का वक़्त आया तो **रोटियां** कम थीं, चुनान्चे, रोटियों के टुकड़े कर के दस्तरख़्वान पर डाल दिये गए और वहां से चराग़ उठा दिया गया, सब के सब मेहमान

www.dawateislami.net

अन्धेरे ही में **दस्तरख़्वान** पर बैठ गए, जब कुछ देर बा'द येह सोच कर कि सब खा चुके होंगे चराग़ लाया गया तो तमाम टुकड़े जूं के तूं मौजूद थे। ईसार के जज़्बे के तह़्त एक लुक़्मा भी किसी ने न खाया था क्यूंकि हर एक की येही मदनी सोच थी कि मैं न खाऊं ताकि साथ वाले इस्लामी भाई का पेट भर जाए। (اِتحافُ السّادَة المتقين، ٩/ ٧٨٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

अपनी ज़रूरत की चीज़ दे देने की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**मदीने की मछली**" में इस ह़िकायत को नक़्ल करने के बा'द सफ़ह़ा 26 पर लिखते हैं : **अल्लाह ! अल्लाह !** हमारे अस्लाफ़ का **जज़्बए ईसार** किस क़दर ह़ैरतनाक था और आह ! आज हमारा जज़्बए ह़िर्सो त़म्अ़ कि जब किसी दा'वत में हों और खाना शुरूअ़ किया जाए तो "खाऊं-खाऊं" करते खाने पर ऐसे टूट पड़ें कि "खाना और चबाना" भूल कर "निगलना और पेट में लुढ़काना" शुरूअ़ कर दें कि कहीं ऐसा न हो कि हमारा दूसरा इस्लामी भाई तो खाने में कामयाब हो जाए और हम रह जाएं ! हमारी ह़िर्स की कैफ़िय्यत कुछ ऐसी होती है कि हम से बन पड़े तो शायद दूसरे के मुंह से निवाला (نِ-والہ) भी छीन कर निगल जाएं ! काश ! हम भी "ईसार" करना सीखें। **सुल्त़ाने दो जहां** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "**जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो,**

www.dawateislami.net

फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (दूसरे को) तरजीह़ दे, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है।" (اِتحافُ السّادَة المتقين،٩/٧٧٩)

हमें भूका रहने का औरों की ख़ातिर

अ़त़ा कर दे जज़्बा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿6﴾ मरीज़ को तक्लीफ़ न दीजिये

बीमार की इ़यादत करना कारे सवाब है लेकिन बा'ज़ औक़ात इ़यादत करने वाले मरीज़ के लिये राह़त के बजाए ज़ह़मत का बाइ़स बन जाते हैं। बिला ज़रूरत मरज़ की तफ़्सील पूछना, त़िब्बी मुआ़मलात से ला इ़ल्म होते हुए भी उसे त़रह़ त़रह़ के मश्वरे देना और दीगर फ़ुज़ूल सुवालात करना मरीज़ के लिये कोफ़्त का सबब बन जाते हैं, बहर ह़ाल इ़यादत करने में मरीज़ की कैफ़िय्यत का ख़याल रखना ज़रूरी है और अगर येह महसूस हो कि हमारी मौजूदगी मरीज़ के लिये तक्लीफ़ का सबब है तो जल्द वहां से रवाना हो जाना चाहिये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اَفْضَلُ الْعِيَادَةِ سُرْعَةُ الْقِيَام बेहतरीन इ़यादत जल्द उठ जाना है।

(شعب الايمان،باب فی عيادة المريض،فصل فی آداب العيادة،٦/٥٤٢، حديث: ٩٢٢١)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : येह तमाम उस सूरत में है जब बीमार को उस के बैठने से तक्लीफ़ हो। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 433)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى लिखते हैं : जिस वक़्त येह गुमान हो कि मरीज़ इस शख़्स के ज़ियादा बैठने को तरजीह़ देता है, मसलन : वोह इस का दोस्त या कोई बुज़ुर्ग है या वोह इस में अपनी मस्लह़त समझता है, इसी त़रह़ कोई और फ़ाएदा हो तो उस वक़्त मरीज़ के पास ज़ियादा देर बैठने में कोई ह़रज नहीं।

(مرقاة المفاتيح،كتاب الجنائز،٤/٦٠،تحت الحديث:١٥٩١)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने चार सबक़ आमोज़ मुख़्तसर ह़िकायात नक़्ल की हैं, चुनान्चे,

ह़िकायत : 15 ﴿1﴾ इन्हें मरीज़ की इ़यादत करना सिखा

मन्क़ूल है कि बा'ज़ लोग मरज़ुल मौत में ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की इ़यादत को गए और काफ़ी देर वहां बैठे रहे, वोह पेट की तक्लीफ़ में मुब्तला थे, लोगों ने उन से कहा : आप हमारे लिये दुआ़ फ़रमाइये ताकि हम वापस जाएं, ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने कहा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन्हें मरीज़ की इ़यादत करना सिखा।

ह़िकायत : 16 ﴿2﴾ दरवाज़ा बन्द कर दो मगर

एक शख़्स मरीज़ की इ़यादत को गया और काफ़ी देर बैठा रहा तो मरीज़ ने कहा : लोगों की भीड़ की वज्ह से हमें तक्लीफ़ हुई है, वोह आदमी कहने लगा, मैं उठ कर दरवाज़ा बन्द कर दूं ? मरीज़ ने कहा : हां ! लेकिन बाहर से।

www.dawateislami.net

हिकायत : 17

﴾3﴿ तुम्हें तक्लीफ़ क्या है ?

एक शख़्स किसी बीमार के पास बहुत देर बैठा फिर बोला कि तुम्हें तक्लीफ़ क्या है ? बीमार ने कहा : तुम्हारे बैठने की।

हिकायत : 18

﴾4﴿ मरीज़ के पास ज़ियादा देर मत बैठो

चन्द लोग एक मरीज़ के पास आए और काफ़ी देर तक बैठे रहे और कहने लगे : हमें वसिय्यत कीजिये ! मरीज़ ने कहा : मैं तुम्हें इस बात की वसिय्यत करता हूं कि जब तुम मरीज़ की इयादत करने जाओ तो उस के पास ज़ियादा देर मत बैठो। (مرقاة المفاتيح،كتاب الجنائز،٤/٦٠، تحت الحديث:١٥٩١)

"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से इयादत के 7 मदनी फूल

❁ मरीज़ की **इयादत** करना सुन्नत है ❁ अगर मा'लूम है कि **इयादत** को जाएगा तो उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रेगा ऐसी हालत में **इयादत** न करे ❁ **इयादत** को जाए और मरज़ की सख़्ती देखे तो मरीज़ के सामने येह ज़ाहिर न करे कि तुम्हारी हालत ख़राब है और न सर हिलाए जिस से हालत का ख़राब होना समझा जाता है ❁ उस के सामने ऐसी बातें करनी चाहियें जो उस के दिल को भली मा'लूम हों ❁ उस की मिज़ाज पुरसी करे ❁ उस के सर पर हाथ न रखे मगर जब कि वोह ख़ुद इस की ख़्वाहिश करे ❁ फ़ासिक़ की **इयादत** भी जाइज़ है क्यूंकि **इयादत** हुक़ूक़े इस्लाम से है और फ़ासिक़ भी मुस्लिम है। (बहारे शरीअ़त, 3 / 505)

www.dawateislami.net

तू सारे मरीज़ों को अल्लाह शिफ़ा दे दे

अच्छा है फ़क़त् वोह जो बीमारे मदीना है

बे वुक़ूफ़ों का इयादत करना

हज़रते सय्यिदुना शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बे वुक़ूफ़ लोगों का मरीज़ की इयादत करना उस के घरवालों पर उस के मरज़ से भी ज़ियादा भारी होता है, क्यूंकि वोह बे वक़्त आते हैं और देर तक बैठे रहते हैं। (حلية الاولياء، عامر بن شراحيل الشعبى، ٣٤٨/٤، رقم: ٥٨١٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ बिला इजाज़त किसी का ख़त् देखना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला इजाज़त किसी का एस एम एस (sms) पढ़ लेना, वॉट्स एप (whats app) पैग़ाम सुन या देख लेना या किसी का ख़त् या ई-मेल (बरक़ी ख़त्) या ज़ाती डाइरी पढ़ लेना बा'ज़ों के नज़दीक कोई मस्अला ही नहीं है, "मुझ से क्या पर्दा", "हमारी आपस में बे तकल्लुफ़ी है", "हम तो गहरे दोस्त हैं" इस क़िस्म के जुम्ले बोल कर दिल को मना लिया जाता है, येह उन की ग़लत् फ़ेहमी भी हो सकती है क्यूंकि शायद ही कोई उन की इस हरकत को गवारा करता हो, ज़बान से अगर्चे वोह कुछ न कहे लेकिन उस का दिल ग़ालिबन सदमे में मुब्तला होगा। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने भाई का ख़त़ बिग़ैर उस की इजाज़त के देखा उस ने जहन्नम में देखा। (ابوداؤد، کتاب الوتر،باب الدعاء،۲/۱۱۱،حدیث:۱۴۸۵)

शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मह़मूद बिन अह़मद बदरुद्दीन ऐ़नी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : बा'ज़ अह्ले इ़ल्म का क़ौल है कि इस ह़दीस में वोह ख़त़ मुराद है जिस में किसी का राज़ या अमानत मौजूद हो और साह़िबे राज़ इस पर किसी के मुत्त़लेअ़ होने को ना पसन्द करता हो, इ़ल्मे दीन पर मुश्तमिल किताब या ख़त़ मुराद नहीं क्यूंकि इसे देखने से मन्अ़ करना और छुपाना जाइज़ नहीं है। जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह फ़रमान हर किताब (या'नी लिखी हुई चीज़) को आ़म है क्यूंकि चीज़ का मालिक इस का ज़ियादा ह़क़दार होता है। (شرح ابوداؤد للعینی، ۵/۴۰۰،تحت الحدیث:۱۴۵۵)

"उस ने जहन्नम में देखा" के तह़्त अ़ल्लामा इब्ने असीर जज़री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى लिखते हैं : येह एक मिसाल है या'नी जिस त़रह़ इन्सान आग से बचता है इसी त़रह़ इस फे़'ल से बचना चाहिये। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस का मा'ना येह है कि वोह ऐसी चीज़ को देखता है जो उस पर दोज़ख़ की आग लाज़िम करती है। एक एह़तिमाल इस मा'ना का भी है कि ऐसा करने वाले की आंखों को सज़ा दी जाएगी क्यूंकि इन के ज़रीए़ जुर्म का इर्तिकाब किया गया जैसा कि अगर किसी की ना पसन्दीदगी के बा वुजूद उस की गुफ़्त्गू सुनी जाए तो सुनने वाले के कानों को सज़ा दी जाएगी।

(النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر، ۴/۱۲۸)

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن किसी का ख़त़ बिला इजाज़त देखने के बारे में किये गए एक सुवाल के जवाब में लिखते हैं : बक्र को अस्लन इख़्तियार नहीं, न ख़ालिद के ख़ुतूत़ रोकने का, न देखने का, और वोह ज़रूर गुनहगार होगा। ह़दीस में इरशाद हुवा कि जो बिला इजाज़त दूसरे का ख़त़ देखे वोह जहन्नम की आग देखता है।

(फ़तावा रज़विय्या, 24 / 713) (ابوداؤد،کتاب الوتر،باب الدعاء،۲/۱۱۱،حدیث:۱۴۸۵)

आंखों में सरे ह़श्र न भर जाए कहीं आग
आंखों पे मेरे भाई लगा कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 95)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿8﴾ पड़ोसी को तक्लीफ़ न दीजिये

कोई तक्लीफ़ दे तो उस के शर से बचने के लिये उस के क़रीब से उठा जा सकता है, आइन्दा उस से मिलने से बचा जा सकता है, उस से तअ़ल्लुक़ात ख़त्म किये जा सकते हैं लेकिन अगर पड़ोसी ही तक्लीफ़ देने पर तुल जाए तो इन्सान कहां पनाह ढूंडे ? क्यूंकि उस की तक्लीफ़ का सामना करना पड़ेगा या मकान बदलना पड़ेगा जो कि बहुत दुश्वार है। इस लिये हमें चाहिये कि मुसलमानों और ख़ास तौ़र पर पड़ोसी को तक्लीफ़ देने से बचें। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है वोह अपने पड़ोसी को हरगिज़ तक्लीफ़ न दे।

(مسلم،کتاب الایمان،باب الحث علی اکرام الجار والضیف الخ،ص۴۳،حدیث: ۴۷)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी उस को तक्लीफ़ देने के लिये कोई काम न करे, (मज़ीद फ़रमाते हैं :) कहा जाता है : हमसाया और मां जाया बराबर होने चाहियें । अफ़्सोस ! मुसलमान येह बातें भूल गए । कुरआने करीम में पड़ोसी के हुक़ूक़ का ज़िक्र फ़रमाया, बहर ह़ाल पड़ोसी के हुक़ूक़ बहुत हैं, इन के अदा की तौफ़ीक़ रब तआ़ला से मांगिये ।

(मिरआतुल मनाजीह, 6 / 53)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى इस ह़दीस की शर्ह़ करते हुए लिखते हैं : पड़ोसी की ह़ाजत पूरी करने के लिये उस की मदद करे, उस से बुराई दूर करे, और उस पर ख़ुसूसी अ़त़ाएं करे, ताकि वईद का मुस्तह़िक़ न हो । मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान है : जो शरीअ़ते इस्लामिया का इल्तिज़ाम करना चाहे उस के लिये पड़ोसी और मेहमान का इकराम और उन के साथ भलाई से पेश आना भी लाज़िम है ।

(مرقاة المفاتيح ، كتاب الاطعمة ، باب الضيافة ، ٨/ ٦٩ ، تحت الحديث : ٤٢٤٣)

वोह ईमान वाला नहीं हो सक्ता

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मोमिन नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह ईमान वाला नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मोमिन नहीं हो सकता । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन है ?

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस की बुराइयों से उस का पड़ोसी महफ़ूज़ न रहे।

(بخاری،کتاب الادب،باب اثم من لایامن جارہ بوائقہ،٤/١٠٤،حدیث:٦٠١٦)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : तीन बार फ़रमाना ताकीद के लिये है, "لَا يُؤْمِنُ" में कमाले ईमान की नफ़ी है, या'नी मोमिने कामिल नहीं हो सकता, नहीं हो सकता, नहीं हो सकता। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की वज़ाहत पहले ही न फ़रमा दी, बल्कि साइल के पूछने पर बताया, ताकि सुनने वालों के दिल में येह बात बैठ जाए, जो बात इन्तिज़ार और पूछगछ के बा'द मा'लूम हो वोह बहुत दिल नशीन होती है, अगर्चे हर मुसलमान को अपने शर से बचाना ज़रूरी है मगर पड़ोसी को बचाना निहायत ही ज़रूरी कि उस से हर वक़्त काम रहता है, वोह हमारे अच्छे अख़्लाक़ का ज़ियादा मुस्तहिक़ है। (मिरआतुल मनाजीह, 6 / 555)

हिकायत : 19 तुम हमारे साथ न बैठो

रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक ग़ज़वे पर तशरीफ़ ले गए और इरशाद फ़रमाया : आज वोह शख़्स हमारे साथ न बैठे जिस ने अपने पड़ोसी को ईज़ा दी हो। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : मैं ने अपने पड़ोसी की दीवार के नीचे पेशाब किया था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आज तुम हमारे साथ न बैठो।

(المعجم الاوسط،٦/٤٨١،حدیث:٩٤٧٩)

www.dawateislami.net

40 घर पड़ोस में दाख़िल हैं

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने फ़ुलां क़बीले के महल्ले में रिहाइश इख़्तियार की है लेकिन उन में से जो मुझे सब से ज़ियादा तक्लीफ़ देता है वोह मेरा सब से ज़ियादा क़रीबी पड़ोसी है। सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) को भेजा, वोह मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो कर पुकारने लगे : बेशक चालीस घर पड़ोस में दाख़िल हैं और जिस के शर से उस का पड़ोसी ख़ौफ़ज़दा हो वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।

(المعجم الکبیر، ۱۹/۷۳، حدیث: ۱۴۳)

हिकायत : 20 हमसाए की बकरी को भी तक्लीफ़ न दो

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इरशाद फ़रमाती हैं कि एक दिन हमसाए की बकरी घर में दाख़िल हो गई। जब उस ने रोटी उठाई तो मैं उस की त़रफ़ गई और रोटी को उस के जबड़े से खींच लिया। येह देख कर हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुझे इस को तक्लीफ़ देना अमान न देगा क्यूंकि येह भी हमसाए को तक्लीफ़ देने से कुछ कम नहीं।

(مکارم الاخلاق للطبرانی، ص ۳۹۵، حدیث: ۲۳۹ ملتقطاً)

www.dawateislami.net

पड़ोसियों को तक्लीफ़ देने की मुख़्तलिफ़ सूरतें

۞ उस के दरवाज़े के सामने कचरा डाल देना ۞ उस के दरवाज़े के पास शोर करना ۞ बच्चों का (बिल ख़ुसूस सोने के औक़ात में) शोर करना ۞ वक़्त बे वक़्त कील वग़ैरा ठोंकना ۞ दीवार में सूराख़ करने के लिये ड्रील मशीन चलाना ۞ मसालह़ा वग़ैरा पीसने के लिये रात के औक़ात में आवाज़ देने वाला ग्राइन्डर (Grinder) चलाना ۞ उस के घर में झांकना ۞ एक ही बिल्डिंग में रहने की सूरत में सीढ़ियां चढ़ते हुए ज़ोर ज़ोर से पाउं चटख़ाना ۞ ऊंची आवाज़ से टेप रेकोर्डर या डेक वग़ैरा बजाना (चाहे ना'तें ही क्यूं न चलाएं इस की आवाज़ अपने तक मह़दूद रखिये) ۞ अपने घर का फ़र्श धोने के बा'द पानी पड़ोसियों के घर के सामने छोड़ देना ۞ उन के बच्चों को झाड़ना, मारना। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन तमाम बातों से बचाए, اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मस्अला : मकान ख़रीदा और उस में चमड़ा पकाता है या उस को चमड़े का गोदाम बनाया है जिस से पड़ोसियों को अज़िय्यत होती है अगर वक़्ती तौर पर है येह मुसीबत बरदाश्त की जा सकती है और इस का सिलसिला बराबर जारी है तो इस काम से वहां रोका जाएगा।

(बहारे शरीअ़त, 2 / 814)

पड़ोसी के हुक़ूक़

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی नक़्ल करते हैं : **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : क्या तुम जानते हो पड़ोसी का

www.dawateislami.net

हक़ क्या है ? अगर वोह तुम से मदद मांगे तो उस की मदद करो, क़र्ज़ मांगे तो क़र्ज़ दो, अगर वोह मोहताज हो तो उसे कुछ दो, बीमार हो तो इयादत करो, मर जाए तो उस के जनाज़े के साथ जाओ, उसे कोई ख़ुशी हासिल हो तो मुबारक बाद दो, मुसीबत पहुंचे तो ता'ज़ियत करो, बिला इजाज़त उस के मकान से ऊंचा मकान बना कर उस की हवा न रोक दो, अगर तुम फल ख़रीदो तो तोहफ़तन उसे भी दो और अगर ऐसा न करो तो फिर पोशीदा तौर पर लाओ और तुम्हारे बच्चे उन्हें ले कर बाहर न निकलें कि पड़ोसी के बच्चों को रन्ज पहुंचेगा। अपनी हांडी के धूवें से उसे तक्लीफ़ न पहुंचाओ मगर येह कि उसे भी कुछ न कुछ भिजवा दो। क्या तुम जानते हो पड़ोसी का हक़ क्या है ? उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! पड़ोसी का हक़ वोही शख़्स अदा कर सकता है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रहम फ़रमाए। (مرقات،٦٩/٨،تحت الحديث:٤٢٤٣)

पड़ोसियों की ख़ातिर शोरबा ज़ियादा पका लो

हदीसे पाक में पड़ोसियों से ख़ैर ख़्वाही करने की तरग़ीब आई है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! जब शोरबा पकाओ तो उस का पानी ज़ियादा करो ! और अपने पड़ोसियों का ख़याल रखो। (مسلم، کتاب البر والصلة، باب الوصية بالجار...الخ، ص ١٤١٣، حديث: ٢٦٢٥)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : इस हदीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए : एक येह

www.dawateislami.net

कि मा'मूली सालन भी पड़ोसियों को भेजते रहना चाहिये, क्यूंकि सरकार (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने यहां शोरबा फ़रमाया गोश्त का हो या किसी और चीज़ का। दूसरे येह कि हर पड़ोसी को हदया देना चाहिये, क़रीब हो या दूर, अगर्चे क़रीब का हक़ ज़ियादा है। तीसरे येह कि हमेशा लज़्ज़त पर उल्फ़त और महब्बत को तरजीह देना चाहिये, क्यूंकि जब शोरबे में फ़क़त पानी पड़ेगा तो मज़ा कम हो जाएगा, लेकिन इस के ज़रीए पड़ोसियों से तअल्लुक़ात ज़ियादा हो जाएंगे, इसी लिये "مَاءَهَا" फ़रमाया, या'नी सिर्फ़ पानी ही बढ़ा दो ! अगर्चे घी और मसालहा न बढ़ा सको।

(मिरआतुल मनाजीह, 3 / 121)

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस हदीस के तहत नक़्ल फ़रमाते हैं : इस हदीस में फ़ुक़रा और पड़ोसियों पर वुस्अ़त करने की ख़ातिर खाने का शोरबा बढ़ा लेने का इस्तिहबाब मौजूद है, शोरबे में गोश्त वाली क़ुव्वत मौजूद होती है क्यूंकि शोरबे में गोश्त को जोश देने से उस की ख़ासिय्यत शोरबे में आ जाती है। इस हदीस में पके हुए गोश्त के भुने हुए गोश्त से अफ़्ज़ल होने का भी सुबूत मौजूद है कि पका होने की सूरत में सब को फ़ाएदा होगा, क्यूंकि घरवाले और पड़ोसी सब खा सकेंगे, फिर येह कि इस में सरीद भी बनाई जा सकेगी जो कि सब से अफ़्ज़ल खाना है, मज़ीद इस हदीस में पड़ोसी पर एहसान करने और अपने खाने में से कुछ पड़ोसियों के लिये अलग करने का भी इस्तिहबाब मौजूद है। (فيض القدير، حرف الهمزة، ١ / ٥١٠، تحت الحديث : ٧٤١)

www.dawateislami.net

हिकायत : 21 **पड़ोसियों के लिये भी गोश्त ख़रीदते थे**

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह महदी बिन यह्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने हमेशा सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद अ़रबी फ़िश्तालीعَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي के पड़ोसियों से उन की ता'रीफ़ें ही सुनी हैं, आप के पड़ोसी बहुत अच्छे अल्फ़ाज़ से आप को याद करते थे । पड़ोसियों ने येह भी बताया था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब भी घरवालों के लिये गोश्त ख़रीदते तो पड़ोसियों के लिये भी ख़रीदते और फ़रमाते थे : मैं अकेला गोश्त पका कर अपने पड़ोसियों को मह़रूम नहीं छोड़ सकता । (الابریز ، مقدمة المؤلف ، الفصل الاول ، ۱/ ٤٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿9﴾ तक्लीफ़ देने वाला मज़ाक़ न कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी की डोरबेल (Door Bell) बजा कर भाग जाना, सोने वालों की चारपाई दूसरी जगह रख देना, किसी को कमरे या बाथरूम में बन्द कर देना, बहरूप धार कर या डरावनी शक्ल बना कर किसी को डराना, वॉशरूम का पानी बन्द कर देना, दोस्तों की मन्डलियों में, रिश्तेदारों के झुरमट में किसी का मज़ाक़ उड़ा कर, उस पर फ़िक़्रे कस कर, किसी के सर पर अचानक चपत लगा कर या बैठने वाले के नीचे से कुरसी खींच कर उस पर हंसने बल्कि क़ह़क़ह़े लगाने को ज़िन्दा दिली क़रार दिया जाता है, लेकिन इस त़रफ़ किसी का मुश्किल ही से ध्यान जाता है कि जिस का मज़ाक़ उड़ाया गया

www.dawateislami.net

उस के दिल पर क्या गुज़र रही है बल्कि अगर कोई हिम्मत कर के अपना सदमा बयान कर दे तो उसे बुरा भला कहा जाता है कि "हमारी इतनी सी बात भी तुम से बरदाश्त नहीं हुई !" याद रखिये ! किसी मुसलमान को मज़ाक़ में भी तक्लीफ़ पहुंचाने से मन्अ़ किया गया है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا تُمَارِ أَخَاكَ وَلَا تُمَازِحْهُ وَلَا تَعِدْهُ مَوْعِدَةً فَتُخْلِفَهُ अपने भाई से न तो झगड़ा करो, न उस का मज़ाक़ उड़ाओ और न ही उस से कोई ऐसा वा'दा करो जिस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करो। (ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ما جاء فی المراء، ۳/۴۰۰، حدیث:۲۰۰۲)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : आपस का मज़ाक़ जिस से हर एक का दिल ख़ुश हो येह चन्द शर्तों से जाइज़ है जैसा कि अ़र्ज़ किया जा चुका है मगर किसी का मज़ाक़ उड़ाना जिस से सामने वाले को तक्लीफ़ पहुंचे बहर ह़ाल ह़राम है वोही यहां मुराद है क्यूंकि मुसलमान को ईज़ा देना ह़राम है। "न ऐसा वा'दा करो जिस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करो" के तह़्त मुफ़्ती साह़िब फ़रमाते हैं : यहां वा'दे से वोह वा'दा मुराद है जो जाइज़ हो, बा'ज़ फ़ुक़हा के नज़दीक ऐसा वा'दा पूरा करना वाजिब है, अक्सर के हां मुस्तह़ब है अगर वा'दे के वक़्त اِنْ شَآءَاللّٰہ कह दिया जाए तो सब के नज़दीक इस का पूरा करना मुस्तह़ब है। (मिरआतुल मनाजीह, 6 / 501)

www.dawateislami.net

मिज़ाह़ और सुख़रिय्या में फ़र्क़

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : ऐसी बात जिस से अपना और सुनने वाले का दिल ख़ुश हो जाए मिज़ाह़ है और जिस से दूसरे को तक्लीफ़ पहुंचे जैसे किसी का मज़ाक़ उड़ाना **सुख़रिय्या** है। मिज़ाह़ अच्छी चीज़ है, **सुख़रिय्या** बुरी बात है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 493)

लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले का अन्जाम

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बिलाशुबा लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल कर उसे बुलाया जाएगा : आओ ! क़रीब आओ, जब वोह आएगा दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा, इसी त़रह़ कई बार किया जाएगा यहां तक कि जब उस के लिये फिर दरवाज़ा खोल कर उसे बुलाया जाएगा : आओ ! आओ ! क़रीब आओ ! तो वोह ना उम्मीदी और मायूसी के मारे नहीं आएगा। (شعب الایمان،٥/ ٣١٠، حدیث: ٦٧٥٧)

हिकायत : 22

मज़ाक़ में भी डराने से रोका

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी लैला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का बयान है कि वोह ह़ज़रात **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र में थे, इस दौरान उन में से एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه सो गए तो एक दूसरे सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه उन के पास रखी अपनी एक रस्सी लेने गए, जिस से वोह घबरा गए (या'नी

उस सोने वाले के पास रस्सी थी या उस जाने वाले के पास थी उस ने येह रस्सी सांप की त़रह़ उस पर डाली वोह सोने वाले उसे सांप समझ कर डर गए और लोग हंस पड़े ।)[1] तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसलमान को डराए ।

(ابوداوٗد،کتاب الادب،باب من یاخذ الشيء من مزاح،٤/٣٩١، حدیث: ٥٠٠٤)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुना तो येह फ़रमाया, इस फ़रमाने आ़ली का मक़्सद येह है कि हंसी मज़ाक़ में किसी को डराना जाइज़ नहीं कि कभी इस से डरने वाला मर जाता है या बीमार पड़ जाता है, ख़ुश त़बई वोह चाहिये जिस से सब का दिल ख़ुश हो जाए किसी को तक्लीफ़ न पहुंचे । इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि ऐसी दिल लगी हंसी किसी से करनी जिस से उस को तक्लीफ़ पहुंचे मसलन किसी को बे वुक़ूफ़ बनाना, उस के चपत लगाना वग़ैरा ह़राम है । (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 270)

भाइयों का दिल दुखाना छोड़ दो
और तमस्ख़ुर भी उड़ाना छोड़ दो

अप्रैल फूल

अप्रैल फूल दूसरों के साथ अ़मली मज़ाक़ करने और बे वुक़ूफ़ बनाने का नाम है इस का ख़ास दिन यकुम अप्रैल (First April) है ।

[1]: مراۃ،٥/٢٧٠

मग़रिबी मुमालिक में यकुम अप्रैल को मज़ाक़ का दिन क़रार दिया जाता है और झूटे मज़ाक़ का सहारा ले कर लोगों को बे वुक़ूफ़ बनाया जाता है, येह फ़ुज़ूल और फ़ूल (Fool) रस्म मुस्लिम मुआ़शरे में भी जड़ें पकड़ चुकी है और मुसलमान अपने ही इस्लामी भाइयों को फ़ूल (या'नी बे वुक़ूफ़) बना कर ख़ुश होते हैं। अप्रैल फ़ूल में आदमी को परेशान कुन झूटी ख़बर दे दी जाती है फिर जब उस पर ह़क़ीक़त खुलती है तो उसे "अप्रैल फ़ूल-अप्रैल फ़ूल" कह कर उस का मज़ाक़ उड़ाया जाता है, मसलन टेलीफ़ोन पर येह बताया जाता है कि ❁ आप का जवान बेटा फ़ुलां जगह एक्सीडेन्ट होने की वज्ह से शदीद ज़ख़्मी है और उसे फ़ुलां हस्पताल में पहुंचा दिया गया है या ❁ आप का फ़ुलां रिश्तेदार इन्तिक़ाल कर गया है ❁ आप की दुकान में आग लग गई है ❁ आप की दुकान में चोरी हो गई है ❁ आप के प्लॉट पर क़ब्ज़ा हो गया है ❁ आप की गाड़ी चोरी हो गई है ❁ आप के बेटे को तावान के लिये इग़वा कर लिया गया है ❁ आप का दिया हुवा चेक बाऊन्स हो गया है और पोलीस आप को गिरिफ़्तार करने के लिये ढूंड रही है।

हर साल अप्रैल फ़ूल के बारे में ख़बरें मन्ज़रे आ़म पर आती हैं, अफ़्सोस कि झूट बोल कर, अपने मुसलमान भाइयों को परेशान कर के उन की हंसी उड़ाने को तफ़रीह़ का नाम दिया जाता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

हिकायत : 23

ग़लत ख़बर ने जान ले ली

रीनाला खुर्द (पंजाब, पाकिस्तान) के 70 सालह रिहाइशी शख़्स को ख़बर मिली कि उस के भाई का ओकाड़ा में एक्सीडेन्ट के नतीजे में इन्तिक़ाल हो गया है, वोह ओकाड़ा अस्पताल आ रहा था कि तह़सील रोड़ पर गिर पड़ा और दिल का दौरा पड़ने की वज्ह से जान से हाथ धो बैठा, बा'द में पता चला कि किसी मनचले ने अप्रैल फूल का मज़ाक़ किया था। (उर्दू पोइन्ट, यकुम अप्रैल 2008)

हिकायत : 24

अप्रैल फूल का धोका

यकुम अप्रैल 2012 ईसवी की बात है हिन्द के एक शहर नागपुर (ताजपुर) में एक शख़्स किराए के मकान में रहता था, वोह और उस के अह्ले ख़ाना घर से बाहर निकले हुए थे कि उन के एक पड़ोसी ने मोबाइल पर ख़बर दी कि तुम्हारे घर में आग लग गई है लेकिन उन्हों ने इसे अप्रैल फूल समझा और कहा : लगने दो। धीरे धीरे आग पूरे मकान में फैल गई। आस पास के लोगों ने फ़ायर ब्रीगेड की मदद से आग पर क़ाबू पा लिया लेकिन उस वक़्त तक अप्रैल फूल अपना असर दिखा चुका था। ("धी सन्डे इन्डेन" वेब साइट)

अप्रैल फूल कैसे शुरूअ़ हुवा ?

अप्रैल फूल क्या है ? इस के बारे में बहुत कम लोग जानने की कोशिश करते हैं अलबत्ता दीगर ख़ुराफ़ात की त़रह़ इस को भी बड़े एहतिमाम से मनाया जाता है, अप्रैल फूल के आग़ाज़ के बारे में एक तह़क़ीक़ येह है कि जब ईसाई अफ़्वाज ने स्पेन को फ़त्ह़ किया तो उस वक़्त स्पेन की

www.dawateislami.net

ज़मीन पर मुसलमानों का इतना ख़ून बहाया गया कि फ़ातेह़ फ़ौज के घोड़े जब गलियों से गुज़रते थे तो उन की टांगें मुसलमानों के ख़ून में डूबी होती थीं जब क़ाबिज़ अफ़्वाज को यक़ीन हो गया कि अब स्पेन में कोई भी मुसलमान ज़िन्दा नहीं बचा है तो उन्हों ने गिरिफ़्तार मुसलमान हुक्मरान को येह मौक़अ़ दिया कि वोह अपने ख़ानदान के साथ वापस मराकिश चला जाए जहां से उस के आबाओ अज्दाद आए थे, क़ाबिज़ अफ़्वाज ग़रनाता से कोई बीस किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर उसे छोड़ कर वापस चली गईं। जब ईसाई अफ़्वाज मुसलमान हुक्मरानों को अपने मुल्क से निकाल चुकीं तो हुकूमती जासूस गली गली घूमते रहे कि कोई मुसलमान नज़र आए तो उसे शहीद कर दिया जाए, जो मुसलमान ज़िन्दा बच गए वोह अपने अ़लाक़े छोड़ कर दूसरे अ़लाक़ों में जा बसे और अपनी शनाख़्त पोशीदा कर ली, अब ब ज़ाहिर स्पेन में कोई मुसलमान नज़र नहीं आ रहा था मगर अब भी ईसाइयों को यक़ीन था कि सारे मुसलमान क़त्ल नहीं हुए कुछ छुप कर और अपनी शनाख़्त छुपा कर ज़िन्दा हैं अब मुसलमानों को बाहर निकालने की तरकीबें सोची जाने लगीं और फिर एक मन्सूबा बनाया गया। पूरे मुल्क में ए'लान हुवा कि यकुम अप्रैल को तमाम मुसलमान ग़रनाता में इकठ्ठे हो जाएं ताकि जिस मुल्क में जाना चाहें जा सकें। अब चूंकि मुल्क में अम्न क़ाइम हो चुका था इस लिये मुसलमानों को ख़ुद ज़ाहिर होने में कोई ख़ौफ़ महसूस न हुवा, मार्च के पूरे महीने ए'लानात होते रहे, अल ह़मरा के नज़दीक बड़े बड़े मैदानों में ख़ैमे नस्ब कर दिये गए, जहाज़ आ कर बन्दरगाह पर लंगर अन्दाज़ होते रहे, मुसलमानों को हर त़रीक़े से यक़ीन दिलाया गया कि उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा। जब मुसलमानों को यक़ीन हो गया कि अब हमारे साथ कुछ नहीं होगा तो वोह

www.dawateislami.net

सब ग़रनाता में इकट्ठे होना शुरूअ हो गए। इस तरह हुकूमत ने तमाम मुसलमानों को एक जगह इकठ्ठा कर लिया और उन की बड़ी ख़ातिर मदारत की। येह यकुम अप्रैल का दिन था जब तमाम मुसलमानों को बहरी जहाज़ में बिठाया गया मुसलमानों को अपना वतन छोड़ते हुए तक्लीफ़ हो रही थी मगर इत्मीनान था कि चलो जान तो बच जाएगी। दूसरी तरफ़ हुक्मरान अपने महल्लात में जश्न मनाने लगे, जर्नलों ने मुसलमानों को अल वदाअ किया और जहाज़ वहां से चल दिये, इन मुसलमानों में बूढ़े, जवान, ख़वातीन, बच्चे और कई एक मरीज़ भी थे जब जहाज़ गहरे समुन्दर में पहुंचे तो मन्सूबा बन्दी के तहत उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया गया और यूं वोह तमाम मुसलमान समुन्दर में डूब गए। इस के बा'द स्पेन में ख़ूब जश्न मनाया गया कि हम ने किस तरह अपने दुश्मनों को बे वुक़ूफ़ (Fool) बनाया।

फ़स्ट यर फूल

कॉलेज में पहले दिन दाख़िल होने वाले तलबा को भी मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से फ़स्ट यर फूल (First year fool) बनाया जाता है, कभी इन से ऊट पटांग सुवालात पूछे जाते हैं, कभी ग़लत क्लास रूम में घुसा दिया जाता है, कभी उन की पुश्त पर फ़स्ट यर फूल का कार्ड या स्टीकर चिपका दिया जाता है कभी उन के कपड़ों को पेन की सियाही से रंग दिया जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा करने वालों को सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

﴾10﴿ नाम बिगाड़ना

अस्ल नाम पुकारने के बजाए ना मुनासिब नामों मसलन लम्बू ! कालू ! मोटू ! वग़ैरा कह कर बुलाना भी सामने वाले को तक्लीफ़ दे सकता है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 204 पर लिखते हैं : किसी मुसलमान बल्कि काफ़िर ज़िम्मी को भी बिला ह़ाजते शरइ़य्या ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारना या ता'बीर करना जिस से उस की दिल शिकनी हो, उसे ईज़ा पहुंचे, शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम है। अगर्चे बात फ़ी नफ़्सिही सच्ची हो, فَاِنَّ كُلَّ حَقٍّ صِدْقٌ وَلَيْسَ كُلُّ صِدْقٍ حَقًّا (तो बेशक हर ह़क़ सच है मगर हर सच ह़क़ नहीं) (फ़तावा रज़विय्या, 23 / 204) लिहाज़ा जिस का जो नाम हो उस को उसी नाम से पुकारना चाहिये, अपनी त़रफ़ से किसी का उल्टा सीधा नाम मसलन लम्बू, ठिंगू, कालू वग़ैरा न रखा जाए, उ़मूमन इस त़रह़ के नामों से दिल आज़ारी होती है और वोह इस से चिड़ता भी है लेकिन पुकारने वाला जान बूझ कर बार बार मज़ा लेने के लिये उसे इसी नाम से पुकारता है, ऐसा करने वालों को संभल जाना चाहिये क्यूंकि रब तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِۚ (پ۲۶، الحجرات:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِي इस आयत के तह़्त लिखते हैं : (या'नी वोह नाम) जो उन्हें ना गवार मा'लूम हों। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो उस को बा'दे तौबा उस बुराई से आ़र दिलाना भी इस नह्य (या'नी मुमानअ़त के हुक्म) में दाख़िल और ममनूअ़ है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुवर कहना भी इसी में दाख़िल है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों ममनूअ़ नहीं जैसे कि ह़ज़रते अबू बक्र का लक़ब अ़तीक़ (जहन्नम से आज़ाद) और ह़ज़रते उ़मर का फ़ारूक़ (ह़क़ और बात़िल में फ़र्क़ करने वाला) और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का ज़ुन्नूरैन (दो नूरों वाला) और ह़ज़रते अ़ली का अबू तुराब (मिट्टी वाला) और ह़ज़रते ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तलवार) (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अ़लम (या'नी नाम के मर्तबे में) हो गए और साह़िबे अल्क़ाब को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी ममनूअ़ नहीं जैसे कि आ'मश (कमज़ोर निगाह वाला), आ'रज (लंगड़ा)। ("क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना" के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल लिखते हैं) तो ऐ मुसलमानो ! किसी मुसलमान की हंसी बना कर या उस को ऐ़ब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह, 26, अल ह़ुजुरात, ज़ेरे आयत : 11)

फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी शख़्स को उस के नाम के इ़लावा नाम से बुलाया उस पर फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं। (جمع الجوامع، ۲۳/۷، حدیث: ۲۰۶۱۲)

www.dawateislami.net

या'नी किसी बुरे लक़ब से जो उसे बुरा लगे न कि **ऐ बन्दए ख़ुदा !** वग़ैरा से । (التیسیر بشرح الجامع الصغیر، حرف المیم، ٢/٤١٦)

किसी को बे वुक़ूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से **सुवाल** हुवा : जो शख़्स किसी आ़लिम की निस्बत या किसी दूसरे की लफ़्ज़ मर्दूद कहे या यूं कहे कि वोह "बे वुक़ूफ़" है, कुछ नहीं जानता और "उल्लू" है, तो उस शख़्स की निस्बत शरअ़ शरीफ़ क्या हुक्म देगी ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **जवाब** दिया : बिला वज्हे शरई किसी मुसलमान को ऐसे अल्फ़ाज़ से याद करना मुसलमान को नाह़क़ ईज़ा देना है और मुसलमान की नाह़क़ ईज़ा शरअ़न ह़राम । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ

رَوَاہُ الطَّبَرَانِیُّ فِی الْاَوْسَطِ عَنْ اَنَسٍ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ بِسَنَدٍ حَسَنٍ

जिस ने बिला वज्हे शरई किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी । (المعجم الاوسط، ٢/٣٨٦، حدیث:٣٦٠٧) फिर उ़लमाए दीने मतीन की शान तो निहायत अर्फ़अ़ व आ'ला है उन की जनाब में गुस्ताख़ी करने वाले को ह़दीस में मुनाफ़िक़ फ़रमाया :

ثَلٰثَةٌ لَایَسْتَخِفُّ بِحَقِّهِمْ اِلَّا مُنَافِقٌ ذُوالشَّیْبَةِ فِی الْاِسْلَامِ وَذُوالْعِلْمِ وَاِمَامٌ مُقْسِطٌ

رَوَاہُ الطَّبَرَانِیُّ فِی الْکَبِیْرِ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ وَاَبُوالشَّیْخِ فِی التَّوْبِیْخِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰہ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہم عَنِ النَّبِیِّ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم۔

www.dawateislami.net

या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तीन शख़्स हैं जिन का ह़क़ हल्का न जानेगा मगर मुनाफ़िक़, (एक) इस्लाम में बुढ़ापे वाला (दूसरा) आ़लिम (तीसरा) बादशाहे इस्लाम आ़दिल । ऐसा शख़्स शरअ़न लाइक़े ता'ज़ीर है । (المعجم الكبير، ٨/٢٠٢، حديث:٧٨١٩) وَاللّٰهُ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰى اَعْلَمُ وَعِلْمُهٗ جَلَّ مَجْدُهٗ اَتَمُّ وَاَحْكَم (फ़तावा रज़विय्या, 13 / 644)

महब्बत भरे नाम से पुकारा

बसा औक़ात हमारे मीठे मीठे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان या अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के नामों को मुख़्तसर या तसग़ीर कर के महब्बत भरे अन्दाज़ से पुकारते, इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा फ़रमाएं : ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को या उ़सैम (مسند احمد، ١٠/١٠١، حديث:٢٦١٩٠) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को या उनैस (مسلم، ص١٢٦٤، حديث:٢٣٠٩) और या ज़ुल उज़ुनैन (ऐ दो कानों वाले) (ترمذی، ٣/٣٩٩، حديث:١٩٩٨) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को या जुवैबर (جمع الجوامع، ١٤/٢٠٨، حديث:١٠١٨٩) और या जुबैर (جمع الجوامع، ١٤/٢٠٩، حديث:١٠٢٠٠) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को या कुदैम (ابو داؤد، ٣/١٨٣، حديث:٢٩٣٣) ❁ ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को या आ़इश (بخاری، ٢/٥٥١، حديث:٣٧٦٨) और शुक़ैरा (गहरे भूरे रंग वाली) (جمع الجوامع، ٣/١٣٥، حديث:٧٨٢٣) और हुमैरा (सुर्ख़ रंग वाली) (جمع الجوامع، ٥/٤٤٥، حديث:١٦٣٨٠) और या उ़वैश ! (الطبقات الكبرى لابن سعد، ٨/٦٤، رقم:٤١٢٨) ❁ ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को या ज़ुवैनब (جمع الجوامع، ٥/٤٨٩، حديث:١٦٨٣٥) कह कर पुकारा ।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस अन्दाज़ में पुकारने से उन सह़ाबए किराम और अज़्वाजे मुत़ह्हरात (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का दिल ख़ुश होता था लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्दाज़ पर हम अपने आप को क़ियास नहीं कर सकते। चुनान्चे, हमें इस सिलसिले में बहुत एह़तियात़ की ज़रूरत है कि कहीं वोह नाम जिसे हम मह़ब्बत भरा समझ रहे हों सामने वाले को पसन्द न हो मगर वोह अदब व मुरव्वत की वज्ह से कुछ कहने की हिम्मत न रखता हो और बसा औक़ात हमारा अन्दाज़ दिल आज़ारी का भी सबब बन सकता है लिहाज़ा एह़तियात़ का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये।

हि़कायत : 25 जब "गिलह्री" बड़ी हुई

एक मदनी इस्लामी भाई का बयान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे एक बेटी और बेटे के बा'द एक और मदनी मुन्नी आसिया अ़त्तारिया से नवाज़ा तो दिल की कली खिल उठी, वोह मदनी मुन्नी जब मुस्कुराती तो गिलह्री जैसी दिखाई पड़ती, हम ने प्यार से उसे गिलह्री कहना शुरूअ़ कर दिया वोह भी गिलह्री के नाम पर मुतवज्जेह हो जाती कि मुझे आवाज़ दी गई है, जब उसे दारुल मदीना में दाख़िल करवाया तो अस्ल नाम आसिया से पुकारना शुरूअ़ कर दिया। अब वोह क्लास 3 में है, लेकिन अब कभी उसे (आज़माइशी त़ौर पर) गिलह्री कहा जाए तो वोह बुरा मनाती है और अस्ल नाम से पुकारने का मुत़ालबा करती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾11﴿ रास्तों को तंग कर देना

दुकान का सामान फुटपाथ पर रख कर राहगीरों का रास्ता बन्द कर देना, घर के आगे चबूतरा या गटर या पौदों की क्यारी बना कर गली तंग कर देना, देगें पकाने के लिये गढ़े खोदना, गली में ग़लत् पार्किंग कर के दीगर गाड़ी वालों को परेशान करना एक मुसलमान के शायाने शान नहीं, ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है, मेरे वालिदे गिरामी फ़रमाते हैं कि हम प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जिहाद में गए तो लोगों ने मन्ज़िलें तंग कर दीं और रास्ता रोक लिया। इस पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक आदमी को भेजा कि वोह येह ए'लान करे : बेशक जो मन्ज़िलें तंग करे या रास्ता रोके तो उस का कुछ जिहाद नहीं।

(ابوداؤد،کتاب الجهاد، باب ما یؤمر۔۔۔الخ،۳/۵۸،حدیث:۲۶۲۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان (रास्ता रोक लिया) की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि बा'ज़ लोगों ने रास्ते पर अपना सामान रख दिया जिस से रास्ता बन्द हो गया और गुज़रने वालों को तक्लीफ़ होने लगी और बा'ज़ ने ज़रूरत से ज़ियादा मन्ज़िल पर जगह घेर ली जिस से साथियों पर तंगी हो गई। मा'लूम हुवा कि हर वक़्त सफ़र व ह़ज़र में हर मुसलमान को अपने साथियों के आराम का ख़याल रखना चाहिये। (उस का कुछ जिहाद नहीं)

www.dawateislami.net

के तह़्त मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : या'नी उस जिहाद का पूरा सवाब न मिलेगा । बा'ज़ लोग मस्जिद में गुज़रगाह पर नमाज़ शुरूअ़ कर देते हैं जिस से आने जाने वालों को सख़्त तक्लीफ़ होती है, बा'ज़ ह़ज़रात सफ़ में ज़ियादा जगह घेर कर बैठते हैं उन्हें इस ह़दीस से सबक़ लेना चाहिये, मुसलमानों को तक्लीफ़ से बचाना इबादत का मग़्ज़ है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 498)

ह़िकायत : 26 बन्द नालियां खोलने के लिये पथ्थर उखड़वा दिये

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا तशरीफ़ लाए तो अह्ले मक्का ने आप से फ़रियाद की, कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमारे घरों की नालियों को बन्द कर दिया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन लोगों के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और फ़रमाया : इस पथ्थर को उखाड़ो ! उन्हों ने उखाड़ दिया । फिर फ़रमाया : इसे भी उखाड़ो ! उन्हों ने उखाड़ दिया । आप फ़रमाते रहे वोह उखाड़ते रहे यहां तक कि कई पथ्थर उखाड़ डाले ।

(کنز العمال،کتاب الفضائل،باب فضائل الصحابة،جزء۱۲،۶ / ۲۹۶ ، رقم : ۳۶۰۱۲ ملخصاً)

मुसलमां रात भर सोएं उ़मर फ़ारूक़ पहरा दें

रिआ़या के निगहबां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

(दीवाने सालिक, स. 28)

www.dawateislami.net

हिकायत : 27

हुक़ूक़े आ़म्मा का एह़सास

हुक़ूक़े आ़म्मा का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है, हमारे अस्लाफ़ इस बारे में बेह़द मोह़तात़ हुवा करते थे चुनान्चे, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास (ह़ुसूले इल्म के लिये) कई साल तक आता जाता रहा, इस के बा'द आप ने उस से ए'राज़ (या'नी पहलू तही, बे तवज्जोगी) फ़रमा कर कलाम करना तर्क कर दिया। वोह आप से मुसलसल इस तब्दीली का सबब पूछता लेकिन आप जवाब न देते, आख़िर कार आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : मुझे ख़बर मिली है कि तुम ने सड़क की जानिब से अपनी दीवार को लिपा है और सड़क के किनारे से क़दे आदम के बराबर मिट्टी ली है ह़ालांकि वोह मुसलमानों की आ़म गुज़रगाह है इस लिये तुम इल्म मुन्तक़िल किये जाने के क़ाबिल नहीं हो। (احیاء علوم الدین، ۹۶/۵)

मुसलमानों के रास्ते से तक्लीफ़देह चीज़ को हटाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मुझे ऐसी चीज़ की ता'लीम दीजिये कि मैं उस से नफ़्अ़ पाऊं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِعْزِلِ الْاَذٰی عَنْ طَرِیْقِ الْمُسْلِمِیْن या'नी मुसलमानों के रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाओ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، ۳۶۲/۱، حدیث:۱۹۰۶)

www.dawateislami.net

शैखुल ह़दीस वत्तफ़्सीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : हर वोह तक्लीफ़ देह चीज़ मसलन कांटा, शीशा, ठोकर की चीज़ें जिस से चलने वालों को ईज़ा पहुंचने का अन्देशा हो उस को रास्तों से हटा देना बहुत मा'मूली काम है लेकिन येह अ़मल **अल्लाह** तआ़ला को इस क़दर पसन्द है कि वोह इस की जज़ा में अपने फ़ज़्लो करम से जन्नत अ़त़ा फ़रमा देता है। आज कल के मुसलमान इस अ़मले सालेह़ की अ़ज़मत और इस के अज्रो सवाब से बिल्कुल ही ग़ाफ़िल हैं बल्कि उलटे रास्तों में तक्लीफ़ की चीज़ें डाल दिया करते हैं। मसलन आ़म तौ़र पर लोग केला खा कर उस का छिलका रेलवे स्टेशन के प्लेट फ़ॉर्म पर फेंक दिया करते हैं। गाड़ी आने पर मुसाफ़िर बद ह़वास हो कर ट्रेन में चढ़ने के लिये दौड़ते और केले के छिलकों पर पाउं पड़ जाने से फिसल कर गिर जाते हैं और बा'ज़ शदीद ज़ख़्मी हो जाते हैं, इसी त़रह़ हड्डियां और शीशे के टुकड़े आ़म तौ़र पर लोग रास्तों में डाल दिया करते हैं। इन ह़रकतों से मुसलमान को बचना चाहिये बल्कि रास्तों में कोई तक्लीफ़ देह चीज़ अगर नज़र पड़ जाए तो उस को रास्तों से हटा देना चाहिये اِن شاءَ اللّٰه تعالٰی अगर येह अ़मल मक़्बूल हो गया तो जन्नत मिलेगी। واللّٰه تعالٰی اَعْلَم (बिहिश्त की कुन्जियां, स. 209)

आ़म रास्ते की त़रफ़ बैतुल ख़ला या परनाला बनाना

बहारे शरीअ़त में है : आ़म रास्ते की त़रफ़ बैतुल ख़ला या परनाला या बुरुज या शहतीर या दुकान वग़ैरा निकालना जाइज़ है बशर्ते कि इस से अ़वाम को कोई ज़रर न हो और गुज़रने वालों में से कोई मानेअ़ न हो और अगर किसी को कोई तक्लीफ़ हो या कोई मो'तरिज़ हो तो नाजाइज़ है।

(بحوالہ ردالمحتار،کتاب الدّیات،باب مایحدثہ الرجل...إلخ، ۱۰/۲۶۵ बहारे शरीअ़त, 3 / 871)

www.dawateislami.net

रास्ते पर ख़रीदो फ़रोख़्त करने के तीन मसाइल

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : जो शख़्स रास्ते पर ख़रीदो फ़रोख़्त करता है अगर रास्ता कुशादा है कि उस के बैठने से राहगीरों पर तंगी नहीं होती तो ह़रज नहीं और अगर गुज़रने वालों को उस की वज्ह से तक्लीफ़ हो जाए तो उस से सौदा ख़रीदना न चाहिये कि गुनाह पर मदद देना है क्यूंकि जब कोई ख़रीदेगा नहीं तो वोह बैठेगा क्यूं !

(الفتاوى الهندية، كتاب البيوع، الباب العشرون فى البياعات المكروهة ...إلخ، ٢١٠/٣) (बहारे शरीअ़त, 2 / 726)

मस्अला : आ़म रास्ते पर ख़रीदो फ़रोख़्त के लिये बैठना जाइज़ है जब कि किसी के लिये तक्लीफ़ देह न हो और अगर किसी को तक्लीफ़ दे तो वोह नाजाइज़ है। (ردالمحتار، كتاب الدّيات، باب مايحدثه الرجل ...إلخ، ١٠/٢٦٧) (बहारे शरीअ़त, 3 / 871)

मस्अला : शारेए़ आ़म के किनारे बैठ कर ख़रीदो फ़रोख़्त अगर किसी चीज़ को ज़रर न दे और हुकूमत की इजाज़त से हो तो जाइज़ है और अगर मुज़िर हो तो नाजाइज़ है।

(ردالمحتار، كتاب الدّيات، باب مايحدثه الرجل ...إلخ، ١٠/٢٦٧) (बहारे शरीअ़त, 3 / 877)

रास्ते पर किसी को तक्लीफ़ न दो !

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : रास्तों पर बैठने से बचो ! लोगों

ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम को वहां बैठने के सिवा चारह नहीं, हम वहां बात-चीत करते हैं। फ़रमाया : अगर बिग़ैर बैठे न मानो तो रास्ते को इस का ह़क़ दो ! उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रास्ते का क्या ह़क़ है ? फ़रमाया : निगाह नीचे रखना, तक्लीफ़ देह चीज़ हटाना, सलाम का जवाब देना, अच्छाइयों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना।

(بخاری، کتاب الاستئذان، باب بدء السلام، ٤/ ١٦٥، حدیث: ٦٢٢٩)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : रास्ते से औ़रतें बच्चे गुज़रते रहते हैं, नीज़ वहां से लोगों के माल सुवारियां गुज़रती हैं, इस लिये वहां बैठना ख़त़रनाक बद नज़री का अन्देशा है। मज़ीद फ़रमाते हैं : रास्तों पर बैठ कर येह पांच नेकियां या इन में से जिस क़दर बन पड़ें किया करो ! निगाहें नीची रखो ताकि अजनबी औ़रतों पर न पड़ें, रास्ते से कांटा, ईंट, पथ्थर अलग कर दिया करो ताकि किसी राहगीर को न चुभे न ठोकर लगे, जो रास्ता गुज़रने वाला तुम्हें सलाम करता हुवा गुज़रे उस का जवाब दो, अगर तुम रास्ते में किसी को कोई बुरा काम करते देखो तो उस से रोको, उस की इवज़ उसे अच्छा काम करने का मश्वरा दो, इस सूरत में तुम्हारा वहां बैठना भी इबादत है। سُبْحٰنَ اللهِ ! कीमिया पीतल-तांबे को सोना कर देती है, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'लीम गुनाहों को सवाब बना देती है। (मिरआतुल मनाजीह, 6 / 322)

www.dawateislami.net

हिकायत : 28 खेती के मालिक की शिकायत

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर शिकायत की : मैं ने खेती काश्त की थी कि अह्ले शाम का लश्कर वहां से गुज़रा और उसे ख़राब कर दिया। आप ने इस के बदले उसे दस हज़ार दिरहम दिये।

(سیرت ابن جوزی، ص۹۷)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इसी नोइ़यत की एक ह़िकायत के बा'द लिखते हैं : उन लोगों को दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो लोगों की दीवारों और सीढ़ियों के कोनों वग़ैरा को पीक (या'नी पान के रंगीन थूक) की पिचकारियों से बदनुमा कर देते हैं, इसी त़रह़ बिग़ैर इजाज़ते मालिक, मकानों और दुकानों की दीवारों और दरवाज़ों नीज़ साइन बोर्डज़ और गाड़ियों, बसों वग़ैरा के बाहर या अन्दर स्टीकर्ज़ और पोस्टर लगाने वाले, दीवारों पर मालिक की इजाज़त के बिग़ैर "चॉकिंग" करने वाले भी दर्स ह़ासिल करें कि इस त़रह़ करने से लोगों के हुक़ूक़ पामाल होते हैं। बेशक हुक़ूक़ुल्लाह ही अ़ज़ीम तर हैं मगर तौबा के तअ़ल्लुक़ से हुक़ूक़ुल इ़बाद का मुआ़मला हुक़ूक़ुल्लाह से सख़्त तर है, दुन्या में जिस किसी का ह़क़ ज़ाएअ़ किया हो अगर उस से मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब दुन्या ही में न बनी होगी तो क़ियामत के रोज़ उस साह़िबे ह़क़ को नेकियां देनी पड़ेंगी और अगर इस त़रह़ भी ह़क़ अदा न हुवा तो उस के गुनाह अपने सर लेने होंगे। मसलन जिस ने बिला उ़ज़्रे शरई किसी को झाड़ा होगा, घूर कर या किसी भी त़रह़ डराया होगा, दिल दुखाया होगा किसी को मारा होगा, किसी के पैसे दबा लिये होंगे, पीक, पोस्टर या चॉकिंग वग़ैरा के ज़रीए

www.dawateislami.net

किसी की दीवार ख़राब की होगी, किसी की दुकान या मकान के आगे जगह घेर कर उस के लिये नाह़क़ परेशानी का सामान किया होगा, किसी की इ़मारत से क़रीब ग़ैर वाजिबी तौ़र पर ज़बरदस्ती अपनी इ़मारत बना कर उस की हवा और रोशनी में रुकावट खड़ी की होगी, किसी की स्कूटर या कार वग़ैरा को अपनी गाड़ी से डेन्ट डाल कर या ख़राश लगा कर राहे फ़िरार इख़्तियार की होगी, या भाग न सकने की सूरत में अपना क़ुसूर होने के बा वुजूद अपनी चर्ब ज़बानी या रो'ब दाब से उसी को मुजरिम बावर करा कर उस की ह़क़ तलफ़ी की होगी, ई़दे क़ुरबां वग़ैरा के मौक़अ़ पर साह़िबे मकान की रिज़ामन्दी के बिग़ैर उस के घर के आगे जानवर बांध कर या ज़ब्ह़ कर के उस की दीवार या घर से निकलने का रास्ता गोबर, ख़ून और कीचड़ वग़ैरा से आलूदा कर के उस के लिये ईज़ा का सामान किया होगा, किसी के मकान या दुकान के पास या उस की छत या प्लॉट पर परेशान कुन गन्द कचरा फेंका होगा, अल ग़रज़ लोगों के ह़ुक़ूक़ पामाल करने वाला अगर्चे नमाज़ें, ह़ज, उ़मरे, ख़ैरातें और बड़ी बड़ी नेकियां लेकर गया होगा, मगर बरोज़े क़ियामत उस की इ़बादतें वोह लोग ले जाएंगे जिन को नाह़क़ नुक़्सान पहुंचाया होगा या बिला इजाज़ते शरई किसी त़रह़ से उन की दिल आज़ारी का बाइ़स बना होगा। नेकियां देने के बा वुजूद ह़ुक़ूक़ बाक़ी रहने की सूरत में उन के गुनाह इस "नेक नमाज़ी" के सर थोप दिये जाएंगे और यूं दूसरों की ह़क़ तलफ़ी करने के सबब ह़ाजी, नमाज़ी, रोज़ादार और तहज्जुद गुज़ार होने के बा वुजूद वोह जहन्नम में जा पड़ेगा। وَالْعِيَاذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی (और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह) हां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के लिये चाहेगा मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से सुल्ह़ कराएगा। मज़ीद तफ़्सीलात के

www.dawateislami.net

लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला "**ज़ुल्म का अन्जाम**" मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

(माख़ूज़ अज़ "अश्कों की बरसात", स. 16)

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है

नातुवां के सर पर इतना बोझ भारी वाह वाह

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 134)

हिकायत : 29

२२सी खुलवा दी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه 12 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1430 हिजरी को अपने बड़े शहज़ादे अलह़ाज अबू उसैद **उ़बैद रज़ा** अ़त्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के यहां क़ियाम पज़ीर थे, ऊंट की क़ुरबानी होने का वक़्त क़रीब था, किसी ने बाहर गली में आने जाने की दुश्वारी के बाइ़स **रस्सी** से गली का रास्ता कुछ देर के लिये रोक दिया। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़ौरन "मदनी पेड" पर कुछ यूं तह़रीर फ़रमाया : "रास्ता बन्द कर दिया गया है, हुक़ूक़े आ़म्मा का लिह़ाज़ रहे इस लिये **रस्सी** खुलवा दी जाए।" तह़रीर नीचे मौजूद मुतअ़ल्लिक़ा इस्लामी भाइयों तक पहुंचा दी गई और यूं फ़ौरी तौ़र पर रास्ता खुलवा दिया गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿12﴾ वुरसा को तक्लीफ़ न दीजिये

अपना सारा माल किसी एक या चन्द वारिसों को दे कर बिला वज्हे शरई बक़िय्या को महरूम कर देना ममनूअ़ है, चुनान्चे, ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है : फ़त्हे मक्का के साल मैं ऐसा बीमार हुवा कि मौत के क़रीब हो गया। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी इयादत के लिये तशरीफ़ लाए तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे पास माल बहुत है और मेरी बेटी के सिवा कोई वारिस नहीं, क्या मैं अपने कुल माल की वसिय्यत कर जाऊं ? सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नहीं। मैं ने अ़र्ज़ की : दो तिहाई माल की ? फ़रमाया : नहीं। मैं ने अ़र्ज़ की : आधे की ? फ़रमाया : नहीं, मैं ने अ़र्ज़ की : तिहाई की ? फ़रमाया : तिहाई की करो और तिहाई भी ज़ियादा है। तुम अपने वारिसों को ग़नी बना कर छोड़ो तो येह उस से अच्छा है कि तुम उन्हें फ़क़ीर कर के जाओ कि लोगों से मांगते फिरें। तुम कोई ख़र्चा ऐसा न करोगे जिस से **अल्लाह** की रिज़ा चाहो मगर तुम्हें इस पर सवाब दिया जाएगा ह़त्ता कि उस निवाले पर भी जो तुम अपनी बीवी को खिलाओ।

(مشکوٰۃ،کتاب الفرائض،باب الوصایا،۱/۵۶۶،حدیث:۳۰۷۱)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि मरने वाला मरते वक़्त सिर्फ़ तिहाई की वसिय्यत कर सकता है ज़ियादा की नहीं और अगर ज़ियादा की कर भी गया तो जारी न होगी, येह भी मा'लूम हुवा कि तिहाई से भी कम की वसिय्यत करना बेहतर है कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने तिहाई को भी ज़ियादा फ़रमाया। येह भी मा'लूम हो रहा है कि अपने अ़ज़ीज़ों से सुलूक करना ग़ैरों से सुलूक करने से अफ़्ज़ल है कि वसिय्यत में ग़ैरों से सुलूक है मीरास में अपनों से

www.dawateislami.net

सुलूक। (ह़दीसे पाक के आख़िरी जुम्ले की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं :) या'नी तुम वसिय्यत क्यूं करते हो ? हुसूले सवाब के लिये, और मीरास जो वारिसों को पहुंचेगी अगर उस में तुम रिज़ाए इलाही (की) निय्यत कर लो कि अपने अ़ज़ीज़ों को अपना माल पहुंचना रब तआ़ला की रिज़ा का ज़रीआ़ है तब भी तुम को सवाब मिलेगा बल्कि ज़ियादा मिलेगा, लिहाज़ा वसिय्यत तिहाई से भी कम की करो। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 382)

बहारे शरीअ़त में है : शरीअ़त ने मुतवफ़्फ़ा (या'नी मरने वाले) को वुरसा की मौजूदगी में अपने तमाम माल की वसिय्यत करने की इजाज़त नहीं दी कि इस से वारिसों को ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचता है, और इन का ह़क़ ज़ाएअ़ होता है। (बहारे शरीअ़त, 3 / 930)

साठ साल इबादत के बावुजूद दोज़ख़ का फ़ैसला

सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मर्द व औ़रत साठ साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करते रहें फिर उन का वक़्ते मौत क़रीब आ जाए और वसिय्यत में ज़रर पहुंचाएं तो उन के लिये दोज़ख़ की आग वाजिब होती है।

(ترمذی،کتاب الوصایا،باب ما جاء فی الضرار فی الوصیة، ٤/ ٤١، حدیث: ٢١٢٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : यहां साठ साल से मुराद बड़ी मुद्दत है ख़्वाह इस से ज़ियादा हो या कम। मौत आने से मुराद मौत के अ़लामात नुमूदार होना हैं वरना ख़ास मौत आ जाने पर बोलना मुश्किल हो जाता है, वसिय्यत करना या वसिय्यत में नुक़्सान पहुंचाना कैसा ? (मुफ़्ती

www.dawateislami.net

साहिब मज़ीद लिखते हैं :) वसिय्यत में नुक़्सान पहुंचाने की चन्द सूरतें हैं। एक येह कि अपने वारिसों को नुक़्सान पहुंचाने की निय्यत से वसिय्यत कर जाए कि तिहाई माल वसिय्यत में निकल जाए तो वारिसों के हिस्से कम हो जाएं। दूसरे येह कि नालाइक़ और बुरे लोगों को वसिय्यत कर जाए, अपना तिहाई माल किसी बद मुआ़श को दे जाए ताकि वोह वारिसों के साथ रह कर उन्हें तंग करे। तीसरे येह कि पहले वसिय्यत की थी फिर मरते वक़्त वसिय्यत से रुजूअ़ करे या उस में कुछ तरमीम करे ताकि वसिय्यत वाले को नुक़्सान हो "उन के लिये दोज़ख़ की आग वाजिब होती है" के तह़्त मुफ़्ती साहिब लिखते हैं : या'नी वोह दोज़ख़ का मुस्तह़िक़ हो जाता है, रहा दोज़ख़ में जाना येह रब तआ़ला की मर्ज़ी पर है यहां वुजूब इस्तिह़्क़ाक़ का है न कि दुख़ूल का। (मिरक़ात) (मिरआतुल मनाजीह, 4 / 384)

मुजरिमों के वासिते दोज़ख़ भी शो'लाबार है
हर गुनह क़स्दन किया है इस का भी इक़रार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 478)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿13﴾ औलाद से यक्सां सुलूक न रखना

जीते जी भी औलाद के दरमियान अ़द्लो इन्साफ़ करना चाहिये, कुछ को देना और कुछ को मह़रूम रखना न सिर्फ़ बाइ़से तक्लीफ़ बन सकता है बल्कि इस के सबब बुग़्ज़ो कीना और ग़ीबत व तोहमत वग़ैरा गुनाहों के दरवाज़े खुलने का भी अन्देशा है। मुअ़ल्लिमे अख़्लाक़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें औलाद में से हर एक के साथ मुसावी सुलूक

www.dawateislami.net

करने की ताकीद फ़रमाई है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि मेरे वालिद मुझे उठा कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप इस बात पर गवाह हो जाएं कि मैं ने अपने बेटे नो'मान को अपने माल में से फुलां फुलां चीज़ दी। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम ने अपने हर बेटे को उतना दिया है जितना नो'मान को दिया है ? मेरे वालिद ने अ़र्ज़ की : नहीं। इरशाद फ़रमाया : फिर इस पर मेरे इ़लावा किसी और को गवाह बनाओ। मज़ीद इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम्हें येह बात पसन्द है कि तुम्हारे साथ नेकी करने में तुम्हारी सब औलाद बराबर हो ? मेरे वालिद ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! इरशाद फ़रमाया : तो फिर ऐसा मत करो।

(مسلم،کتاب الھبات،باب کراھۃ تفضیل...الخ،ص۸۷۹،حدیث:۱۶۲۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ईसा मुह़म्मद बिन ईसा तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बा'ज़ अह्ले इ़ल्म का अ़मल इस ह़दीसे पाक पर है और वोह (तोह़्फ़ा देने में) औलाद के दरमियान बराबरी को पसन्द करते हैं यहां तक कि एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : औलाद के दरमियान बराबरी करे यहां तक कि बोसा देने में भी।

(ترمذی،کتاب الاحکام، باب ما جاء فی النحل...الخ،۳/۸۲،حدیث:۱۳۷۲)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि औलाद को बराबर अ़त़िय्ये दे, बा'ज़ को बा'ज़ पर तरजीह़ न दे कि किसी

www.dawateislami.net

को कुछ न दे या किसी को ज़ियादा दे। बा'ज़ उ़लमा फ़रमाते हैं कि ज़िन्दगी में लड़की लड़के को बराबर दे, लड़के का दो गुना हिस्सा मीरास में है न कि अ़तिय्या में, बा'ज़ ने फ़रमाया कि ज़िन्दगी में भी लड़के को दो गुना दे और लड़की को एक हिस्सा। (درمختار، شامی، وغیرہ) बा'ज़ बुज़ुर्ग लड़कियों को दो गुना देते हैं कहते हैं कि लड़कियां मां बाप के घर मेहमान हैं, लड़के मुक़ीम। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 353)

हिकायत : 30 मैं ज़ुल्म पर गवाह नहीं बनता

बा'ज़ रिवायात में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे नो'मान को एक ग़ुलाम दिया तो उन की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना अ़म्रह बिन्ते रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि मैं इस पर राज़ी नहीं जब तक कि आप इस बात पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गवाह न बना लें। जब वोह इस मक़्सद के लिये बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम ने अपने सारे बच्चों को इसी त़रह़ दिया है? अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : **अल्लाह** से डरो और अपनी औलाद में इन्साफ़ करो, नीज़ एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : मैं ज़ुल्म पर गवाह नहीं होता। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने तोह़्फ़े से रुजूअ़ कर लिया।

(مشکوٰۃ، کتاب البیوع، باب: ۱۷/۱، ۵۵۶، حدیث: ۳۰۱۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان तह़रीर फ़रमाते हैं : इस ह़दीस की बिना पर उ़लमा फ़रमाते हैं कि बाप अपनी ज़िन्दगी में बेटा बेटी सारी औलाद में बराबरी करे, बेटे के

www.dawateislami.net

लिये दो गुना हिस्सा बा'दे वफ़ात है, हत्ता कि प्यार महब्बत बल्कि चूमने में भी बराबरी करे। (मिरक़ात) अगर्चे क़ुदरती तौर पर छोटे बच्चे से ज़ियादा महब्बत होती है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़ातिमा ज़हरा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) बहुत प्यारी थीं कि सब से छोटी थीं। (मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं:) ख़याल रहे कि मुत्तक़ी बेटे को फ़ासिक़ बेटे से ज़ियादा देना या ग़रीब मा'ज़ूर बे दस्तो पा औलाद को दूसरी अमीर औलाद से कुछ ज़ियादा देना बिला कराहत दुरुस्त है। (मिरआतुल मनाजीह, 4 / 354)

या रब बचा ले तू मुझे नारे जहीम से

औलाद पर भी बल्कि जहन्नम हराम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 310)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿ बच्चों को तक्लीफ़ न दीजिये

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: तुम अपने बच्चों को दबाने से तक्लीफ़ न दो गले आ जाने में तुम क़ुस्त इख़्तियार करो। (بخاری،کتاب الطب،باب الحجامة من الداء،٤/٢١، حدیث: ٥٦٩٦)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं: कभी बच्चों के हल्क़ में गिल्टियां निकल आती हैं इस के इलाज के लिये औरतें अपनी उंगली में दवा लगा कर हल्क़ में उंगली डाल कर दबाती हैं जिस से बच्चों को बहुत तक्लीफ़ होती है, ख़ून जारी हो जाता है, मैं भी बचपन में येह मुसीबत भुगत चुका हूं, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इस से मन्अ़ फ़रमाया।

www.dawateislami.net

"कुस्त इख़्तियार करो" की वज़ाहत में मुफ़्ती साहिब लिखते हैं : यानी कुस्ते बहरी को पानी में हल कर के मरीज़ के नाक में टपका दो कि दिमाग़ व हल्क़ में पहुंच जाए। इस इलाज से अतिब्बा हैरान हैं क्यूंकि गले की गिल्टियां जिसे गले आना कहा जाता है गर्मी से होती हैं और कुस्ते बहरी भी गर्म है तो गर्म को गर्म कैसे दफ़्अ कर सकता है मगर अक्सर गले की गिल्टियां उस ख़ून से पैदा होती हैं जिस पर बलग़म ग़ालिब हो और कुस्ते बहरी बलग़म छांटने में इक्सीर है, लिहाज़ा इस से इलाज मुफ़ीद है।

(मिरआतुल मनाजीह, 6 / 219)

लड़के के ख़त्ने में भी ख़याल रखिये

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي लिखते हैं बच्चा पैदा ही ऐसा हुवा कि ख़तना में जो खाल काटी जाती है वोह उस में नहीं है तो ख़तना की हाजत नहीं और अगर कुछ खाल है जिस को खींचा जा सकता है मगर उसे सख़्त तक्लीफ़ होगी और हश्फ़ा (सुपारी) ज़ाहिर है तो हजामों को दिखाया जाए, अगर वोह कह दें कि नहीं हो सकती तो छोड़ दिया जाए, बच्चे को ख़्वाह म ख़्वाह तक्लीफ़ न दी जाए।

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب التاسع عشر فى الختان، ٥/٣٥٧) (बहारे शरीअत, 3 / 589)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿15﴾ दा'वते वलीमा वग़ैरा में ग़रीबों का ख़याल न रखना

दा'वते वलीमा में अमीरों को बुलाना ग़रीबों को नज़र अन्दाज़ कर देना उन की दिल शिकनी का सबब बन सकता है चुनान्चे, आ'ला हज़रत,

www.dawateislami.net

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : ज़िन्हार, ज़िन्हार (या'नी ख़बरदार, हरगिज़) ऐसा न करें कि खाते पीतों को बुलाएं, मोह़ताजों को छोड़ें कि ज़ियादा मुस्तह़िक़ वोही हैं और उन्हें इस की ह़ाजत है तो उन का छोड़ना उन्हें ईज़ा देना और दिल दुखाना है, मुसलमानों की दिल शिकनी مَعَاذَاللہ वोह बलाए अ़ज़ीम है कि सारे अ़मल को ख़ाक कर देगी, ऐसे खाने को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से बदतर खाना फ़रमाया कि पेट भरे बुलाए जाएं जिन्हें परवाह नहीं और भूके छोड़ दिये जाएं जो आना चाहते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 23 / 158)

बद तरीन खाना

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : बद तरीन खाना उस दा'वते वलीमा का खाना है कि जो इस में आना चाहता है उसे रोक दिया जाता है और जो नहीं आना चाहता उसे बुलाया जाता है। (مسلم،کتاب النکاح،باب الأمر بإجابة الداعي...الخ،ص ۷۵۰،حدیث: ۱۱۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : वलीमे के खाने को बद तरीन अक्सर लोगों की ह़ालत देख कर फ़रमाया है कि वोह दा'वते वलीमा पर मालदारों को तो बुला लेते हैं मगर मोह़ताजों को कोई नहीं बुलाता। मज़ीद फ़रमाते हैं : वलीमे का खाना मुत़लक़न बद तरीन नहीं है, क्यूंकि वलीमा करने और लोगों को बुलाने का

www.dawateislami.net

तो हुक्म है, बद तरीन फ़रमाने की वज्ह वोह है जो आख़िर में बयान हुई (या'नी मालदारों को बुलाना मोहताजों को न बुलाना) ।

(فیض القدیر ، حرف الشین ، ٤/ ٢٠٩ ، تحت الحدیث : ٤٨٧٢)

हिकायत : 31 कपड़ों को खाना खिला रहा हूं

बा'ज़ जगह तो बा क़ाइदा हारिसीन (पहरेदार) खड़े किये जाते हैं जो आने वाले मेहमानों पर नज़र रखते हैं लेकिन उन की तवज्जोह भी उ़मूमन ग़रीब, सादा और पुराने कपड़ों में मल्बूस अफ़राद पर होती है, चुनान्चे, वोह उन्ही से पूछा पाछी करते हैं और वलीमे की दा'वत का कार्ड त़लब करते हैं अगर बे चारा भूले से घर छोड़ आया हो तो उसे अपनी इ़ज़्ज़त बचाना मुश्किल हो जाता है, इस बात को एक फ़र्ज़ी मगर सबक़ आमोज़ हिकायत से समझिये, चुनान्चे, एक शख़्स किसी दा'वत में सादा और पुराने कपड़ों में ही चला गया तो दरबानों ने उसे अन्दर दाख़िल नहीं होने दिया, वोह वापस आया और आ़लीशान लिबास पहन कर जाहो ह़शम के साथ दोबारा दा'वत में पहुंचा, दरबान उसे पहचान न सके और इ़ज़्ज़तो तकरीम के साथ पिन्डाल में पहुंचा दिया, जब खाना शुरूअ़ हुवा तो सब लोग अपने मन पसन्द खानों के निवाले मुंह में डालने लगे लेकिन उस शख़्स ने एक प्लेट में खाना डाला और अपने कपड़ों का सिरा पकड़ कर प्लेट में डुबोने लगा, मेज़बान ह़ैरत के साथ उस की त़रफ़ लपका और पूछा : जनाब ! येह आप क्या कर रहे हैं ? खाना खाइये ! उस शख़्स ने जवाब दिया कि अस्ल में दा'वत मेरी नहीं इन कपड़ों की है क्यूंकि मैं सादा कपड़ों में आया तो अन्दर नहीं घुसने दिया गया, जब इस लिबास में आया तो

www.dawateislami.net

बड़ी आव भगत हुई, इस लिये इन्ही कपड़ों को खाना खिला रहा हूं, मेज़बान येह सुन कर शर्मिन्दा हुवा और उस से मा'ज़िरत की।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿16﴾ ज़ख़ीरा अन्दोज़ी न कीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

مَنِ احْتَكَرَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ طَعَامًا ضَرَبَهُ اللّٰهُ بِالْجُذَامِ وَالْإِفْلَاسِ

या'नी जो मुसलमानों पर उन की रोज़ी (ग़ल्ला) रोके **अल्लाह** उसे कोढ़ और मुफ़्लिसी में मारे। (ابن ماجه،كتاب التجارات،باب الحكرة والجلب،٣/١٤،حديث:٢١٥٥)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : उन की रोज़ी फ़रमाने में इशारतन फ़रमाया कि इह़तिकार मुत़लक़न ममनूअ़ है मगर मुसलमानों पर इह़तिकार ज़ियादा बुरा कि मुसलमान को तक्लीफ़ देना दूसरों को तक्लीफ़ देने से बदतर है। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 290)

इह़तिकार क्या है ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से सुवाल हुवा कि ग़ल्ले को रोक कर बेचना जाइज़ है या नहीं ? तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : ग़ल्ले को इस नज़र से रोकना कि गिरानी (या'नी महंगाई) के वक़्त बेचेंगे बशर्ते कि उसी जगह या उस के क़रीब से ख़रीदा और इस का न बेचना लोगों को मुज़िर (नुक़्सान देह) हो मकरूह व ममनूअ़ है, और अगर ग़ल्ला दूर से

www.dawateislami.net

ख़रीद कर लाए और ब इन्तिज़ारे गिरानी न बेचे या न बेचना इस का ख़ल्क़ को मुज़िर (या'नी लोगों को नुक़्सान देह) न हो तो कुछ मुज़ाइक़ा नहीं।

(फ़तावा रज़विय्या, 17 / 189)

एक और मक़ाम पर आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : हराम येह है कि बस्ती में आने वाला ग़ल्ला ख़ुद ख़रीद ले और बन्द रखे कि जितना महंगा चाहे बेचे जिस से बस्ती पर तंगी हो जाए और मकरूह येह है कि इस के ख़रीदने से बस्ती पर तंगी तो न हो मगर इसे आरज़ू हो कि क़हूत़ पड़े कि मुझे नफ़्अ़ बहुत मिले, और जब इन दोनों बातों से पाक है जैसा सूरते सुवाल में है तो अस्लन कराहत भी नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 17 / 192)

इह़तिकार सिर्फ़ ग़ल्ले में होता है

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : इह़तिकार या'नी ग़ल्ला रोकना मन्अ़ है और सख़्त गुनाह है और इस की सूरत येह है कि गिरानी के ज़माने में ग़ल्ला ख़रीद ले और उसे बैअ़ न करे बल्कि रोक रखे कि लोग जब ख़ूब परेशान होंगे तो ख़ूब गिरां (महंगा) कर के बैअ़ करूंगा और अगर येह सूरत न हो बल्कि फ़स्ल में ग़ल्ला ख़रीदता है और रख छोड़ता है कुछ दिनों के बा'द जब गिरां हो जाता है बेचता है येह न इह़तिकार है न इस की मुमानअ़त। ग़ल्ले के इ़लावा दूसरी चीज़ों में इह़तिकार नहीं।

(बहारे शरीअ़त, 2 / 725)

मुसलमानों की तक्लीफ़ पर ख़ुश होने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का बयान है कि मैं ने सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना :

www.dawateislami.net

ग़ल्ला रोकने वाला बन्दा बहुत बुरा है कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भाव सस्ते करे तो रन्जीदा हो और अगर महंगा करे तो ख़ुश।

(شعب الایمان، باب فی ان یحب المسلم...الخ، فصل فی ترک الاحتکار، ۷/۵۲۵، حدیث:۱۱۲۱۵)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि मुसलमानों की तक्लीफ़ पर ख़ुश होना और इन की ख़ुशी पर नाराज़ होना ला'नती आदमियों का काम है, ख़ुशी व ग़म में मुसलमानों के साथ रहना चाहिये। ग़ल्ले के नाजाइज़ ब्योपारियों का आ़म ह़ाल येह ही है कि अरज़ानी सुन कर इन का दिल बैठ जाता है, गिरानी (महंगाई) के लिये नाजाइज़ अ़मल करते हैं, उलटे वज़ीफ़े पढ़ते हैं, लोगों से क़ह़त़ की दुआ़एं कराते हैं, نَعُوْذُ بِاللّٰه वक़्त पर बारिश हो तो उन के घर सफ़े मातम बिछ जाती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 290)

ह़िकायत : 32 ग़ल्ला महंगा होने का इन्तिज़ार करने वाले की तफ़्हीम

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है कि वोह वासित़ के मक़ाम पर थे। उन्हों ने गन्दुम से भरी एक कश्ती बसरा शहर की त़रफ़ भेजी और अपने वकील को लिखा : जिस दिन येह खाना बसरा पहुंचे उसी दिन इसे बेच देना और अगले दिन तक मुअख़्ख़र न करना। इत्तिफ़ाक़न वहां पर भाव (Rate) कम था तो ताजिरों ने उन के वकील को मश्वरा दिया कि अगर आप इसे जुमुआ़ के दिन तक मुअख़्ख़र करें तो इस में दुगना

www.dawateislami.net

नफ़्अ़ होगा। चुनान्चे, उस ने जुमुआ़ तक गन्दुम फ़रोख़्त नहीं की फिर जब बेची तो उस में कई गुना फ़ाएदा हुवा। वकील ने येह वाक़िआ़ मालिक को लिख कर भेजा तो उन्हों ने वकील को ख़त़ लिखा कि ऐ फ़ुलां ! हम अपने दीन की सलामती के साथ थोड़े नफ़्ए़ पर ही क़नाअ़त कर लिया करते हैं मगर तुम ने इस के ख़िलाफ़ किया, हमें येह पसन्द नहीं है कि हमें इस से कई गुना नफ़्अ़ हो लेकिन इस के बदले हमारे दीन में से कोई शै चली जाए। तुम ने हम पर एक जुर्म लागू कर दिया है, लिहाज़ा जब तुम्हारे पास मेरा येह ख़त़ पहुंचे तो तमाम माल ले कर बसरा के फ़ुक़रा पर सदक़ा कर देना शायद कि मैं ज़ख़ीरा अन्दोज़ी के गुनाह से बराबर बराबर नजात पा सकूं कि न तो मेरा नुक़्सान हो और न ही फ़ाएदा।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الکسب،الباب الثالث،۲/۹۳)

हिकायत : 33 जितने का ख़रीदा है उसी में बेच दो

इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने कभी किसी बेचने वाले की ग़फ़्लत और ला इ़ल्मी से फ़ाएदा नहीं उठाया, बल्कि आप उन की भलाई के लिये उन की बेहतरीन राहनुमाई फ़रमाते थे। आप अपने अह़बाब से या किसी ग़रीब ख़रीदार से नफ़्अ़ भी नहीं लिया करते थे बल्कि अपने नफ़्अ़ में से भी उस को दे दिया करते। एक बूढ़ी औ़रत आप के पास आई और उस ने कहा : (मेरी ज़ियादा इस्तित़ाअ़त नहीं, इस लिये) येह कपड़ा जितने में आप को पड़ा है उस दाम पर मेरे हाथ फ़रोख़्त कर दें। आप ने फ़रमाया : तुम चार दिरहम में ले लो। वो बोली में एक बूढ़ी औ़रत हूं, मेरा मज़ाक़ क्यूं उड़ाते हो (क्यूंकि येह क़ीमत बहुत कम है) ? आप ने फ़रमाया : मैं ने दो

www.dawateislami.net

कपड़े ख़रीदे थे और इन में से एक कपड़े को दोनों की क़ीमते ख़रीद से चार दिरहम कम पर फ़रोख़्त कर चका हूं, अब येह दूसरा कपड़ा है जो मुझे चार दिरहम में पड़ा है, तुम 4 दिरहम में इसे ले लो। (تاریخ بغداد،١٣/٣٠٩)

हिकायत : 34 पांच दीनार वापस कर दिये

हज़रते मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग थे, दुकानदारी करते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास कई क़िस्म के कपड़े होते थे किसी की क़ीमत दस दीनार तो किसी की पांच दीनार। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की अ़दम मौजूदगी में आप के शागिर्द ने पांच दीनार क़ीमत वाला कपड़ा दस दीनार में एक आ'राबी (या'नी देहाती) को फ़रोख़्त कर दिया। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तशरीफ़ लाए और इस बात का पता चला तो सारा दिन आ'राबी को तलाश करते रहे। आख़िर जब वोह मिला तो फ़रमाया : वोह कपड़ा पांच दीनार से ज़ियादा क़ीमत का नहीं था। आ'राबी ने कहा : हो सकता है कि मैं ने ब ख़ुशी वोह कपड़ा दस दीनार से ख़रीदा हो। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : जो चीज़ मैं अपने लिये पसन्द नहीं करता दूसरे किसी मुसलमान के लिये भी पसन्द नहीं करता इस लिये या तो बैअ़ फ़स्ख़ (या'नी ख़त्म) कर लो या पांच दीनार वापस ले लो या मेरे साथ आओ ताकि दस दीनार की क़ीमत का कपड़ा दे दूं। आ'राबी ने पांच दीनार वापस ले लिये फिर किसी से दरयाफ़्त किया : येह कौन शख़्स है ? लोगों ने कहा : येह हज़रते मुहम्मद बिन मुन्कदिर हैं तो कहने लगा : سُبْحٰنَ الله येह वोह बुज़ुर्ग हस्ती हैं कि जब बारिश नहीं होती तो मैदान में जा कर हम इन का नाम लेते हैं तो पानी बरसने लगता है।

(کیمیائے سعادت، رکن دوم در معاملات، اصل سوم،١/٣٣٣)

www.dawateislami.net

﴾17﴿ बिला इजाज़त किसी की चीज़ इस्ति'माल न करें

किसी का क़लम, तोलिया, जूता, कंघा, लिहाफ़, चादर, तेल, सुर्मा और मोबाइल वग़ैरा बिला इजाज़त इस्ति'माल कर लेना भी हमारे यहां आ़म है। ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली शै भी अगर बिग़ैर इजाज़त इस्ति'माल कर डाली और क़ियामत के रोज़ पकड़ हुई तो क्या बनेगा ? चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی "तम्बीहुल मुग़तर्रीन" में नक़्ल करते हैं : मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक इसराईली शख़्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस त़रह़ इ़बादत करता रहा कि दिन को रोज़ा रखता और रात को जाग कर इ़बादत करता, न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِكَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर एक लकड़ी जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर दांतों में ख़िलाल कर लिया था (और येह मुआ़मला हुक़ूक़ुल इ़बाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था इस की वज्ह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं। (تنبیہ المغترین ، الباب الاول ، کثرۃ الخوف من اللہ ...الخ ، ص ٥١)

लाठी भी बिला इजाज़त न ले

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिये ह़लाल नहीं है कि वोह अपने भाई का कोई माल

www.dawateislami.net

नाहक़ तौर पर ले, इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुसलमान का माल मुसलमान पर ह़राम किया है, और इस को भी ह़राम क़रार दिया है कि कोई शख़्स अपने भाई की लाठी भी उस की ख़ुशदिली के बिग़ैर ले।

(مجمع الزوائد،کتاب البیوع،باب الغصب۔۔۔الخ،٤/٣٠٤:رقم:٦٨٥٩۔٦٨٦٠)

ख़ुशदिली के बिग़ैर दूसरे की चीज़ ह़लाल नहीं

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَايَحِلُّ مَالُ امْرِئٍ مُّسْلِمٍ اِلَّا بِطِيْبِ نَفْسٍ مِّنْهُ **तर्जमा :** किसी भी मुसलमान का कोई माल उस की ख़ुशदिली के बिग़ैर दूसरे के लिये ह़लाल नहीं। (مسند احمد،مسند البصریین،حدیث عم۔۔۔الخ،٧/٣٧٦،حدیث:٢٠٧٢٠)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह ह़दीस बहुत से अह़काम का माख़ज़ है। माली जुर्माने, किसी की चोरी, किसी का माल लूट लेना, किसी का माल जब्रन नीलाम कर देना येह सब ह़राम है। ख़याल रहे कि दीवालिये का माल दर ह़क़ीक़त उस के क़र्ज़ख़्वाहों का माल है इस लिये ह़ाकिम दीवालिये की इजाज़त के बिग़ैर नीलाम कर देता है। ग़रज़ येह कि बा'ज़ सूरतें इस से मुस्तसना हैं। لَاتَظْلِمُوْا के मा'ना हैं कि ग़ैर पर ज़ुल्म न करो या अपने पर ज़ुल्म न करो। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 318)

मत गुनाहों पे हो भाई बे बाक तू भूल मत येह ह़क़ीक़त कि है ख़ाक तू
थाम ले दामने शाहे लौलाक तू सच्ची तौबा से हो जाएगा पाक तू

(वसाइले बख़्शिश, स. 656)

www.dawateislami.net

हिकायत : 35

दरख़्त की चन्द पत्तियां

एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं जुल हिज्जतिल हराम 1429 हिजरी को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में हाज़िर था, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने बड़े शहज़ादे जानशीने अत्तार हाजी अबू उसैद उबैद रज़ा अत्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى के घर तशरीफ़ लाए हुए थे। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नज़र अपनी कमसिन नवासियों पर पड़ी की इन्हों ने घर की खिड़की के क़रीब लगे दरख़्त की चन्द **पत्तियां** तोड़ ली हैं तो तशवीश के आलम में मदनी मुन्नियों को एहसास दिलाया कि बच्चो ! येह दरख़्त पड़ोसी का है और आप लोगों ने किसी दूसरे के दरख़्त के **पत्ते** तोड़ लिये ऐसा नहीं करना चाहिये फिर आप ने फ़रमाया : रज़ा (या'नी अबू उसैद हाजी उबैद रज़ा) से कहता हूं कि वोह बराबर मकान वालों से जा कर इस सिलसिले में मुआफ़ी मांग लें।

किसी की दीवार का साया ले लेना कैसा ?

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जो चीज़ इस्ति'माल से घटे नहीं वोह मालिक की बिग़ैर इजाज़त इस्ति'माल की जा सकती है जैसे किसी के चराग़ की रोशनी में मुतालआ कर लेना, किसी की दीवार से साया ले लेना।

(मिरआतुल मनाजीह, 8 / 177)

वक़्फ़ की चीज़ों का इस्ति'माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वक़्फ़ की अश्या का बिला इजाज़ते शरई इस्ति'माल भी जाइज़ नहीं, इस में ज़ियादा एहतियात दरकार है

www.dawateislami.net

लेकिन अफ़्सोस ! वक़्फ़ की चीज़ों को माले मुफ़्त समझ कर बे रह़मी से इस्ति'माल किया जाता है, हमारे अकाबिरीन इस ह़वाले से कितनी एह़तियात़ करते थे इस ह़िकायत से अन्दाज़ा लगाएं, चुनान्चे,

ह़िकायत : 36 ज़ाती चराग़ जला लिया

एक ख़लीफ़ा की ह़िफ़ाज़त में आने वाली सब से अहम चीज़ बैतुल माल या'नी ख़ज़ाना है, इस लिये इस की दियानत का अस्ली मे'यार उसी को क़रार दिया जा सकता है, ह़ालात व वाक़िआ़त बताते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز की दियानत हमेशा इस मे'यार पर पूरी उतरी। वोह रात के वक़्त ख़िलाफ़त का काम बैतुल माल की शम्अ़ सामने रख कर अन्जाम दिया करते थे और जब अपना कोई काम करना होता तो उस शम्अ़ को उठा देते और ज़ाती चराग़ मंगवा कर काम करते। इसी त़रह़ की एक सबक़ आमोज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز के पास रात के वक़्त किसी दूर दराज़ अ़लाक़े का क़ासिद आया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आराम फ़रमाने के लिये लेट चुके थे लेकिन उसे अन्दर आने की इजाज़त दे दी और बड़ी देर तक उस के अ़लाक़े के ह़ालात बड़ी तफ़्सील से दरयाफ़्त फ़रमाते रहे कि वहां के मुसलमानों और ज़िम्मियों की ह़ालत कैसी है ? गवर्नर का रहन सहन कैसा है ? चीज़ों के भाव कैसे हैं ? मुहाजिरीन व अन्सार की औलाद के ह़ालात क्या हैं ? मुसाफ़िरों और फ़ुक़रा की क्या कैफ़िय्यत है ? क्या हर ह़क़दार को उस का ह़क़ दिया जाता है ? क्या किसी को शिकायत तो नहीं ?

www.dawateislami.net

गवर्नर ने किसी से बे इन्साफ़ी तो नहीं की ? इसी त़रह़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक एक चीज़ के बारे में कुरैद कुरैद कर दरयाफ़्त फ़रमाते रहे और क़ासिद अपनी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ जवाब देता रहा। जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सुवालात का सिलसिला ख़त्म हुवा तो क़ासिद ने आप की मिज़ाज पुर्सी की, कि आप की सिह़्ह़त कैसी है ? अह्लो इयाल के बारे में भी पूछा तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने फ़ौरन फूंक मार कर चराग़ बुझा दिया और दूसरा चराग़ लाने का हुक्म दिया चुनान्चे, एक मा'मूली चराग़ लाया गया जिस की रोशनी न होने के बराबर थी। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : हां ! अब जो चाहो पूछो। उस ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के अह्लो इयाल और मुतअ़ल्लिक़ीन के ह़ालात पूछे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जवाब देते रहे। क़ासिद को चराग़ बुझाने से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा था, चुनान्चे, उस ने पूछ ही लिया : **या अमीरल मोमिनीन** ! आप ने एक अनोखा काम किस लिये किया ? फ़रमाया : वोह क्या ? अ़र्ज़ की : जब मैं ने आप की और अह्लो इयाल की मिज़ाज पुर्सी की तो आप ने चराग़ गुल कर दिया ? फ़रमाया : **अल्लाह** के बन्दे ! जो चराग़ मैं ने बुझाया था वोह मुसलमानों के माल से रोशन था, लिहाज़ा जब तक मैं तुम से मुसलमानों के ह़ालात व ज़रूरियात दरयाफ़्त कर रहा था तो येह रोशन था, इस त़रह़ येह मुसलमानों के काम और उन ही की ज़रूरत के लिये मेरे पास रोशन था मगर जब तुम ने मेरी ज़ात और मेरे अह्लो इयाल के बारे में बात चीत शुरूअ़ की तो मैं ने मुसलमानों के माल से चलने वाला चराग़ बुझा दिया और ज़ाती चराग़ रोशन कर दिया। (سیرت ابن عبدالحکم،ص۱۳۳)

www.dawateislami.net

ऐसे रहा करो कि करें लोग आरज़ू

ऐसे चलन चलो कि ज़माना मिसाल दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿ तिलावत करते हुए तक्लीफ़ न दीजिये

इस्लामी शरीअ़त में हुक़ूक़ुल इ़बाद का इतना ख़याल रखा गया है कि क़ुरआने करीम जैसी मुबारक किताब की तिलावत करने वाले को भी इतनी आवाज़ से तिलावत करने की ताकीद है जिस से ख़ुद उसे तक्लीफ़ पहुंचे न किसी और को चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि रात में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़िराअत यूं थी कि कभी बुलन्द पढ़ते कभी पस्त।

(ابوداؤد،کتاب التطوع،باب رفع الصوت۔۔۔الخ،۲/۵٤، حدیث: ۱۳۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी तहज्जुद में कभी बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करते थे और कभी आहिस्ता आवाज़ से या'नी अगर तन्हाई में तहज्जुद पढ़ते तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ते और अगर वहां सोने वाले होते तो आहिस्ता क़िराअत फ़रमाते ताकि उन्हें तक्लीफ़ न हो।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 242)

तिलावत आवाज़ से करना बेहतर है मगर कब?

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से पूछा गया कि क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत आवाज़ से

www.dawateislami.net

करना या आहिस्ता चाहिये ? जवाब दिया : कुरआने मजीद की तिलावत आवाज़ से करना बेहतर है मगर न इतनी आवाज़ से कि अपने आप को तक्लीफ़ या किसी नमाज़ी या ज़ाकिर (या'नी ज़िक्र करने वाले) के काम में ख़लल हो या किसी जाइज़ नींद सोने वाले की नींद में ख़लल आए या किसी बीमार को तक्लीफ़ पहुंचे या बाज़ार या सराया आ़म सड़क हो या लोग अपने काम काज में मश्ग़ूल हैं और कोई सुनने के लिये हाज़िर न रहेगा इन सूरतों में आहिस्ता ही पढ़ने का हुक्म है। وَاللّٰہ تعالٰی اَعْلَم

(फ़तावा रज़विय्या, 23 / 383)

हाजत से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ करना कैसा ?

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : ह़ाजत से ज़ियादा इस क़दर बुलन्द आवाज़ से पढ़ना कि अपने या दूसरे के लिये बाइ़से तक्लीफ़ हो, मकरूह है। (बहारे शरीअ़त, 1 / 544) (ردالمحتار،کتاب الصلاۃ، فصل فی القراءۃ،۲/۳۰٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿19﴾ मुक़्तदियों को तक्लीफ़ न दीजिये

नमाज़ की इमामत करने वाले को भी मुक़्तदियों की तक्लीफ़ का ख़याल रखने का कहा गया है चुनान्चे, फ़तावा रज़विय्या जिल्द 6 सफ़ह़ा 324 पर है : ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े फ़ज्र में एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर इस ख़याले रह़मत से कि उस की मां

www.dawateislami.net

जमाअ़त में हाज़िर है तूले क़िराअत से उधर बच्चा फड़केगा इधर मां का दिल बेचैन होगा सिर्फ़ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق से नमाज़ पढ़ा दी। صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ اَجْمَعِيْن (फ़तावा रज़विय्या, 6 / 324)

बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर नमाज़ मुख़्तसर कर देते

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं नमाज़ शुरूअ़ करता हूं और उसे दराज़ करना चाहता हूं कि बच्चे की रोने की आवाज़ सुन लेता हूं तो नमाज़ में इख़्तिसार करता हूं क्यूंकि उस के रोने से उस की मां की सख़्त घबराहट जान लेता हूं।

(بخاری،کتاب الاذان،باب من اخف۔۔۔الخ،۱/۲۵۳، حدیث: ۷۰۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : चूंकि हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे औ़रतें भी नमाज़ पढ़ती थीं जो अपने बच्चों को घर सुला कर आती थीं, जब घरों से उन के रोने की आवाज़ आती तो सरकार (صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उन की माओं के ख़याल से नमाज़ हल्की करते। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 203)

त़वील क़िराअत न करे

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : शरीअ़ते इस्लामिय्या **ईज़ाए मुस्लिम** के इर्तिकाब की सख़्त हौसला शिकनी करती है। मुसलमान को ईज़ा पहुंचती हो तो सुन्नत पर अ़मल

www.dawateislami.net

करना भी बा'ज़ सूरतों में ह़राम हो जाता है। मसलन नमाज़े फ़ज्र व ज़ोहर में **त़िवाले मुफ़स्सल** (सूरतुल ह़ुजुरात ता सूरतुल बुरूज को त़िवाले मुफ़स्सल कहते हैं) से पूरी दो सूरतें (हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द एक एक सूरत) पढ़नी सुन्नत है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ फ़ज्र व ज़ोहर में सूरए फ़ातिह़ा के इ़लावा मजमूई़ त़ौर पर चालीस या पचास और दूसरी रिवायत के मुत़ाबिक़ साठ से ले कर सो तक आयतें पढ़ी जाएं। (फ़तावा रज़विय्या, 6 / 324) अलबत्ता कोई मरीज़ या ऐसा आदमी नमाज़ में शामिल हो जिस को जल्दी है और देर होने की सूरत में उस को तक्लीफ़ होगी तो ऐसी सूरत में तक्लीफ़ देह ह़द तक त़वील क़िराअत करना **ह़राम** है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 6 सफ़ह़ा 325 पर फ़रमाते हैं : यहां तक कि अगर हज़ार आदमी की जमाअ़त है और सुब्ह़ की नमाज़ है और ख़ूब वसीअ़ वक़्त है और जमाअ़त में 999 आदमी दिल से चाहते हैं कि इमाम बड़ी बड़ी सूरतें पढ़े मगर एक शख़्स बीमार या ज़ई़फ़ बूढ़ा या किसी काम का ज़रूरत मन्द है कि उस पर तत़वील (या'नी त़िवालत) बार होगी उसे तक्लीफ़ पहुंचेगी तो इमाम को **ह़राम** है कि तत़वील (या'नी त़िवालत) करे बल्कि हज़ार में इस एक के लिह़ाज़ से नमाज़ पढ़ाए जिस त़रह़ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ उस औ़रत और उस के बच्चे के ख़याल से नमाज़े फ़ज्र मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास) पर पढ़ा दी। और मुआ़ज़ इब्ने जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पर तत़वील में सख़्त नाराज़ी फ़रमाई यहां तक कि रुख़्सारए मुबारक शिद्दते जलाल से सुर्ख़ हो गए और फ़रमाया : क्या तू लोगों को फ़ितने में डालने

www.dawateislami.net

वाला है ! क्या तू लोगों को फ़ितने में डालने वाला है ! क्या तू लोगों को फ़ितने में डालने वाला है ! ऐ मुआज़ !

(फ़तावा रज़विय्या, 6 / 325) (ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी, स. 10)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿ उस्ताद को तक्लीफ़ देना

दीनी उस्ताद रूहानी बाप का दरजा रखता है लिहाज़ा तालिबुल इल्म को चाहिये कि उसे अपने हक़ में हक़ीक़ी बाप से बढ़ कर मुख़्लिस जाने और उसे तक्लीफ़ पहुंचाने से बचे । तफ़्सीरे कबीर में है : उस्ताज़ अपने शागिर्द के हक़ में मां बाप से बढ़ कर शफ़ीक़ होता है क्यूंकि वालिदैन उसे दुन्या की आग और मसाइब से बचाते हैं जब कि असातिज़ा उसे नारे दोज़ख़ और मसाइबे आख़िरत से बचाते हैं । (تفسیر کبیر، ۱/ ۴۰۱)

इल्म की बरकत से महरूम रहेगा

आ'ला हज़रत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 के सफ़हा नम्बर 639 पर लिखते हैं : उलमा फ़रमाते हैं : जिस से उस के उस्ताद को किसी तरह की ईज़ा पहुंची वोह इल्म की बरकत से महरूम रहेगा ।

उस्ताद के हुक़ूक़

आ'ला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने मो'तबर कुतुब के हवाले से उस्ताद के हुक़ूक़ बयान फ़रमाए हैं, जिन का ख़ुलासा अपने अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत है : आलिम

www.dawateislami.net

का जाहिल पर और उस्ताद का शागिर्द पर एक सा हक़ है और वोह येह है कि (1) उस से पहले गुफ़्तगू शुरूअ़ न करे। (2) उस की जगह पर उस की ग़ैर मौजूदगी में भी न बैठे। (3) चलते वक़्त उस से आगे न बढ़े। (4) अपने माल में से किसी चीज़ से उस्ताद के हक़ में बुख़्ल से काम न ले या'नी जो कुछ उसे दरकार हो ब ख़ुशी हाज़िर कर दे और उस के क़ुबूल कर लेने में उस का एहसान और अपनी सआ़दत तसव्वुर करे। (5) उस के हक़ को अपने मां बाप और तमाम मुसलमानों के हक़ से मुक़द्दम रखे। (6) और अगर्चे उस से एक ही हर्फ़ पढ़ा हो, उस के सामने आ़जिज़ी का इज़हार करे। (7) अगर वोह घर के अन्दर हो, तो बाहर से दरवाज़ा न बजाए, बल्कि ख़ुद उस के बाहर आने का इन्तिज़ार करे। (8) (उसे अपनी जानिब से किसी क़िस्म की अज़िय्यत न पहुंचने दे कि) जिस से उस के उस्ताद को किसी क़िस्म की अज़िय्यत पहुंची, वोह इल्म की बरकात से महरूम रहेगा। (फ़तावा रज़विय्या, 24 / 412 मुलख़्ख़सन)

उस्ताद को धोका देना ज़ियादा बुरा है

अपने उस्ताद को अपनी त़रफ़ से इबारतें घड़ कर धोका देने वाले त़ालिबे इल्म के बारे में दरयाफ़्त किये गए सुवाल के जवाब में इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सुख़न परवरी या'नी दानिस्ता बात़िल पर इसरार व मकाबरा **एक कबीरा**, कलिमाते उ़लमा में कुछ अल्फ़ाज़ अपनी त़रफ़ से इल्हाक़ कर के उन पर इफ़तरा **दूसरा कबीरा**, उ़लमाए किराम और ख़ुद अपने

www.dawateislami.net

असातिज़ा को धोका देना ख़ुसूसन अम्रे दीन में **तीसरा कबीरा**, येह सब ख़स्लतें यहूद لَعَنَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की हैं।

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक़ न छुपाओ। (پ:۱،البقرہ ۴۲)

وَقَالَ تَعَالٰی: فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿۷۹﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ख़राबी है उन के लिये उन के हाथों के लिखे से और ख़राबी उन के लिये उस कमाई से। (پ ۱،البقرۃ:۷۹)

وَقَالَ تَعَالٰی: يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : समझने के बा'द उसे दानिस्ता बदल देते।

(پ:۱،البقرۃ:۷۵) (फ़तावा रज़विय्या, 23 / 682)

अदब उस्तादे दीनी का मुझे आक़ा अ़ता कर दो

दिलो जां से करूं उन की इताअ़त या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 331)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 37

﴿21﴾ बुज़ुर्गों को तक्लीफ़ देना

अबुल ह़सन अ़लवी का बयान है : मैं ने एक बार घर में फ़रमाइश की, कि फुलां ह़लाल परन्दा भूनने के लिये तन्दूर में लटका दो, मैं वक़्ते मुनासिब पर आ कर खा लूंगा। फिर मैं ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र ख़ुल्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ख़िदमत में ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा, उन्हों ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

रात यहीं क़ियाम कर लीजिये। मेरा दिल चूंकि परन्दा खाने में फंसा हुवा था मैं कोई बहाना कर के घर पहुंच गया। गर्मा गर्म भुना हुवा परन्दा दस्तर ख़्वान पर रख दिया गया। यका यक घर में कुत्ता घुस आया और झपट कर भुना हुवा परन्दा ले भागा। उस परन्दे का बचा हुवा शोरबा ख़ादिमा ला रही थी कि उस के कपड़े के दामन का झटका लगने से वोह शोरबा भी सारे का सारा गिर गया। फिर सुब्ह जब मैं हज़रते सय्यिदुना शैख़ जा'फ़र ख़ुल्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुवा तो मुझे देखते ही फ़रमाने लगे : जो शख़्स मशाइख़ के दिलों का लिहाज़ नहीं रखता उस के दिल को ईज़ा पहुंचाने के लिये कुत्ता मुसल्लत कर दिया जाता है।

(الرِّسالةُ القُشَيرِيّه، ص٣٦٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, बुज़ुर्गों की बात निभाने और वोह जो हुक्म दें उस को बजा लाने ही में आ़फ़िय्यत है। अल्लाह वालों के साथ चालाकी और बहाने बाज़ी कार आमद नहीं होती।

हिकायत : 38 विलायत का मे'यार

शारेहे बुख़ारी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى का बयान है : मग़रिबी दीनाज पुर इस्लाम पुर के अ़लाक़े में एक शख़्स ने मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن को मदऊ़ किया और बहुत एहतिमाम किया। जब हज़रत आराम के लिये लेटे तो वोह शख़्स रात भर जागता रहा, हज़रत ने वहां भी नमाज़े तहज्जुद अदा न फ़रमाई। अज़ाने फ़ज्र के बा'द

www.dawateislami.net

जब मैं ने ह़स्बे दस्तूर ह़ाज़िर हो कर जगाया तो उठे और अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ इस्फ़ार के बा'द बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र पढ़ी। नाश्ते के बा'द हम लोग वहां से रुख़्सत हो गए। सुनने में आया कि उस शख़्स ने येह कहना शुरूअ़ किया कि बहुत मश्हूर था कि बहुत बड़े बुज़ुर्ग हैं, मैं ने तो उन में बुज़ुर्गी की कोई बात न देखी, उन्हों ने तहज्जुद तक नहीं पढ़ी। वोह शख़्स इ़ताब का शिकार हुवा, उस के घर में आग लग गई, सारा घर और सारा सामान, मालो मताअ़ जल गया। हज़ारों के नोट घर में थे जल कर राख हो गए, सिर्फ़ बदन के कपड़े बचे, इस तबाही से वोह नीम पागल हो गया। अत़राफ़ के उ़लमा ने उसे तम्बीह की, कि तू ने एक आ़रिफ़े कामिल की शान में गुस्ताख़ी की है, येह उसी की सज़ा है। अब उसे होश आया मगर क्या करता ? दिल ही दिल में तौबा की, आ़जिज़ी व ज़ारी की। इत्तिफ़ाक़ कि साल भर के बा'द फिर ह़ज़रते मुफ़्तिये आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم उस अत़राफ़ में तशरीफ़ ले गए तो उस ने ह़ाज़िर हो कर मुआ़फ़ी मांगी और ह़ज़रत को फिर अपने घर ले गया और मुरीद हुवा। अब वोह एक ख़ुश ह़ाल फ़र्द है, इस क़िस्म के और भी वाक़िआ़त हुए हैं।

(जहाने मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, स. 332 मुलख़्ख़सन)

ह़िकायत : 39 बात न मानने का अन्जाम

ह़ज़रत मौलाना ह़फ़ीज़ुर्रह़मान साह़िब मर्ह़ूम का बयान है : एक मरतबा मैं अपने क़रीब तरीन अ़ज़ीज़ के साथ मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा मुलाक़ात के बा'द ह़ज़रत ने मेहमान नवाज़ी के लिये

www.dawateislami.net

इसरार किया तो हम रुक गए। इसी असना में शाहजहां पुर से चन्द अ़क़ीदत मन्द मुतवस्सिलीन ह़ाज़िर हुए, ह़ज़रत की दस्तबोसी कर के बैठ गए और फिर फ़ौरी त़ौर पर जाने लगे। ह़ज़रत ने उन ह़ज़रात को रोकने की त़रफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाई लेकिन वोह लोग नहीं रुके और जंक्शन की त़रफ़ रवाना हो गए। उन को ट्रेन नहीं मिली, इस के बा'द बस स्टेन्ड की त़रफ़ रवाना हुए तो वहां पर उन को बस भी नहीं मिली। मेनेजर बस स्टेन्ड ने बताया कि शाहजहां पुर को अब कोई बस नहीं जाएगी, सुब्ह़ को जाएगी। दिल बरदाश्ता हो कर ह़ज़रत के दौलत कदे की त़रफ़ रवाना हो गए, ह़ज़रत ने उन लोगों के जाने के बा'द मौलाना ह़फ़ीज़ुर्रह़मान साहि़ब से फ़रमाया कि येह सब ह़ज़रात थोड़ी देर बा'द वापस आ जाएंगे, इन को न बस न ट्रेन मिलेगी। थोड़ी देर बा'द काफ़ी परेशानी उठा कर थक कर दोबारा ह़ज़रत के दौलत कदे पर आ गए, उन को देख कर मौलाना साहि़ब मुस्कुराने लगे, ह़ज़रत मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी तबस्सुम फ़रमाया और सब लोगों के साथ बैठ कर खाना तनावुल फ़रमाया।

(जहाने मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, स. 912)

तड़पना इस त़रह़ बुल बुल की बाल व पर न हिलें

अदब है लाज़िमी शाहों के आस्ताने का

﴾22﴿ तौबा के बा'द गुनाहों पर आ़र दिलाना

गुनाहों की आ़दत बहुत बुरी और इन से तौबा कर लेना बहुत अच्छा है फिर जो गुनाहों का रास्ता छोड़ चुका हो उस को उन गुनाहों पर आ़र दिलाना बहुत ही बुरा है, "कल तक तुम चोरियां करते थे आज बड़े

www.dawateislami.net

नेक बने फिरते हो", "कल ख़ुद नमाज़ नहीं पढ़ते थे आज इमाम बन बैठे हो" जैसे जुम्ले बोल कर त़न्ज़ करना सख़्त दिल आज़ार है।

ख़ुद भी उसी गुनाह में मुब्तला होगा

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने भाई को किसी गुनाह पर आ़र दिलाए तो वोह न मरेगा ह़त्ता कि ख़ुद भी करेगा।

(ترمذی،کتاب صفة القیامة،باب:۱۱۸، ۴/۲۲۶، حدیث:۲۵۱۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : गुनाह से वोह गुनाह मुराद है जिस से वोह तौबा कर चुका है या वोह पुराना गुनाह जिसे लोग भूल चुके या ख़ुफ़्या गुनाह जिस पर लोग मुत्तलअ़ न हों और आ़र दिलाना तौबा कराने के लिये न हो मह़्ज़ ग़ुस्सा और जोशे ग़ज़ब से हो येह क़ुयूद ख़याल में रहें। "वोह न मरेगा ह़त्ता कि ख़ुद भी करेगा" की वज़ाह़त में मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : या'नी अपनी मौत से पहले येह गुनाह ख़ुद करेगा और उस में बदनाम होगा, मज़्लूम का बदला ज़ालिम से ख़ुद रब तआ़ला लेता है। मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं : यहां गुनाह से मुराद वोह गुनाह है जिस से गुनहगार तौबा कर चुका है ऐसे गुनाह का ज़िक्र भी नहीं चाहिये, जिस गुनाह में बन्दा गिरिफ़्तार है उस से आ़र दिलाना ताकि तौबा करे येह तो तब्लीग़ है इस पर सवाब है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 473)

न थी अपने ऐ़बों की जब ख़बर रहे देखते औरों के ऐ़बो हुनर
पड़ी अपनी ख़ामियों पर जब नज़र तो जहां में कोई बुरा न रहा

www.dawateislami.net

हिकायत : 40 ﴿23﴾ तन्ज़िया अन्दाज़े गुफ़्तगू इख़्तियार करना

हज़रते सय्यिदुना उ़रवा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और एक अन्सारी शख़्स के दरमियान हर्रह की नाल के मुतअ़ल्लिक़ झगड़ा हुवा । (येह मुआ़मला बारगाहे रिसालत में पेश हुवा तो) हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ ज़ुबैर ! तुम पानी दे कर फिर अपने पड़ोसी की त़रफ़ पानी छोड़ दो । अन्सारी ने कहा : वोह आप के फूफीज़ाद जो हुए । इस पर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे का रंग बदल गया फिर फ़रमाया : ऐ ज़ुबैर ! पानी दो फिर पानी रोक लो ह़त्ता कि मेंढ तक लौट जाए फिर अपने पड़ोसी की त़रफ़ पानी छोड़ दो ।

(येह ह़दीस नक़्ल करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :[1]) या'नी अब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को अपना पूरा हक़ लेने का सरीह़ हुक्म दिया जब कि अन्सारी ने आप को नाराज़ कर दिया ह़ालांकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों को वोह मश्वरा दिया था जिस में दोनों के लिये गुन्जाइश थी ।

(بخاری، کتاب التفسیر، باب فلا وربك...الخ، ۳/۲۰۵، حدیث: ٤٥٨٥)

[1] : وَهٰذَا الْكَلَام لِلزُّهْرِی ذَكَرَه إِدْرَاجًا (عمدة القاری، کتاب التفسیر، باب فلا وربك...الخ، ۱۲/۵۳۸، تحت الحدیث: ٤٥٨٥)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने इस ह़दीसे पाक के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों की जो शर्ह़ फ़रमाई वोह दर्जे ज़ैल है : इन दोनों साह़िबों के खेत बराबर थे जो उस नाले से सींचे जाते थे, झगड़ा हुवा आगे पानी देने का, अन्सारी कहते थे पहले मैं पानी दूं, ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) फ़रमाते हैं पहले मैं दूं, क्यूंकि आप का खेत ऊपर था जिधर से पानी आता था और अन्सारी का खेत नीचे बहाव की त़रफ़ और ऊपर वाला पहले पानी देता है। (''इस पर अन्सारी ने कहा : वोह आप के फूफीज़ाद जो हुए'' की वज़ाह़त में मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं :) या'नी आप ने इस फ़ैसले में उन की क़राबत दारी का लिह़ाज़ फ़रमाया है। शारेह़ीन ने फ़रमाया कि येह शख़्स क़ौमे अन्सार से तो था मगर मोमिन न था या यहूदी था या मुनाफ़िक़, मगर तरजीह़ इसे है कि था तो मुसलमान मगर नौ मुस्लिम (या'नी नया मुसलमान हुवा) था, आदाबे बारगाह से बे ख़बर था इसी लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या दूसरे सह़ाबा ने इसे कोई सज़ा न दी। (मिरक़ात) अशिआ़ ने फ़रमाया : येह मुनाफ़िक़ ही था जैसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने उबय कि क़बीलए अन्सार से था मगर मुनाफ़िक़ था, क़त्ल इस लिये न कराया कि मुनाफ़िक़ों को क़त्ल न कराया जाता था। واللّٰہ اعلم!

हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को उस के इस कलाम से बहुत ही तक्लीफ़ हुई ह़त्ता कि चेहरए अन्वर सुर्ख़ हो गया, मुनाफ़िक़ों, ना वाक़िफ़ों से बसा औक़ात हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ऐसी बातें सुन लेते थे तक्लीफ़ होती थी मगर सब्र फ़रमाते थे। (''ऐ ज़ुबैर पानी दो फिर

www.dawateislami.net

पानी रोक लो ह़त्ता कि मेंढ तक लौट जाए फिर अपने पड़ोसी की त़रफ़ पानी छोड़ दो" के तह़्त मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं :) पहले तो फ़रमाया था कि ऐ ज़ुबैर अपनी ज़मीन तर कर के पानी अन्सारी को दे दो अब पूरा ह़क़ ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को अ़त़ा फ़रमाया कि पहले तुम अपने खेत को पानी दो, फिर इतनी देर तक पानी रोके रखो कि खेत आस पास की मेंढ (बन्ना) तक पहुंच जाए और खेत लबरेज़ हो जाए तब अन्सारी को दो। या'नी पहले अन्सारी की रिआ़यत की गई थी और ह़ज़रते ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को हुस्ने अख़्लाक़ की ता'लीम दी गई थी मगर जब अन्सारी ने उस से फ़ाएदा न उठाया बल्कि उल्टा नाराज़ हो गया तो हर एक को पूरा ह़क़ दिया गया, पहले फ़ज़्ल था अब अ़द्ल। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 340)

ज़बान से तक्लीफ़ देने वाली का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फ़ुलां औ़रत की नमाज़ रोज़े और सदक़ात की फ़रावानी का चर्चा है लेकिन वोह अपने पड़ोसियों को ज़बान से सताती है। इरशाद फ़रमाया : वोह आग में है। अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फ़ुलां औ़रत की नमाज़ रोज़े और सदक़ात की कमी का ज़िक्र होता है अलबत्ता वोह पनीर के कुछ टुकड़े ही ख़ैरात करती है और अपनी ज़बान से पड़ोसियों को तक्लीफ़ नहीं देती। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह जन्नती है।

(مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۴۴۱، حدیث:۹۶۸۱)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ज़बान का ज़िक्र इस लिये किया अक्सर लोग दूसरों को ज़बानी तक्लीफ़ देते हैं लड़ना भिड़ना, ग़ीबत, चुग़ली करना वग़ैरा । ज़बान का ज़ख़्म सिनान या'नी भाले के ज़ख़्म से ज़ियादा तक्लीफ़ देह होता है कि येह मरहम से भर जाता है मगर वोह नहीं भरता । ह़ज़रते अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) फ़रमाते हैं :

جَرَاحَاتُ السِّنَانِ لَهَا الْتِيَام وَلَا يَلْتَامُ مَا جَرَحَ اللِّسَان

किसी उर्दू शाइ़र ने इस का तर्जमा यूं किया है :

छुरी का तीर का तल्वार का तो घाव भरा

लगा जो ज़ख़्म ज़बान का रहा हमेशा हरा

"वोह आग में है" की वज़ाह़त में मुफ़्ती साह़िब फ़रमाते हैं : या'नी येह काम दोज़ख़ियों के हैं अगर येह इबादत गुज़ार बीबी अपनी तेज़ ज़बान से तौबा न करेगी तो अव्वलन दोज़ख़ में जाएगी, नवाफ़िल से लोगों के ह़क़ मुआ़फ़ नहीं होते, फिर सज़ा भुगत कर जन्नत में जाएगी लिहाज़ा येह ह़दीस इस क़ानून के ख़िलाफ़ नहीं कि सह़ाबा तमाम ही आ़दिल हैं कोई फ़ासिक़ नहीं, बा'ज़ ह़ज़राते सह़ाबा से गुनाह हुए मगर वोह क़ाइम न रहे तौबा कर के दुन्या से गए ।

मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली से हम लोगों के कान खुल जाने चाहियें हम में से बहुत लोग उसूल छोड़ कर फ़ुज़ूल में कोशिश करते हैं फ़राइज़ की परवाह नहीं नवाफ़िल पर ज़ोर, मुआ़मलात ख़राब वज़ीफ़ों चिल्लों का एहतिमाम, दवा के साथ परहेज़ ज़रूरी है । (मिरआतुल मनाजीह, 6 / 577)

www.dawateislami.net

मदारिजुन्नुबुव्वत में है कि जब इकरिमा इब्ने अबी जह्ल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ईमान लाए तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) को ताकीद फ़रमा दी कि इकरिमा के सामने कोई अबू जह्ल को बुरा न कहे कि इस से फ़ित्री तौ़र पर इकरिमा को तक्लीफ़ होगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 34)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿24﴾ गुज़रगाह के बीच या किनारे पर बोलो बराज़ करना

क़ज़ाए ह़ाजत एक बशरी तक़ाज़ा है, किसी भी जगह किसी भी वक़्त इन्सान को इस की ज़रूरत पेश आ सकती है लेकिन लोगों की गुज़रगाह पर क़ज़ाए ह़ाजत करने से मन्अ़ किया गया है क्यूंकि येह लोगों के लिये बाइ़से तक्लीफ़ होगा चुनान्चे, ह़कीम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ़म रास्ते में क़ज़ाए ह़ाजत से मन्अ़ फ़रमाया। आ़म रास्ता वोह है जिस पर लोग चलते हों, आ़म रास्ते की क़ैद इस लिये लगाई गई कि इस पर ऐसा करने से मुसलमानों को नुक़्सान और तक्लीफ़ पहुंचती है। मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "जो आ़म रास्ते, नह्र के किनारे या फलदार दरख़्त के नीचे क़ज़ाए ह़ाजत करे उस पर **अल्लाह** तआ़ला, फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है।" ऐसा करने वाला मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने की वज्ह से (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ से ला'नत का मुस्तह़िक़ क़रार पाता है क्यूंकि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस ने किसी मुसलमान को अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अज़िय्यत दी। (المنهيات للحكيم الترمذی،ص٤٦)

www.dawateislami.net

ख़ुदाया न तक्लीफ़ का मैं बाइस बनूं

तेरी जन्नतों का मैं वारिस बनूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿25﴾ मस्जिद में तक्लीफ़ न दीजिये

मस्जिद इस्लामी मुआ़शरे में बहुत अहम्मिय्यत रखती है, इस की सफ़ाई सुथराई, ज़ैबो ज़ीनत का ख़याल अपने ज़ाती घर से कहीं बढ़ कर रखा जाता है। मुसलमानों की इ़बादतगाह को बदबू, गन्दगी और हर उस चीज़ से बचाना ज़रूरी है जिस से दीगर मुसलमान तक्लीफ़ में मुब्तला हो सकते हों। मस्जिद में जाने वाले के कपड़े बदबूदार नहीं होने चाहियें।

हि़कायत : 41 ग़ुस्ले जुमुआ़ की इब्तिदा कैसे हुई?

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि कुछ इ़राक़ी लोग आए और बोले : ऐ इब्ने अ़ब्बास ! क्या आप जुमुआ़ के दिन का ग़ुस्ल वाजिब समझते हैं ? फ़रमाया : नहीं, लेकिन येह बहुत पाकी है और ग़ुस्ल करने वाले के लिये अच्छा है और जो ग़ुस्ल न करे उस पर ज़रूरी नहीं, मैं तुम्हें बताता हूं कि ग़ुस्ल शुरूअ़ कैसे हुवा ! लोग मशक़्क़त में थे कि ऊन पहनते और अपनी पीठ पर मज़दूरियां करते थे उन की मस्जिद तंग थी जिस की छत नीचे थी जो सिर्फ़ छप्पर (ख़सपोश) थी, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक गर्म दिन में तशरीफ़ लाए और लोग उसी ऊन में पसीना पसीना थे कि उन से बू फैल गई जिस की वज्ह

www.dawateislami.net

से बा'ज़ ने बा'ज़ से तक्लीफ़ पाई तो जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बू पाई तो फ़रमाया : ऐ लोगो ! जब येह दिन हुवा करे तो नहा लिया करो, और चाहिये कि हर एक अपना बेहतरीन तेल व ख़ुश्बू मल लिया करे । हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़ता फ़रमाया और लोगों ने ऊन के इलावा दीगर अच्छे लिबास पहने और काम काज से छूट गए, उन की मस्जिद फ़राख़ हो गई और पसीने से जो बा'ज़ को बा'ज़ से तक्लीफ़ पहुंचती थी वोह जाती रही ।

(ابوداؤد،کتاب الطهارة،باب فی الرخصة ـ الخ، ۱/۱٦۰،حدیث:۳۵۳)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के हिस्से "हर एक अपना बेहतरीन तेल व ख़ुश्बू मल लिया करे" के तह़्त लिखते हैं : तेल सर व जिस्म में और ख़ुश्बू कपड़ों में । इस से मा'लूम हुवा कि मुसलमानों के मजमओ़ं में अच्छे कपड़े पहन कर जाना चाहिये । शादी, उ़र्स, तब्लीग़ के जल्से सब में इस बात का ख़याल रखा जाए । मजलिसों में हार फूल डालने की अस्ल येह ह़दीस है । (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 348)

येह तस्लीम, उ़म्दा है ख़ुश्बूए जन्नत

मुझे काश मिल जाए उन का पसीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 371)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हिकायत : 42

﴾26﴿ गर्दनें न फलांगें

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों से ख़िताब फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स लोगों की गर्दनें फलांगता हुवा आया और आप के क़रीब आ कर बैठ गया, जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ा चुके तो इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ुलां ! तुझे हमारी जमाअ़त में से होने से किस चीज़ ने मन्अ़ किया ? उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने चाहा कि मैं उस जगह बैठूं जो आप की निगाह में हो, तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हें लोगों की गर्दनें फलांगते और उन्हें ईज़ा पहुंचाते हुए देखा, जिस ने किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।

(المعجم الاوسط، ٢/٣٨٦،حديث:٣٦٠٧)

हदीसे पाक में है : जिस ने जुमुआ़ के दिन लोगों की गर्दनें फलांगीं उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया।

(ترمذی،کتاب الجمعة،باب ما جاء فی کراهية...الخ،٢/٤٨،حديث:٥١٣)

या'नी जिस त़रह़ लोगों की गर्दनें उस ने फलांगी हैं उस को क़ियामत के दिन जहन्नम में जाने का पुल बनाया जाएगा कि उस के ऊपर चढ़ कर लोग जाएंगे। (ह़ाशिया बहारे शरीअ़त, 1 / 762)

www.dawateislami.net

जहन्नम का पुल

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जिस ने जुमुआ़ के दिन लोगों की गर्दनें फलांगीं उसे दोज़ख़ की त़रफ़ पुल बनाया जाएगा ।

(ترمذی، کتاب الجمعة، باب ما جاء فی کراهية التخطی یوم الجمعة، ۲/۴۸، حدیث: ۵۱۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : येह फलांगना सख़्त गुनाह है और दोज़ख़ में जाने का ज़रीआ़, क्यूंकि इस में मुसलमानों की तौहीन भी है और ईज़ा भी, हां अगर अगली सफ़ों में जगह हो और लोग सुस्ती से पीछे बैठ गए हों तो उस जगह को पुर करने के लिये येह आगे जा सकता है, क्यूंकि यहां क़ुसूर उन बैठने वालों का है न कि इस का ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 338)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 43

(27) नोकदार चीज़ एह़तियात़ से ले कर चलें

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स मस्जिद में चन्द तीर ले कर गुज़रा जिन के पैकान (या'नी तीरों की नोक) खुले हुए थे, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि वोह उन के पैकान पकड़ ले ताकि वोह किसी मुसलमान को चुभ न जाएं । (مسلم، کتاب البر والصلة، باب امر من مر۔۔۔الخ، ص۱۴۰۹، حدیث:۲۶۱۴)

www.dawateislami.net

शारेहे बुख़ारी अबुल ह़सन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ख़लफ़ अल मा'रूफ़ इब्ने बत्ताल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इसी मफ़्हूम पर मुश्तमिल एक और ह़दीसे पाक के तह़त तह़रीर फ़रमाते हैं : येह फ़रमाने आ़लीशान हुरमते मुस्लिम की ताकीद पर मुश्तमिल है कि तीर की वज्ह से कहीं वोह ख़ौफ़ज़दा न हो जाए या उसे तक्लीफ़ न पहुंचे। मस्जिद में लोगों की आमदो रफ़्त का सिलसिला जारी रहता है जो कि नमाज़ के औक़ात में ज़ियादा होता है। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस बात का अन्देशा हुवा कि तीरों की वज्ह से किसी को तक्लीफ़ हो सकती है। येह ह़दीसे पाक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा और मुसलमानों पर मेहरबानी का नुमूना है।

(شرح ابن بطال،کتاب الصلاۃ،باب یاخذ بنصول۔۔۔الخ،۲/۱۰۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾28﴿ मुंह में बदबू हो तो दूसरों को ईज़ा पहुंचती है

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 7 सफ़्ह़ा 384 पर है : मुंह में बदबू होने की ह़ालत में (घर में पढ़ी जाने वाली) नमाज़ **मकरूह** है और ऐसी ह़ालत में मस्जिद जाना ह़राम है जब तक मुंह साफ़ न कर ले और दूसरे नमाज़ी को ईज़ा पहुंचनी ह़राम है और दूसरा नमाज़ी न भी हो तो भी **बदबू** से मलाइका को ईज़ा पहुंचती है। **ह़दीस** में है : जिस चीज़ से इन्सान तक्लीफ़ मह़सूस करते हैं फ़िरिश्ते भी उस से तक्लीफ़ मह़सूस करते हैं।

(مُسلِم،کتاب المساجد،باب نهی من اکل۔۔۔الخ،ص۲۸۲، حدیث ٥٦٤)

www.dawateislami.net

बदबूदार मरहम लगा कर मस्जिद में आने की मुमानअ़त

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जिस के बदन में **बदबू** हो कि उस से नमाज़ियों को ईज़ा हो मसलन مَعَاذَاللّٰه **गन्दा दहन** (या'नी जिस को मुंह से बदबू आने की बीमारी हो), (या) **गन्दा बग़ल** (या'नी जिस के बग़ल से बदबू आने का मरज़ हो) या जिस ने **ख़ारिश** वग़ैरा के बाइ़स **गंधक** मली (या कोई सा बदबूदार मरहम या लोशन लगाया) हो उसे भी मस्जिद में न आने दिया जाए।"

(फ़तावा रज़विय्या, 8 / 72)

कच्ची प्याज़ खाने से भी मुंह बदबूदार हो जाता है

कच्ची मूली, कच्ची प्याज़, कच्चा लह्सन और हर वोह चीज़ कि जिस की **बू** नापसन्द हो उसे खा कर मस्जिद में उस वक़्त तक जाना जाइज़ नहीं जब तक कि हाथ मुंह वग़ैरा में **बू** बाक़ी हो कि फ़िरिश्तों को उस से तक्लीफ़ होती है। ह़दीस शरीफ़ में है, **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने प्याज़, लह्सन या गन्दना (लह्सन से मिलती जुलती एक तरकारी) खाई वोह हमारी मस्जिद के क़रीब हरगिज़ न आए। (مُسلِم،کتاب المساجد،باب نهی من اکل۔۔۔الخ، ص۲۸۲، حدیث ٥٦٤) और फ़रमाया : अगर खाना ही चाहते हो तो पका कर उस की **बू** दूर कर लो।

(ابوداؤد،کتاب الاطعمة،باب فی اکل الثوم،۳/۵۰۶، حدیث:۳۸۲۷)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी प्याज़ व लह्सन खाना ह़राम नहीं बल्कि खा कर बदबूदार मुंह लिये मस्जिद में आना ह़राम है। ख़्वाह वहां नमाज़ी हों या न हों क्यूंकि फ़िरिश्ते हर वक़्त रहते हैं। "अगर खाना ही चाहते हो तो पका कर उस की **बू** दूर कर लो" की वज़ाह़त में मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : ताकि उन की बू जाती रहे क्यूंकि बदबू ही मुमानअ़त की वज्ह है। पहले अ़र्ज़ किया जा चुका है कि येह हुक्म हर मस्जिद का है, बल्कि हर दीनी मजलिस में इस का ख़याल रखा जाए।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 452)

मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मस्जिद में कच्चा लह्सन प्याज़ खाना या खा कर जाना जाइज़ नहीं जब तक **बू** बाक़ी हो कि फ़िरिश्तों को इस से तक्लीफ़ होती है येही हुक्म हर उस चीज़ का है जिस में बदबू हो जैसे गन्दना (येह लह्सन से मिलती जुलती तरकारी है) मूली, कच्चा गोश्त, मिट्टी का तेल, वोह दिया सलाई जिस के रगड़ने में बू उड़ती हो, रियाह़ ख़ारिज करना वग़ैरा वग़ैरा। जिस को **गन्दा दहनी** का आ़रिज़ा (या'नी मुंह से बदबू आने की बीमारी) या कोई बदबूदार ज़ख़्म हो या कोई बदबूदार दवा लगाई हो तो जब तक बू मुन्क़ते़अ़ (या'नी ख़त्म) न हो उस को मस्जिद में आने की मुमानअ़त है। (बहारे शरीअ़त, 1 / 648)

www.dawateislami.net

कच्ची प्याज़ वाले कचूमर और राइते से मोहतात रहिये

कच्ची प्याज़ वाले चने, छोले, राइते और कचूमर नीज़ कच्चे लहसन वाले अचार चटनी वग़ैरा खाने से नमाज़ के औक़ात में परहेज़ कीजिये । बा'ज़ औक़ात कबाब समूसे वग़ैरा में भी कच्ची प्याज़ और कच्चे लहसन की बू महसूस होती है लिहाज़ा नमाज़ से पहले इन को भी न खाइये । ऐसी बू वाली चीज़ें मस्जिद में लाने की भी इजाज़त नहीं ।

बदबूदार मुंह ले कर मुसलमानों के मजमए में जाने की मुमानअ़त

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुसलमानों के मजमओं, दर्से क़ुरआन की मजलिसों, उलमाए दीन व औलियाए कामिलीन की बारगाहों में बदबूदार मुंह ले कर न जाओ । मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तक मुंह में **बदबू** रहे घर में ही रहो, मुसलमानों के जल्सों, मजमओं में न जाओ । हुक्क़ा पीने वाले, तम्बाकू वाला पान खा कर कुल्ली न करने वालों को इस से इब्रत पकड़नी चाहिये । फ़ुक़हा फ़रमाते हैं : जिसे **गन्दा दहनी** की बीमारी हो उसे मस्जिदों की हाज़िरी मुआफ़ है । (मिरआतुल मनाजीह, 6 / 25)

गोश्त, मछली बेचने वाले

गोश्त या मछली बेचने वाले के लिबास में सख़्त **बदबू** होती है लिहाज़ा इन को चाहिये कि फ़ारिग़ हो कर अच्छी तरह नहाएं, साफ़ लिबास जैबे तन फ़रमाएं, ख़ुश्बू लगाएं और फिर मस्जिद में आएं । नहाना और ख़ुश्बू लगाना शर्त नहीं सिर्फ़ मश्वरतन अ़र्ज़ किया है, कोई भी ऐसी तरकीब करें कि बदबू मुकम्मल तौर पर ज़ाइल (या'नी दूर) हो जाए ।

(मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये, स. 15)

www.dawateislami.net

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ुश्बूदार पसीने का वासिता ! हमारे ज़ाहिरो बातिन को हर क़िस्म की बदबू से पाक फ़रमा कर मुअ़त्तर व मुअ़म्बर फ़रमा दे । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

वाह ऐ इत्रे ख़ुदा साज़ महकना तेरा

ख़ूब रू मलते हैं कपड़ों में पसीना तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 15)

﴾29﴿ फ़िरिश्तों को तक्लीफ़ न दीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

اِنَّ الْمَلٰٓئِكَةَ تَتَاَذّٰى مِمَّا يَتَاَذّٰى بِهٖ بَنُوْ اٰدَمَ मलाइका हर उस शै से अज़िय्यत पाते हैं जिस से बनी आदम अज़िय्यत पाते हैं ।

(مسلم،کتاب المساجد،باب نهی من اکل ثوما۔۔۔الخ،ص۲۸۲،حدیث:٥٦٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी अगर मस्जिद इन्सानों से ख़ाली भी हो तब भी वहां बदबू ले कर न जाए कि वहां रह़मत के फ़िरिश्ते हर वक़्त रहते हैं इस की बदबू से ईज़ा पाएंगे । ख़याल रहे कि मस्जिद के फ़िरिश्ते रह़मत के फ़िरिश्ते हैं, इन की त़बीअ़त नाज़ुक और इन का एह़तिराम ज़ियादा है, लिहाज़ा ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि फ़िरिश्ते तो हर इन्सान के साथ हर वक़्त रहते हैं तो चाहिये कि कभी येह चीज़ें न खाए क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने साथी फ़िरिश्तों की त़बीअ़त और क़िस्म

www.dawateislami.net

की बनाई है । उ़लमा फ़रमाते हैं कि मुसलमानों के किसी मजमए़ में बदबूदार मुंह या कपड़े ले कर न जाए ताकि लोगों को ईज़ा न पहुंचे ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 438)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले दोनों बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों) पर इस से ज़ियादा कोई बात शदीद नहीं कि वोह जिस शख़्स पर मुक़र्रर हैं उसे इस ह़ाल में नमाज़ पढ़ता देखें कि उस के दांतों के दरमियान कोई चीज़ हो ।

(معجم کبیر، ۱۷۷/٤، حدیث: ٤٠٦١)

फ़िरिश्तों को तक्लीफ़ देना

आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 1 के सफ़ह़ा नम्बर 839 पर फ़रमाते हैं : मुतअ़द्दिद अह़ादीस में इरशाद हुवा है कि जब बन्दा नमाज़ में खड़ा होता है फ़िरिश्ता अपना मुंह उस के मुंह पर रखता है । येह जो कुछ पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै इस के दांतों में होती है मलाइका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती । (फ़तावा रज़विय्या, 1 / 839)

मिस्वाक कर लिया करे

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : तुम में से जब कोई रात को उठ कर नमाज़ पढ़ना चाहे तो मिस्वाक कर लिया करे ! क्यूंकि जब कोई नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता

www.dawateislami.net

अपना मुंह उस के मुंह पर रख देता है, और उस के मुंह से जो भी निकलता है फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है।

(شعب الایمان،باب فی تعظیم القرآن،فصل فی السواك لقرأة القرآن،۲/ ۳۸۱، حدیث:۲۱۱۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿30﴾ किसी की जगह या सीट पर क़ब्ज़ा जमाना

बसा औक़ात ऐसा होता है कि कोई महफ़िल में से उठ कर थोड़ी देर के लिये कोई चीज़ लेने गया तो दूसरा फ़ौरन उस की जगह पर क़ब्ज़ा जमा लेता है हालांकि वोह जगह उठने वाले की थी लेकिन वोह बेचारा मुंह देखता रह जाता है, इसी तरह ट्रेन या बस में किसी ने अपनी सीट रिज़र्व (Reserve) करवाई होती है लेकिन दूसरा शख़्स उस पर बिराजमान हो जाता है, जब उसे सीट ख़ाली करने की दरख़्वास्त की जाए तो वोह टाल मटोल से काम लेता है जिस पर सीट बुक करवाने वाले को काफ़ी परेशानी होती है, बसा औक़ात तू तू, मैं मैं तक बल्कि हाथापाई तक नौबत जा पहुंचती है और बिल आख़िर उसे सीट ख़ाली करवाने के लिये अमले का सहारा लेना पड़ता है।

अपनी जगह का ज़ियादा हक़्दार कौन ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **है :** जो शख़्स अपनी जगह से उठ कर जाए और फिर वापस आए तो वोही उस का ज़ियादा हक़दार है।

(مسلم،کتاب السلام،باب اذا قام۔۔۔الخ،ص۱۱۹۹،حدیث:۲۱۷۹)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह इस सूरत में है कि जाने वाला अपनी जगह कोई निशानी रख गया हो जिस से पता लगे कि वोह लौट कर आएगा या कोई और अ़लामत हो । (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 371)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू ज़करिया यह़्या बिन शरफ़ नववी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : हमारे उ़लमा फ़रमाते हैं : येह ह़दीस उस शख़्स के बारे में है जो मस्जिद वग़ैरा में मसलन नमाज़ के लिये बैठे और फिर वापस आने के इरादे से वहां से जाए मसलन वुज़ू करने या किसी मा'मूली काम के लिये जा कर वापस आए तो उस जगह के लिये उस की ख़ुसूसिय्यत ख़त्म न होगी बल्कि वापस आने पर वोही शख़्स उस नमाज़ के लिये उस जगह का ह़क़दार होगा । अगर उस मक़ाम पर कोई और बैठ गया हो तो उसे येह ह़क़ ह़ासिल है कि उसे वहां से उठा दे और बैठने वाले को वहां से हट जाना चाहिये । अपनी जगह से उठने वाला उस जगह जानमाज़ वग़ैरा छोड़ कर उठे या वैसे ही जाए दोनों सूरतों में वोही उस जगह का ज़ियादा ह़क़दार है । (شرح مسلم للنووی، جزء:١٤، ٧/١٦١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾31﴿ गाड़ी पर स्क्रेच डालना

गली में खड़ी कार या जीप बिल ख़ुसूस नई गाड़ी पर चाबी या किसी नोकदार चीज़ से चोरी छुपे स्क्रेच (लकीर, Scratch) डाल देने में बा'ज़ों को बड़ा मज़ा आता है लेकिन मालिक का दिल मुरझा जाता है

www.dawateislami.net

क्यूंकि स्क्रेच की सूरत में गाड़ी की क़ीमत में भी कमी हो जाती है और वोह लकीरें बुरी भी दिखाई देती हैं। ऐसा करने वाले ग़ौर कर लें कि उस का हिसाब वोह बरोज़े महशर क्यूं कर दे पाएंगे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿32﴾ गलियों में क्रिक्केट, फुटबॉल वग़ैरा खेलना

छुट्टी के दिन से पहले वाली रात गली महल्ले को मैदान समझ कर क्रिकेट, फुटबॉल वग़ैरा खेल कर, शोर मचा कर महल्ले वालों की नींद और अपना वक़्त बरबाद करने वालों को येह तफ़रीह दिखाई देती है लेकिन मरीज़ों, दूध पीते बच्चों के आराम का उन्हें कोई ख़याल नहीं होता और न ही पढ़ाई करने वाले तलबा के ता'लीमी नुक़्सान का एहसास होता है, राह चलते मुसाफ़िर और गाड़ियां भी उन से मुतअस्सिर होती हैं, घरों के शीशे भी महफ़ूज़ नहीं रहते। इन सब की हक़ तलफ़ी का वबाल मेच के खिलाड़ियों और उस की इन्तिज़ामिया पर होगा।

दिन लहव में खोना तुझे शब सुब्ह तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 111)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿33﴾ पान की पिचकारी

नाक़िस पान गुटके के तिब्बी नुक़्सानात अपनी जगह लेकिन इस का ख़म्याज़ा दूसरों को भी भुगतना पड़ता है जब येह पान गुटका खाने के

www.dawateislami.net

शौक़ीन इन के दरवाज़े, सीढ़ियों को अपने थूक से लाल कर देते हैं, फिर जहां एक बार कोई पान थूक दे दूसरों को गोया इजाज़त नामा मिल जाता है वोह भी उसी के नक़्शे क़दम पर चलते हुए वहीं थूकते हैं और चन्द दिनों में वोह जगह कचरा कूंडी का मन्ज़र पेश करने लगती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾34﴿ इस्तिन्जा ख़ाने का इस्ति'माल

बा'ज़ लोग सफ़ाई पसन्द न होने की वज्ह से दूसरों के लिये भी तक्लीफ़ देह बन जाते हैं, मसलन इस्तिन्जा ख़ाने में जाएंगे तो उस के फ़र्श पर अपने गन्दे जूतों के निशानात छोड़ आएंगे, कमोड या (WC) में ह़स्बे ज़रूरत पानी बहा कर फ़ुज़ला नहीं बहाएंगे, साबुन से हाथ धोएंगे तो अपने हाथों की मेल साबुन पर लगी छोड़ आएंगे, ऐसे में इन के बा'द इस्तिन्जा ख़ाने (बिलखुसूस अ़वामी इस्तिन्जा ख़ाने) का रुख़ करने वाले को घिन आती है लेकिन वोह बेचारा कुछ बोल नहीं सकता, ऐ काश! हमें नज़ाफ़त पसन्दी नसीब हो जाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾35﴿ ग़लत़ पार्किंग

बा'ज़ लोग किसी की गाड़ी के पीछे इस त़रह़ गाड़ी पार्क (Park) कर देते हैं कि दूसरी गाड़ी का वहां से निकलना तक़रीबन नामुमकिन हो जाता है, बा'ज़ औक़ात तो ग़लत़ पार्किंग किसी की जान जाने का सबब भी बन जाती है कि जिस की गाड़ी फंस गई उस ने मरीज़ के लिये इमरजन्सी

www.dawateislami.net

दवाई ले कर जानी थी, या उसे अचानक घर पर किसी हादिसे की इत्तिलाअ़ मिली लेकिन वोह निकल न सका और घर पर न पहुंचने की वज्ह से जानी नुक़्सान हो गया या किसी त़ालिबे इल्म को इम्तिहान देने या नोकरी के मुतलाशी को इन्टरव्यू के लिये पहुंचना था, किसी को स्टेशन तो किसी को ऐरपोर्ट पहुंचना था लेकिन वोह वक़्त पर न पहुंच सका और ट्रेन या जहाज़ छूट गया, इस का ज़िम्मेदार कौन ? साफ़ ज़ाहिर है ग़लत़ पार्किंग करने वाला !!! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें दूसरों का एह़सास करने वाला बनाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿36﴾ बिला ज़रूरत फ़ोन या एस एम एस करना

बा'ज़ों को न अपना वक़्त अ़ज़ीज़ होता है न दूसरों का वक़्त ज़ाएअ़ होने की परवाह होती है, चुनान्चे, वोह वक़्त बे वक़्त किसी को फ़ोन या एस एम एस करते रहते हैं, सामने वाला फ़ोन न उठाए तो मुसलसल फ़ोन करेंगे येह सोचे बिग़ैर कि हो सकता है वोह सोया हो या इस्तिन्जा ख़ाने में हो या नमाज़ पढ़ रहा हो या किसी और अहम काम में मसरूफ़ हो। बा'ज़ तो नींद भरी आवाज़ सुन कर भी भोलेपन से पूछते हैं कि मैं ने आप को डिस्टर्ब तो नहीं कर दिया ? फ़ोन सुनने वाला भी मुरव्वत में ना बोल देता है ह़ालांकि अधूरी नींद से किसी को जगाने में राह़त मिलती है या कुल्फ़त (या'नी तक्लीफ़) ? इस का फ़ैसला अपने दिल से ले लीजिये। फिर गुफ़्तगू का सलीक़ा भी किसी किसी को आता है एक मिनट की बात

www.dawateislami.net

करने में दस मिनट लगा देने वालों की भी एक ता'दाद है फिर भी येह शिक्वा करते हैं कि लोग हमारा फ़ोन नहीं उठाते।

आप ही अपनी अदाओं पे ज़रा ग़ौर करें

हम अगर अ़र्ज़ करेंगे तो शिकायत होगी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾37﴿ ऊपर से कोई चीज़ फेंकना

ऊपर की मन्ज़िलों में रहने वाले अपने घर का कूड़ा करकट दुरुस्त अन्दाज़ में ठिकाने लगाने के बजाए खिड़की से ही गली में फेंक देते हैं जिस से गुज़रने वालों को तक्लीफ़ होती है, बा'ज़ औक़ात तो वोह कूड़ा बल्कि बच्चों का इस्ति'माल शुदा डाइपर (Diaper) ऐन उस वक़्त फेंका जाता है जब नीचे से कोई गुज़र रहा होता है, उस पर जो गुज़रती है वोही बता सकता है। ऐसे में अगर पता चल जाए कि येह किस खिड़की से आया है तो झगड़े बल्कि मार कटाई की नौबत भी आ जाती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾38﴿ कचरा कूंडी बना लेना

बड़े शहरों में इन्तिज़ामिया की त़रफ़ से रिहाइशी अ़लाक़े से थोड़ी दूर एक जगह मुक़र्रर होती है कि आस पास के लोग अपने घरों का कचरा वहां डाल दें फिर वहां से इन्तिज़ामिया की गाड़ियां उस कचरे को ठिकाने लगाने के लिये ले जाती हैं, लेकिन बा'ज़ लोग ऐन रोड (Road) के दरमियान या किसी के घर के सामने कचरे का ढेर लगाना शुरूअ़ कर देते

www.dawateislami.net

हैं, एक के बा'द दूसरा और फिर तीसरा भी अपने घर का कचरा वहां फेंकता है तो गोया लाइन लग जाती है, वोही जगह अ़वामी तौ़र पर कचरा कूंडी क़रार पाती है, लेकिन जिस के घर के बाहर येह कारवाई की जाती है वोह किस कर्ब व तक्लीफ़ से गुज़रता है इस का ह़ाल वोही बता सकता है जिस पर येह गुज़री हो।

हिकायत : 44 पालतू बिल्ला घर में ही दफ़्ना दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़य्यान तैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : मेरे वालिद ने बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पालतू बिल्ला मर गया तो आप ने मुझे हुक्म दिया कि उसे घर के सेह़न में दफ़्ना दो ! मैं ने दफ़्ना दिया, उस को फेंकने की कोई अ़वामी जगह न थी, लिहाज़ा मुसलमानों को तक्लीफ़ से बचाने के लिये घर ही में दफ़्न करवा दिया। (حلية الاولياء، شريح بن الحارث الكندى، ٤/١٤٨، رقم : ٥٠٧١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

39 बिन मांगे मश्वरे देना

किसी भी अहम काम के लिये मश्वरा कर लेना बहुत मुफ़ीद है, इस से ग़लती और नाकामी से काफ़ी ह़द तक बचा जा सकता है, लेकिन बा'ज़ों को मश्वरा लेने की नहीं सिर्फ़ देने की आ़दत होती है, जहां जाते हैं बिन मांगे मश्वरों की पिटारी खोल कर बैठ जाते हैं, बोल बोल कर दूसरों के लिये ज़ेह्नी अज़िय्यत का सबब बनते हैं और अपना वक़ार भी गिराते हैं। अपनी इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ इसी में है कि जब तक हम से मश्वरा मांगा न जाए, लब कुशाई न करें। अधूरी बात सुन कर मश्वरा देने वाले को अक्सर

www.dawateislami.net

आईनए नदामत देखना पड़ता है, दलील के बिग़ैर मश्वरा ऐसा ही है जैसे कमान के बिग़ैर तीर, जिस शो'बे का तजरिबा न हो उस के बारे में मश्वरा देने से गुरैज़ कीजिये, गाड़ी ख़राब हो जाए तो कार मिकेनिक से मश्वरा किया जाता है न कि डॉक्टर से, मश्हूर है : لِكُلِّ فَنٍّ رِجَالٌ या'नी हर फ़न के लिये माहिरीन होते हैं। मश्वरा देने वाला येह बात भी ज़ेह्न में रखे कि मश्वरा लेने वाले को शरअ़न येह ह़क़ ह़ासिल है कि वोह उस की राए से इत्तिफ़ाक़ न करे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿40﴾ किसी के घरेलू मुआ़मलात में दख़्ल अन्दाज़ी करना

आज सालन में क्या पकेगा ? ईद के कपड़े कब और कितने ख़रीदने हैं ? क़ुरबानी का जानवर छोटा (या'नी बकरा वग़ैरा) लेना है या बड़ा (या'नी बेल वग़ैरा) ? घर में रंगो रोग़न कब और कौन सा करवाना है ? फ़्रीज छोटा लेना है या बड़ा ? बच्चों को जूते किस त़रह़ के ले कर देने हैं ? बच्चों को, इन की अम्मी को कितनी जेब ख़र्ची देनी है ? सौदा सलफ़ किस दुकान से लाना है ? अल ग़रज़ इस त़रह़ के दरजनों मुआ़मलात ज़ाती नौइय्यत के होते हैं जिन्हें इन्सान अपने मुआ़शी और समाजी ह़ालात के मुत़ाबिक़ अन्जाम देता है लेकिन कुछ लोगों को इस त़रह़ के ज़ाती मुआ़मलात में दख़्ल अन्दाज़ी करने की आ़दत होती है जो सामने वाले को अक्सर नागवार गुज़रती है लेकिन वोह इस का मुरव्वतन इज़्हार नहीं कर पाता, कभी वोह जी कड़ा कर के दिल की बात ज़बान पर भी ले आता है कि आप अपने काम से काम रखिये येह हमारा ज़ाती मुआ़मला है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾41﴿ हुजूम में धक्के मारना

किसी भी अ़वामी मक़ाम मसलन स्टेशन, ह़ज, उ़र्स और दीगर मज़्हबी इजतिमाआ़त वग़ैरा में रश में फंस जाना परेशान कुन होता है लेकिन कुछ लोग इस परेशानी के आ़लम में भी लोगों को परेशान करने से बाज़ नहीं आते और दूसरों को धक्के मारना शुरूअ़ कर देते हैं, ह़ालांकि सब अपनी नॉर्मल (Normal) रफ़्तार में चलते रहें तो भीड़ से निकल ही आते हैं लेकिन इन बे सब्रों और जल्दबाज़ों की वज्ह से कई मरतबा भगदड़ भी मच जाती है जिस से लोग ज़ख़्मी होते हैं बल्कि बा'ज़ तो इन्तिक़ाल भी कर जाते हैं।

﴾42﴿ वॉल चॉकिंग करना, इश्तिहार लगाना

किसी भी कारोबारी शै या मज़्हबी इजतिमाअ़ की तश्हीर की अपनी अहम्मिय्यत होती है लेकिन इस तश्हीर के लिये किसी की दीवार पर बिला इजाज़त चॉकिंग कर के उसे बदनुमा कर देने, गूंद से काग़ज़ी इश्तिहार चिपका कर दीवार ख़राब कर देने को कोई भी मुफ़्तिये इस्लाम जाइज़ नहीं कहेगा। लेकिन हमारे मुआ़शरे में येह काम भी अपना ह़क़ समझ कर किया जाता है, अगर मकान या फ़ेक्ट्री का मालिक अपनी दीवार पर चॉकिंग से मन्अ़ करने की जुरअत कर ले तो उसे बुरा भला कहा जाता है बल्कि भयानक नताइज की धमकियां दी जाती हैं। हम में से हर एक को अपने आप से येह सुवाल करना चाहिये कि क्या हमें येह पसन्द होगा कि कोई हमारी दीवार पर चॉकिंग कर जाए, यक़ीनन नहीं तो दूसरों के लिये भी येही ज़ेह्न रखिये और इस की ह़क़ तलफ़ी से बचिये।

www.dawateislami.net

हिकायत : 45

दीवार की कीचड़

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : **इमामे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم अपने एक मक़रूज़ मजूसी (या'नी आतश परस्त) के यहां क़र्ज़ा वुसूल करने के लिये तशरीफ़ ले गए। इत्तिफ़ाक़ से उस के मकान के क़रीब आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के जूतों में कीचड़ लग गई, कीचड़ छुड़ाने के लिये जूते को झाड़ा तो कुछ कीचड़ उड़ कर मजूसी की दीवार से लग गई, परेशान हो गए कि अब क्या करूं ! कीचड़ साफ़ करता हूं तो दीवार की मिट्टी भी उखड़ेगी और साफ़ नहीं करता तो दीवार ख़राब हो रही है। इसी शशो पंज में दरवाज़े पर दस्तक दी, मजूसी ने बाहर निकल कर जब इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم को देखा तो उस ने क़र्ज़ की अदाएगी के सिलसिले में टाल मटोल शुरूअ़ कर दी। इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने क़र्ज़ का मुतालबा करने के बजाए दीवार पर कीचड़ लग जाने की बात बता कर निहायत ही लजाजत (या'नी आ़जिज़ी) के साथ मुआ़फ़ी मांगते हुए इरशाद फ़रमाया : मुझे येह बताइये कि आप की दीवार किस त़रह़ साफ़ करूं ? इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़मले में बे क़रारी और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ देख कर मजूसी बेह़द मुतअस्सिर (مُ۔تَ۔اَث۔ثِر) हुवा और कुछ इस त़रह़ बोला : ऐ मुसलमानों के इमाम ! दीवार की कीचड़ तो बा'द में भी साफ़ होती रहेगी, पहले मेरे **दिल की कीचड़** साफ़ कर के मुझे मुसलमान बना दीजिये। चुनान्चे, वोह मजूसी इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का तक़्वा देख कर ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम हो गया। **(تفسیر کبیر ۱۰/۲۰٤)**

www.dawateislami.net

जो बे मिसाल आप का है तक़्वा, तो बे मिसाल आप का है फ़तवा
हैं इल्मो तक़्वा के आप संगम, इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 573)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿43﴾ कुरबानी के जानवर के ख़ून वग़ैरा से किसी की दीवार वग़ैरा ख़राब करना

ईदे कुरबान के मौक़अ पर जानवर की कुरबानी देना बड़ी सआदत की बात है लेकिन इस दौरान हुक़ूक़ुल इबाद का ख़याल रखना बेहद ज़रूरी है, बा'ज़ लोग किसी के घर के क़रीब जानवर ज़ब्ह करते हैं और बे एहतियाती की वज्ह से जानवर के ख़ून के छींटे उस की दीवार पर जा पड़ते हैं, जानवर के जिस्म से निकलने वाली आलाइशें भी बदबू और गन्दगी फैलाती हैं लेकिन कुरबानी करने वाला इस पर शर्मिन्दा होता है और न मा'ज़िरत करता है।

हिकायत : 46 जब पड़ोसी की दीवार पर ख़ून के छींटे पड़े

शैखे़ तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक मदनी मुज़ाकरे में इरशाद फ़रमाया :(1) "दो साल पहले मेरे बेटे (हाजी उ़बैद रज़ा) के यहां कुरबानी का बड़ा जानवर पड़ोसी के घर के पास बंधा हुवा था, उस के ज़ब्ह के वक़्त ख़ून उड़ कर दीवारों पर फैल गया, मेरी तवज्जोह गई तो बड़ी तश्वीश हुई और मैं ने कहा कि अब तो हम पर लाज़िम है कि इस से तरकीब बनाएं कि मुआफ़ भी कर दो और रंग भी कर देते हैं। फिर मैं ने अपने बेटे को ही बोला

(1)....ज़रूरतन जुम्लों की नोक पलक संवारी गई है।

www.dawateislami.net

कि तुम जा कर उस के मालिक से तरकीब बना लो, चुनान्चे, मेरे बेटे ने राबिता़ किया तो उस ने कह दिया कि कोई बात नहीं।''

(मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !) अगर किसी की दीवार पर हमारी त़रफ़ से नुक़्सान हो जाए तो उस की तलाफ़ी ज़रूरी है, उस से मुआ़फ़ी मांगिये, अगर वोह इस का ख़र्चा नहीं लेता, रंग चूना नहीं लेता, मुआ़फ़ कर देता है तो अच्छी बात है, अगर वोह मुत़ालबा करता है कि तुम पहले जैसा ही बना दो तो बनाना पड़ेगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿44﴾ नमाज़ी या सोने वाले के पास बुलन्द आवाज़ से बातें करना

बा'ज़ इस्लामी भाई किसी नमाज़ी या सोने वाले के पास इतनी ऊंची आवाज़ में बातें करना शुरूअ़ कर देते हैं जिस की वज्ह से उस की नमाज़ या नींद में ख़लल आता है, इस त़रफ़ उ़मूमन हमारी तवज्जोह नहीं होती, इस से बचना चाहिये।

हिकायत : 47 बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू करने वालों को समझाया

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक मरतबा नमाज़ पढ़ रहे थे तो क़रीब खड़े हुए बा'ज़ इस्लामी भाइयों ने ऊंची आवाज़ में गुफ़्तगू शुरूअ़ कर दी, जिस से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को नमाज़ में तश्वीश हो रही थी, कुछ ही देर में वोह इस्लामी भाई वहां से हट गए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सलाम फेरने के बा'द उन को जम्अ़ कर के अह़सन त़रीक़े से समझाया तो उन इस्लामी भाइयों ने फ़ौरन तौबा कर ली।

www.dawateislami.net

हिकायत : 48

इस्लाह फ़रमा दी

इसी त़रह़ का एक और वाक़िआ़ पेश आया कि एक इस्लामी भाई सोए हुए थे और क़रीब ही दूसरे इस्लामी भाई मदनी मुन्ने या मुन्नी से खेल रहे थे, जिस से आवाज़ें पैदा हो रही थीं, इस पर भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उस इस्लामी भाई को शरई मस्अला समझाया तो उन्हों ने हाथों हाथ तौबा की।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿45﴾ वक़्त पर दा'वत शुरूअ़ न करना

दा'वत एक दूसरे से महब्बत बढ़ाने का ज़रीआ़ है लेकिन येह भी उस वक़्त बाइसे तक्लीफ़ बन जाती है जब वक़्त पर शुरूअ़ न हो, कई इस्लामी भाइयों का तजरिबा होगा कि शादी वग़ैरा की दा'वत का वक़्त 10 बजे का दिया लेकिन रात के 12 बजे जा कर शुरूअ़ होती है, वक़्त पर पहुंचने वाले मेहमान बड़ी आज़माइश में आ जाते हैं कि रात का खाना घर से खा कर जाएं तो दा'वत में शिर्कत किस बात की? और न खाने की सूरत में भूके बैठे मेज़बान की तसल्लियां सुनते रहते हैं कि जी बस अभी फुलां का इन्तिज़ार है वोह आ जाएं तो दा'वत शुरूअ़ हो जाएगी, कई घंटे वक़्त ज़ाएअ़ होने के बा'द रात के एक बजे फ़ारिग़ हो कर दो तीन बजे घर पहुंचने वाला सुब्ह़ अपनी मुलाज़मत या कारोबार पर किस त़रह़ जाए येह अलग आज़माइश है। कई लोग इसी वज्ह से

www.dawateislami.net

दा'वत में शिर्कत से मा'ज़िरत कर लेते हैं लेकिन कुछ दा'वतें ऐसी होती हैं कि वोह इन्कार नहीं कर सकते मगर ताख़ीर की वज्ह से तक्लीफ़ में आ जाते हैं। काश ! मेज़बान और मेहमान वक़्त की पाबन्दी करें तो किसी को तक्लीफ़ न पहुंचे।

हिकायत : 49

गोश्त भुनने की आवाज़

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى लिखते हैं : एक शख़्स ने अपने हां किसी दोस्त को बुलाया, लेकिन उसे खाने को कुछ न दिया, बैठे बैठे अ़स्र का वक़्त हो गया, यहां तक कि उसे शदीद भूक लग गई और उस पर जुनूनी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई। मेज़बान ने सितार (गिटार) लिया और दोस्त से कहा : तुम कौन सी आवाज़ सुनना पसन्द करोगे ? उस ने कहा : गोश्त भुनने की आवाज़। (احیاء علوم الدین، ۳/۳۱۶)

﴾46﴿ ट्रेन-बस में सफ़ाई का ख़याल न रखना

बा'ज़ लोग अपने घर में सफ़ाई पसन्द होते हैं और बाहर भी, जब कि कुछ लोग घर में तो सफ़ाई रखना पसन्द करते हैं लेकिन बाहर गन्दगी फैलाने में कोई ह़रज नहीं समझते। बाज़ार, बस, ट्रेन इन की इस आ़दत का निशाना बनते हैं, फलों की बाक़ियात, मूंगफली के छिलके, इस्ति'माल शुदा टिशू पेपर, बचा हुवा पानी फैंक कर दूसरे मुसाफ़िरों के लिये मुसीबत खड़ी कर देते हैं। ट्रेन का वॉशरूम इस्ति'माल करेंगे तो इस अन्दाज़ से कि उन के बा'द वहां जाने वाले को घिन आएगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नज़ाफ़त पसन्दी नसीब करे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

﴾47﴿ घरेलू इस्ति'माल की शै उस की जगह पर न रखना

नेल कटर (नाखुन काटने का आला) कंघी, जूतों की पॉलिश, इज़ार-बन्द दानी, बैरूनी दरवाज़े की चाबी, छुरी, माचिस जैसी कई घरेलू अश्या मुश्तरिका इस्ति'माल में आती हैं, इन को इस्ति'माल करने के बा'द मुक़र्ररा जगह न रखा जाए तो दूसरों के लिये परेशानी का बाइस होता है।

﴾48﴿ क़र्ज़ख़्वाह को बिला वज्ह टालना

क़र्ज़दार को चाहिये कि वा'दे के मुताबिक़ क़र्ज़ लौटा दे, बिग़ैर किसी मजबूरी के येह कहना : कल दूंगा, पहली तारीख़ को ले लेना, शाम को ले लेना, थोड़ी देर तक आना। अल ग़रज़ क़र्ज़ख़्वाह को बिला वज्ह चक्कर लगवाना अच्छी बात नहीं।

हिकायत : 50

अब मेरी रक़म भी लौटा दो

निगराने शूरा हाजी मुहम्मद इमरान अत्तारी سلمہ الغنی का कुछ यूं बयान है कि मैं एक शख़्स के पास बैठा था, इस दौरान उसे किसी का फ़ोन आया कि मैं फ़ेमेली समेत हज पर जा रहा हूं, फ़ोन वुसूल करने वाले ने मुबारक देने के बा'द बड़ी नर्मी से कुछ यूं कहा कि यार आप फ़ेमेली समेत उमरे पर जाते हो, हज भी कर आते हो, काफ़ी मुद्दत गुज़र गई अब मेरी रक़म (जो बड़ी अमाऊन्ट Amount) में थी) भी लौटा दो।

www.dawateislami.net

क़र्ज़ की अदाएगी में अच्छी निय्यत का सिला

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने क़र्ज़ लिया और वोह उसे अदा करने का इरादा रखता है बल्कि उसे अदा करने के मुआ़मले में ह़रीस है फिर वोह उसे अदा किये बिग़ैर मर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि उस के क़र्ज़ख़्वाह को अपने पसन्दीदा इन्आ़मात के ज़रीए राज़ी कर दे और मरने वाले की मग़फ़िरत फ़रमा दे और जिस ने क़र्ज़ लिया और वोह उसे अदा करने का इरादा नहीं रखता है फिर वोह उसे अदा किये बिग़ैर मर गया तो उस से पूछा जाएगा, क्या तू येह गुमान करता था कि हम फुलां को तुझ से उस का पूरा ह़क़ ले कर न देंगे ? फिर उस की नेकियों में से कुछ नेकियां ले ली जाएंगी और क़र्ज़ ख़्वाह की नेकियों में क़र्ज़ के बदले के तौ़र पर डाल दी जाएंगी और अगर उस के पास नेकियां न हुईं तो क़र्ज़ख़्वाह के गुनाह उस के नामए आ'माल में डाल दिये जाएंगे। (الترغیب والترھیب،۲/۳۷۲،رقم:۱۲)

49 मक़रूज़ को धमकियां देना

बा'ज़ औक़ात क़र्ज़दार वक़्त पर क़र्ज़ अदा नहीं कर सकता क्यूंकि बेचारे के पास वाक़ेई इतनी रक़म ही नहीं होती, ऐसे में क़र्ज़ ख़्वाह को सब्र का दामन थामे रखना चाहिये, लेकिन बहुत से क़र्ज़ ख़्वाह ऐसे मवाक़ेअ़ पर गालम गलोच, धमकियों और मारपीट पर उतर आते हैं, बा'ज़ तो मक़रूज़ को जान से मारने की धमकी देते हैं बल्कि अ़मलन उसे क़त्ल भी कर देते हैं जिस पर मक़रूज़ अपनी जान और वोह अपनी रक़म से महरूम हो जाते हैं और क़त्ल की सज़ा अलग मिलती है। कुछ क़र्ज़ख़्वाह धमकियां

www.dawateislami.net

दे दे कर क़र्ज़दार को इतनी टेन्शन में मुब्तला कर देते हैं कि मायूसी के आ़लम में वोह ख़ुदकुशी जैसी ह़राम मौत को गले लगाने पर तय्यार हो जाता है, काश ! वोह येह समझता कि ख़ुदकुशी से जान छूटती नहीं मज़ीद फंस जाती है । ह़दीसे पाक में है : "जो शख़्स जिस चीज़ के साथ **ख़ुदकुशी** करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अ़ज़ाब** दिया जाएगा ।" (بُخارِی، ٤/ ٢٨٩، حدیث: ٦٦٥٢)

क़र्ज़ का सवाब

क़र्ज़ वापस मिलने में ताख़ीर पर क़र्ज़ख़्वाह को चाहिये कि सब्र करे और इस ह़दीस शरीफ़ में बयान कर्दा सवाब का मुस्तह़िक़ बने, चुनान्चे, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब किसी का दूसरे पर दैन (या'नी क़र्ज़) हो और उस की मीआ़द गुज़र जाए तो हर रोज़ उसी क़दर रूपिये की **ख़ैरात का सवाब** मिलता है जितना दैन (या'नी क़र्ज़) है । (شعب الایمان، ٧/ ٥٣٨، حدیث: ١١٢٦١)

हिकायत : 51 इमाम बुख़ारी और एक मक़रूज़

मुह़म्मद बिन अ़ब्बास फ़िरबरी का बयान है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی के पच्चीस हज़ार दिरहम का मक़रूज़ था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़बर मिली कि वोह शख़्स "आमुल" (वादिये जैह़ून की मग़रिबी जानिब एक शहर) आया हुवा है, हम उस वक़्त "फ़िरबर" (वादिये जैह़ून की मशरिक़ी जानिब एक शहर) में थे, हम ने आप से अ़र्ज़ की : आप को "आमुल" पहुंच कर अपना माल वुसूल करना चाहिये । फ़रमाया : हमें उसे डराना,

www.dawateislami.net

धमकाना नहीं चाहिये। मक़रूज़ को मा'लूम हुवा कि आप "फ़िरबर" में हैं तो वोह ख़ुवारिज़्म चला गया, (आमुल से ख़ुवारिज़्म 12 दिन की मसाफ़त पर है।) हम ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की : आप "आमुल" के ह़ाकिम अबू सलमा कुशानी से कहें कि वोह ख़ुवारिज़्म के ह़ाकिम के नाम उस मक़रूज़ को गिरिफ़्तार करने और आप का माल वुसूल करने के लिये एक मक्तूब लिख दे। फ़रमाया : अगर मैं उस से सिफ़ारिशी मक्तूब लिखवाऊंगा तो वोह भी मुझ से सिफ़ारिशी मक्तूब लिखवाने का लालच रखेगा, और मैं दुन्या के बदले दीन कभी नहीं बेचूंगा, हम ने बहुत कोशिश की लेकिन आप न माने, ह़त्ता कि हम ने ख़ुद बिग़ैर इजाज़त "आमुल" के ह़ाकिम से बात कर के मक्तूब लिखवा दिया। जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को पता चला तो बहुत रन्जीदा हुए और फ़रमाया : मुझ पर मेरी ज़ात से ज़ियादा शफ़्क़त न करो ! और "ख़ुवारिज़्म" में अपने एक दोस्त को मक्तूब लिखा कि मक़रूज़ से भलाई के साथ पेश आया जाए ! बा'दे अज़ां मक़रूज़ "आमुल" लौट आया और "मर्व" जाने का इरादा किया। (आमुल से मर्व 6 दिन की मसाफ़त है।) ह़ाकिम को मक़रूज़ की ख़बर पहुंची तो उस ने सख़्ती करना चाही लेकिन आप ने सख़्ती करना पसन्द न फ़रमाया। बिल आख़िर इस बात पर सुल्ह़ हुई कि मक़रूज़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को हर साल 10 दिरहम के ह़िसाब से क़र्ज़ चुकाएगा, लेकिन आप को 10 तो कुजा क़र्ज़ का एक दिरहम तक वापस न मिला। (سیر اعلام النبلاء، ابو عبد الله البخاری، ۱۰/۳۰۶)

﴾50﴿ रिश्ते देखने का अन्दाज़

निकाह़ का रिश्ता क़ाइम करना सिर्फ़ दो अफ़राद को एक दूसरे से वाबस्ता नहीं करता बल्कि दोनों के ख़ानदानों का भी तअ़ल्लुक़ जोड़ता है,

www.dawateislami.net

लिहाज़ा रिश्ते देखने का काम बड़ी एह़तियात़ से किया जाता है लेकिन बा'ज़ लोग इस एह़तियात़ में इतना आगे बढ़ जाते हैं कि उन का अन्दाज़ सामने वाले के लिये तक्लीफ़ देह हो जाता है मसलन जो औ़रतें रिश्ता देखने जाती हैं कभी लड़की को चला कर देखेंगी कि कहीं लंगड़ाती तो नहीं, धूप में ले जा कर उस के गोरे रंग के अस्ली होने का यक़ीन करेंगी बा'ज़ तो ह़द ही कर देती हैं कि मुंह खुलवा कर दांत चेक करती हैं। इस के बा'द भी इतनी मुंह फट होती हैं कि लड़की के सामने ही उस के ऐ़ब गिनवाना शुरूअ़ कर देती हैं कि थोड़ी मोटी है अगर दुब्ली (Smart) होती तो हम कुछ सोचते, क़द छोटा है, रंग सांवला है, ता'लीम कम है, उ़म्र थोड़ी ज़ियादा है वग़ैरा वग़ैरा, इस त़रह़ की सूरते ह़ाल का सामना कभी कभार लड़के वालों को भी करना पड़ता है। रिश्ता पसन्द नहीं आया तो मा'ज़िरत करने का अन्दाज़ भी शाइस्ता और ऐसा नपा तुला होना चाहिये कि जिस में किसी की दिल शिकनी हो न झूट बोलना पड़े।

हिकायत : 52 नफ़्सियाती मरीज़ा बन गई

एक डॉक्टर का बयान है कि एक ख़ातून और उस का ख़ावन्द अपनी जवान बच्ची के इ़लाज-मुआ़लजे के लिये मेरे पास आए। उन्हों ने बताया कि हमारी बच्ची ने एम एस सी किया हुवा है और पूरे ख़ानदान में हंसमुख, मिलनसार, अ़क़्लमन्द मश्हूर थी। एम एस सी करने के बा'द आए रोज़ रिश्ते आना शुरूअ़ हो गए लेकिन सांवली रंगत की वज्ह से जो लोग भी आते कई उसी वक़्त इन्कार कर देते तो कई फ़ोन पर मा'ज़िरत कर देते। रिश्ता देखने वाले बच्ची को इस अन्दाज़ से देखते जैसे उन्हों ने कोई

www.dawateislami.net

भेड़ बकरी ख़रीदनी हो। उन के देखने के अन्दाज़, तीखे सुवालात और फिर इन्कार ने हमारी फूल जैसी बच्ची के दिल को ऐसी ठेस पहुंचाई कि हमारी बच्ची शुरूअ़ शुरूअ़ में खोई खोई रहती फिर उस ने मुकम्मल चुप साध ली हर वक़्त अपने आप को कमरे में क़ैद किया हुवा है खाना भी ज़बरदस्ती खिलाना पड़ता है। ऐसी ह़ालत की वज्ह से हमारी बच्ची दिन ब दिन कमज़ोर हो कर हड्डियों का ढांचा बन गई है। आ़मिलों के पास जाएं तो वोह काले जादू का कह देते हैं, डॉक्टर्ज़ के पास जाएं तो वोह नफ़्सियाती मरीज़ क़रार देते हैं, किसी भी त़रीक़ए इ़लाज से फ़ाएदा नहीं हो रहा। बच्ची के ह़ालात बताते हुए दुख्यारे वालिदैन ने रोना शुरूअ़ कर दिया।

रिश्ते में नेक औ़रत का इन्तिख़ाब किया जाए

उ़म्दा से उ़म्दा बीज भी उसी वक़्त अपने जोहर दिखा सकता है जब उस के लिये उ़म्दा ज़मीन का इन्तिख़ाब किया जाए। मां बच्चे के लिये गोया ज़मीन की ह़ैसिय्यत रखती है, लिहाज़ा बीवी के इन्तिख़ाब के सिलसिले में मर्द को बहुत एह़तियात़ से काम लेना चाहिये कि मां की अच्छी या बुरी आ़दात कल औलाद में भी मुन्तक़िल होंगी। मुतअ़द्दिद अह़ादीसे करीमा में मर्द को नेक, सालिह़ा और अच्छी आ़दात की ह़ामिल पाक दामन बीवी का इन्तिख़ाब करने की ताकीद की गई है चुनान्चे, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये चार चीज़ों को मद्दे नज़र रखा जाता है : (1) उस का माल, (2) ह़सब नसब, (3) ह़ुस्नो जमाल और (4) दीन। फिर फ़रमाया : तुम्हारा हाथ ख़ाक आलूद हो तुम दीनदार औ़रत के ह़ुसूल की कोशिश करो।

(بخاری،کتاب النکاح،باب الاکفاء فی الدین،۳/۴۲۹،حدیث:۵۰۹۰)

www.dawateislami.net

उस ने क़त्ए रेह्मी की

रह्मते दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने अपनी बेटी का निकाह़ किसी फ़ासिक़ से किया उस ने क़त्ए रेह्मी की। (الکامل فی ضعفاء الرجال،الحسن بن محمد، ۳/ ۱۶۵)

बेटी को कहां बियाह रहे हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है : निकाह़ करना औ़रत को कनीज़ बनाना है, लिहाज़ा ग़ौर कर लेना चाहिये कि वोह अपनी बेटी को कहां बियाह रहा है।

(السنن الکبریٰ ،کتاب النکاح ،باب الترغیب فی التزویج، ۷/ ۱۳۳)

हिकायत : 53

तलाशे रिश्ता

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ किरमानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی शाही ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखते थे, लेकिन आप ने ज़ोह्दो तक़्वा इख़्तियार फ़रमाया हुवा था और दुन्यावी मशाग़िल से बहुत दूर हो चुके थे। आप की एक साह़िबज़ादी थीं जो बहुत ह़सीनो जमील और नेक व परहेज़गार थीं, एक दिन उस साह़िबजादी के लिये बादशाहे किरमान ने निकाह़ का पैग़ाम भेजा। आप येह पसन्द न फ़रमाते थे कि मलिका बन कर मेरी बेटी दुन्या की त़रफ़ माइल हो। इस लिये आप ने कहला भेजा कि मुझे जवाब के लिये तीन रोज़ की मोहलत दें। इस दौरान आप मस्जिद मस्जिद घूम कर किसी सालेह़ इन्सान को तलाश करने लगे। दौराने तलाश एक लड़के पर आप की निगाह

www.dawateislami.net

पड़ी जिस के चेहरे पर इबादत व परहेज़गारी का नूर चमक रहा था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से पूछा : "तुम्हारी शादी हो चुकी है?" उस ने नफ़ी में जवाब दिया। फिर पूछा : "क्या ऐसी लड़की से निकाह़ करना चाहते हो जो कुरआने मजीद पढ़ती है, नमाज़ रोज़े की पाबन्द है, ख़ूब सूरत पाकबाज़ और नेक है।" उस ने कहा : "मैं तो एक ग़रीब शख़्स हूं भला मुझ से इन सिफ़ात की ह़ामिल लड़की का रिश्ता कौन करेगा?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं करता हूं, येह दराहिम लो और एक दिरहम की रोटी, एक दिरहम का सालन और एक दिरहम की ख़ुश्बू ख़रीद लाओ।"

नौजवान वोह चीज़ें ले आया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी साह़िबज़ादी का निकाह़ उस पारसा नौजवान के साथ कर दिया। साह़िबज़ादी जब रुख़्सत हो कर शोहर के घर आई तो उस ने देखा कि घर में पानी की एक सुराह़ी के सिवा कुछ नहीं है और उस सुराह़ी पर एक रोटी रखी हुई देखी। पूछा : "येह रोटी कैसी है?" शोहर ने जवाब दिया : "येह कल की बासी रोटी है, मैं ने इफ़्त़ार के लिये रख ली थी।" येह सुन कर कहने लगीं कि मुझे मेरे घर छोड़ आइये। नौजवान ने कहा : "मुझे तो पहले ही अन्देशा था कि शैख़ किरमानी की दुख़्तर मुझ जैसे ग़रीब इन्सान के घर नहीं रुक सकती।" लड़की ने पलट कर कहा : "मैं आप की मुफ़्लिसी के बाइस नहीं लौट रही हूं बल्कि इस लिये कि मुझे आप का तवक्कुल कमज़ोर नज़र आ रहा है, इसी लिये मुझे अपने वालिद पर ह़ैरत है कि उन्हों ने आप को पाकीज़ा ख़स्लत, अ़फ़ीफ़ और सालेह़ कैसे कहा जब कि आप का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसे का येह ह़ाल है कि रोटी बचा कर रखते हैं।"

www.dawateislami.net

येह बातें सुन कर नौजवान बहुत मुतअस्सिर हुवा और नदामत का इज़्हार किया। लड़की ने फिर कहा : "मैं ऐसे घर में नहीं रुक सकती जहां एक वक़्त की ख़ूराक जम्अ़ कर के रखी हो अब यहां मैं रहूंगी या रोटी !" येह सुन कर नौजवान फ़ौरन बाहर निकला और रोटी ख़ैरात कर दी।

(روض الرياحين،الحكاية الثانيه والتسعون بعد المائة ،ص١٩٢)

क्यूं फिरें शौक़ में हम माल के मारे मारे
हम तो सरकार के टुकड़ों पे पला करते हैं

(वसाइले बख़्शिश,स. 294)

इस हिकायत से वोह वालिदैन दर्से इ़ब्रत हासिल करें कि जब उन के सामने किसी नेक व परहेज़गार इस्लामी भाई का रिश्ता पेश किया जाए तो सिर्फ़ इस वज्ह से इन्कार कर देते हैं कि वोह बा रीश और सुन्नतों का आ़मिल है जब कि इस के बर अ़क्स ऐसे नौजवान के रिश्ते को तरजीह़ देने में ख़ुशी महसूस करते हैं जो अपने बुरे आ'माल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर के जहन्नम में जाने का सामान कर रहा हो और जिस की सोह़बत उन की बेटी को भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से बे नियाज़ और उस की इ़बादत से ग़ाफ़िल कर देगी।

हिकायत : 54

रिश्ते का उसूल

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक शख़्स आया और अ़र्ज़ की : मेरी एक बेटी है जिस से मैं बहुत प्यार करता हूं, उस के कई रिश्ते आएं हैं, आप मुझे किस से उस की शादी करने का मश्वरा देते हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : उस की ऐसे शख़्स से शादी

www.dawateislami.net

करो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता हो, क्यूंकि अगर ऐसा शख़्स तुम्हारी बेटी से महब्बत करेगा तो उसे इज़्ज़त देगा, और अगर नफ़रत भी करेगा तो ज़ुल्म नहीं करेगा। (شرح السنة للبغوی، ٥ / ٩، تحت الحدیث: ٢٢٣٤)

हिकायत : 55

रिश्ता यूं भी होता है

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़क़ील बग़दादी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज करने गया तो वहां मुझे सुर्ख़ डोरी में पिरोए हुए मोतियों का हार मिला। इतने में मुझे एक नाबीना बूढ़ा शख़्स नज़र आया जो उस हार की गुमशुदगी और उसे लौटाने वाले के लिये 100 दीनार के इन्आ़म का भी ए'लान कर रहा था। मैं ने हार उसे लौटा दिया, उस ने इन्आ़म में मुझे दीनार देना चाहे तो मैं ने मन्अ़ कर दिया। वहां से मैं मुल्के शाम पहुंचा, बैतुल मुक़द्दस ह़ाज़िरी दी, फिर बग़दाद जाने के इरादे से रवाना हो गया लेकिन ह़लब (मुल्के शाम के एक क़दीम शहर) में भूक और सख़्त सर्दी से दोचार एक मस्जिद में दाख़िल हो गया। मस्जिद के नमाज़ियों ने मुझे इमामत के लिये आगे कर दिया, मैं ने उन्हें नमाज़ पढ़ाई। उन्हों ने मुझे खाना पेश किया, माहे रमज़ान शुरूअ़ हो चुका था, लोगों ने कहा : हमारे इमाम साह़िब वफ़ात पा गए हैं तो इस महीने आप हमें नमाज़ें पढ़ाएं। मैं ने ह़ामी भर ली और सारा महीना उन की इमामत की। बा'दे रमज़ान उन्हों ने मर्ह़ूम इमाम साह़िब की बेटी का रिश्ता पेश किया जिसे मैं ने क़बूल कर लिया। शादी के एक साल बा'द हमारे यहां बेटा पैदा हुवा तो मेरी ज़ौजा बीमार पड़ गई। एक दिन मैं इसी परेशानी के आ़लम में बैठा सोच रहा था

www.dawateislami.net

कि मेरी नज़र अपनी ज़ौजा के गले के हार पर पड़ी, येह बिल्कुल वैसा ही हार था जो मैं ने दौराने ह़ज नाबीना ह़ाजी को वापस किया था। मैं ने हार का सारा क़िस्सा अपनी ज़ौजा को सुनाया तो वोह रोने लगी और बोली : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप वोही हैं जिन के बारे में मेरे वालिद रो रो कर येह दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी बेटी को हार लौटाने वाले शख़्स जैसा शोहर अ़ता फ़रमाना, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की येह दुआ क़बूल फ़रमाई। कुछ ही अ़र्से में मेरी ज़ौजा का इन्तिक़ाल हो गया। मैं उस की मीरास और हार ले कर बग़दाद लौट आया।

(سیر اعلام النبلاء، ۱٤/۳۹٤)

﴾51﴿ क़ीमते ख़रीद पर तबसेरे

बा'ज़ों को क़ीमते ख़रीद पर तबसेरा करने का बड़ा शौक़ होता है, चीज़ कोई भी ख़रीदे येह उस से ज़रूर पूछेंगे कि कितने में ख़रीदी ? फिर जो भी जवाब मिले उन का वाह़िद तबसेरा येह होता है कि बहुत महंगी ख़रीद लाए, येह सुन कर बा'ज़ औक़ात ख़रीदने वाले की दिल शिकनी भी होती है कि मैं इतना घूम फिर कर भाव ताव कर के अपने गुमान में सस्ती चीज़ ख़रीद कर लाया मगर मौसूफ़ ने इसे भी महंगा क़रार दे दिया। येह अलग बात है कि तबसेरा करने वाले को येही चीज़ ख़रीद कर लाने का कहा जाए तो शायद इस से भी महंगी ख़रीद लाए। बहर ह़ाल हमें चाहिये कि अगर हमारा कोई शनासा वाक़ेई महंगे दामों चीज़ ख़रीद लाया हो तो भी ज़रूरतन ऐसी ह़िक्मते अ़मली से निशान देही करें कि ख़रीदारी करने वाले की दिल शिकनी न हो।

www.dawateislami.net

﴾52﴿ घिन दिलाने वाली ह़रक्तें करना

बा'ज़ लोग कभी कान में उंगली मारेंगे तो कभी नाक में, कभी बग़लें खुजाएंगे तो कभी सर में ख़ारिश करेंगे फिर हाथ धोए बिग़ैर खाने पीने में भी मश्ग़ूल हो जाएंगे, उन की इस ह़रकत से देखने वाले को कैसी घिन आती है ! काश वोह इस का इदराक कर पाते । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़क़्ले सलीम नसीब करे ।

﴾53﴿ हाथापाई की आ़दत

बा'ज़ों को ज़बान के साथ साथ हाथ चलाने की भी बीमारी होती है, चुनान्चे, दौराने गुफ़्तगू कभी सामने वाले के कन्धे पर हाथ मारेंगे तो कभी उस की कमर पर थप्पड़ जड़ देंगे, कभी उस का सर पकड़ कर झटका देंगे तो कभी हाथ पर हाथ मारने की फ़रमाइश करेंगे । उन का येह अन्दाज़ भी सामने वाले के लिये तक्लीफ़ देह हो सकता है ।

﴾54﴿ बात काटना

किसी की बात ग़ौर से मुकम्मल सुनने की बा'ज़ों को आ़दत नहीं होती चुनान्चे, ऐसे अफ़राद "कान" बनने के बजाए "ज़बान" बनने के शौक़ीन होते हैं, सामने वाला कितनी ही अहम बात कर रहा हो येह उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ कर देंगे जिस से सामने वाला कोफ़्त में मुब्तला हो जाता है । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम बह़सो मुबाह़सा कर रहे थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और रन्जीदगी

www.dawateislami.net

का इज़हार करते हुए इरशाद फ़रमाया : बात काटना छोड़ दो कि इस में भलाई कम है, बात काटना छोड़ दो कि इस में नफ़्अ़ थोड़ा है क्यूंकि येह दो भाइयों के दरमियान दुश्मनी पैदा कर देती है। (تاریخ مدینۃ دمشق،۳۳/۳۷۰)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम लोगों को गुफ़्तगू करते देखो तो उन की बात न काटो। (مساوئ الاخلاق للخرائطی،ص۲۲۱،رقم:۵۳۸) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का इरशाद है : किसी बे वुक़ूफ़ की बात न काटो कि वोह तुम्हें अज़िय्यत देगा और किसी अ़क़्लमन्द की बात न काटो कि वोह तुम से बुग़्ज़ रखेगा। (احیاء العلوم،۲/۲۲٤)

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 170 पर है : बे ज़रूरते शरइ़य्या दूसरे की बात काटना (ममनूअ़) है जब कि वोह इ़ल्मे शरई़ के ज़िक्र में हो।

﴾55﴿ केले वग़ैरा के छिलके प्लेटफ़ॉर्म पर फेंक देना

बा'ज़ों का सफ़ाई का ज़ेह्न नहीं होता, ऐसे लोग किसी के कमरे या गाड़ी में मूंगफली खाएंगे तो छिलके वहीं फेला देंगे। आम, कीनू या केला वग़ैरा खा कर उस का छिलका रोड या प्लेटफ़ॉर्म पर फेंक देंगे, उन का येह अ़मल किसी को ज़ख़्मी कर सकता बल्कि किसी की जान भी ले सकता है चुनान्चे, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के बड़े भाई अ़ब्दुल ग़नी साह़िब के बारे में कहा जाता है कि पंजाब से बाबुल मदीना आते हुए ट्रेन जब ज़म ज़म नगर (ह़ैदराबाद) के स्टेशन पर रुकी तो वोह पानी पीने के लिये उतरे, जब ट्रेन चल पड़ी तो तेज़ी से उस की त़रफ़ लपके, किसी के

www.dawateislami.net

फेंके हुए केले के छिलके पर पाउं पड़ा, आह ! फिसल कर चलती ट्रेन के नीचे जा पड़े और कट जाने के सबब इन्तिक़ाल कर गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की बे हिसाब मग़फ़िरत फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾56﴿ महाफ़िल में लाउडस्पीकर का इस्ति'माल

बयानात और ना'त ख़्वानी करना बड़ी सआ़दत की बात है लेकिन बुलन्द आवाज़ वाला साऊन्ड सिस्टम लगा कर महल्ले वालों की नींद में ख़लल डाल कर इस का इनइक़ाद करना दीन की ख़िदमत नहीं बल्कि लोगों की हक़ तलफ़ी का गुनाह अपने सर लेना है। अगर कोई यूं अपने दिल को मनाए कि हम ने घर घर जा कर इजाज़त ले ली है तो सफ़ेद बालों वाली ज़ईफ़ बुढ़िया, बीमार बूढ़े, दूध पीते बच्चे और घर में बिस्तर पर दराज़ मरीज़ की इजाज़त क्यूंकर मिल गई, इस लिये हाज़िरीन की ता'दाद के मुताबिक़ बिग़ैर स्पीकर ही ना'त व बयान की तरकीब बना लेने में आ़फ़िय्यत है या फिर खुले ग्राऊन्ड में जहां से घरों तक आवाज़ न पहुंचे इतनी आवाज़ में स्पीकर चलाए जाएं जितनी ह़ाजत हो, अल ग़रज़ जिस ने एह़तियात़ करनी हो उस के लिये रास्ते हज़ार और जिस ने न करनी हो उस के लिये बहाने बे शुमार।

हिकायत : 56

अ़सा तोड़ दिया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर के बाहर एक वाइज़ बयान किया करता था जिस की आवाज़ से आप को तक्लीफ़ होती और कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देती थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पैग़ाम भेज कर इस बात की शिकायत फ़रमाई । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस वाइ़ज़ को उस फ़े'ल से मन्अ़ फ़रमाया जिस पर वोह वक़्ती तौ़र पर बाज़ आया लेकिन चन्द दिनों बा'द दोबारा वोही सिलसिला शुरूअ़ कर दिया । इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना अ़सा ले कर उस वाइ़ज़ के पास गए और मार मार कर उस पर अपना अ़सा तोड़ दिया ।

(تاریخ المدینۃ المنورۃ ، ذکر القصص ، ۱/ ۱۵)

लाऊडस्पीकर का ग़लत़ इस्ति'माल न करें

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان समझाते हुए लिखते हैं : वोह वाइ़ज़ीन इ़ब्रत पकड़ें जो तेज़ लाऊड स्पीकरों पर आधी आधी रात तक तक़रीरें कर के मज़दूरों, बीमारों को परेशान करते हैं, सारी बस्ती को जगाते हैं। देखा गया है कि फिर अ़वाम हुकूमत को दरख़्वास्तें देते हैं जिस पर दफ़्अ़ 144 नाफ़िज़ की जाती है, कितनी बड़ी ज़िल्लत और इ़ल्म की तौहीन है । अगर येह वाइ़ज़ीन इस फ़रमान पर अ़मल करते तो येह नौबत क्यूं आती, हुक्काम और अफ़्सरान ख़ुद इन से इ़ल्म सीखने इन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 217)

﴾57﴿ बे मक़्सद मुलाक़ात में वक़्त ज़ाएअ़ करना

बा'ज़ों को न अपने वक़्त की दौलत का एह़सास होता है न दूसरे के वक़्त की क़द्रो क़ीमत का पास, चुनान्चे, वोह बे मक़्सद किसी भी वक़्त किसी से मुलाक़ात के लिये जा पहुंचते हैं और अगर वोह वक़्त न दे तो उसे

www.dawateislami.net

मग़रूर, मुतकब्बिर जैसे अल्क़ाबात से नवाज़ कर उस का सीना छलनी कर देते हैं और अगर वोह मुलाक़ात करने पर तय्यार हो जाए तो फिर जल्दी टलते नहीं।

मैं ख़ुद उन के पास पहुंच जाता हूं

एक शख़्स किसी फ़र्म में आ'ला ओ़ह्दे पर फ़ाइज़ था, उस की आ़दत थी कि जब उसे किसी मा तह़्त से कोई काम होता या उस को कोई फ़ाइल देनी होती तो वोह ख़ुद उठ कर उस की टेबल पर जाता और फ़ाइल दे कर वापस आ जाता, किसी ने इस की वज्ह पूछी तो उस ने कहा कि मैं इन को अपने कमरे में बुला सकता हूं लेकिन येह आएंगे अपनी मरज़ी से और मेरा वक़्त ज़ाएअ़ होगा, इस लिये मैं अपना वक़्त बचाने के लिये ख़ुद उन के पास चला जाता हूं और काम पूरा होने के बा'द वापस आ जाता हूं।

﴾58﴿ गाड़ी चलाते हुए कीचड़ उड़ाना

सड़क पर बा'ज़ औक़ात पानी खड़ा होता है, या गटर से रसने वाला नापाक पानी जम्अ़ हो जाता है या बारिश के बा'द कीचड़ बन जाती है, ऐसे में बा'ज़ कार या वेगन चलाने वाले पैदल चलने वालों के लिये मुसीबत बन जाते हैं, वोह यूं कि कीचड़ वग़ैरा से तेज़ी से गाड़ी गुज़ारेंगे और उड़ने वाले छींटे पैदल चलने वालों के मुंह और कपड़ों पर जा पड़ते हैं, अब वोह बेचारा कहीं नोकरी का इन्टरव्यू देने जा रहा हो या उस की नोकरी का पहला दिन हो या दा'वत में जा रहा हो, इस से उन को कोई ग़रज़ नहीं होती क्यूंकि उन के अपने कपड़े और चेहरे महफ़ूज़ रहते हैं, अगर येह ख़ुद

www.dawateislami.net

कभी पैदल हों और किसी तेज़ रफ़्तार गाड़ी से उड़ने वाले छींटों का निशाना बनें तो उन्हें सह़ीह़ मा'नों में दूसरों की तक्लीफ़ का एह़सास होगा।

﴾59﴿ मुसाफ़ह़े और मुआ़नके़ में ज़ोर से दबाना

इस्लामी भाइयों का एक दूसरे से मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करना बक़ाए मह़ब्बत का ज़रीआ़ है लेकिन बा'ज़ों को एक दम शरारत सूझती है कि मुसाफ़ह़े के दौरान दूसरे का हाथ एक दम जकड़ कर दबाना शुरूअ़ कर देते हैं, इसी त़रह़ मुआ़नके़ (या'नी एक दूसरे से गले मिलने) के दौरान भी इतनी ज़ोर से दबाते हैं कि सामने वाले की चीख़ें निकल जाती हैं।

हिकायत : 57 बेहोश हो गया

कई बरस पहले हेड पंजनद (जुनूबी पंजाब) के स्कूल मास्टर के साथ इसी त़रह़ का वाक़िआ़ पेश आया कि किसी ने उस से ईद मिलने के दौरान इतनी ज़ोर से दबाया कि बेचारा बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया फिर उसे अस्पताल ले जाना पड़ा, जहां उसे बड़ी मुश्किल से होश में लाया गया।

﴾60﴿ किसी को झूटा, बद दियानत या रिश्वत ख़ोर क़रार देना

झूट बोलना, ख़ियानत करना या रिश्वत ख़ोरी बहुत ही बुरे और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं लेकिन इस से भी बुरा काम येह है कि किसी को बिला दलीले शरई झूटा, बद दियानत या रिश्वत ख़ोर क़रार दिया जाए। ऐसा करना तोहमत है और इस की सज़ा बहुत सख़्त है चुनान्चे,

www.dawateislami.net

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसलमान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक रद्ग़तल ख़बाल में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए।[1]

(ابوداؤد،کتاب الاقضیة،باب فیمن یعین علی خصومة ..الخ،٣/ ٤٢٧، حدیث: ٣٥٩٧)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 85)

﴾61﴿ ज़ौजा को छोटे छोटे कामों के लिये उठाना

अपना काम अपने हाथ से करना बाइ़से सआ़दत और **अ़ज़ीम सुन्नत** है। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने कपड़े ख़ुद सी लेते और अपने ना'लैने मुबारकैन गांठते और वोह सारे काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं।

(کنزالعمال، ٤٠/٦٠،جز٧،حدیث:١٨٥١٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! छोटी छोटी बातों पर बीवी को हुक्म देना मसलन येह उठा दो, वोह रख दो, फ़ुलां चीज़ ढूंड कर ला दो वग़ैरा से बचना और अपना काम अपने हाथ से कर लेना घर को अम्न का गहवारा बनाने में मदद देता है। नीज़ अपने छोटे छोटे कामों के लिये

---

(1)....रद्ग़तल ख़बाल दोज़ख़ का वोह मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का पीप व ख़ून जम्अ़ होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 313)

www.dawateislami.net

बीवी को नींद से जगा देना, काम काज और झाड़ू पोचे के दौरान, आटा गूंधते हुए, नीज़ दर्दे सर, नज़ला या दीगर बीमारियों के होते हुए उन को काम के ऑर्डर दिये जाना घर के माहोल को ख़राब कर सकता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ आप को नींद प्यारी है, सुस्ती होती है, मूड ऑफ़ होता है इसी त़रह़ के अ़वारिज़ औ़रत को भी दरपेश होते हैं बल्कि मर्द के मुक़ाबले में औ़रत को नींद ज़ियादा आती है।

﴾62﴿ मियां बीवी को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काना

मियां बीवी को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़का कर उन की हंसती बसती ज़िन्दगी में ज़ह़र घोलने में बा'ज़ों को अ़जीब लज़्ज़त मिलती है लेकिन दर ह़क़ीक़त वोह शैत़ान के प्यारे हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शैत़ान पानी पर अपना तख़्त बिछाता है, फिर अपने लश्कर भेजता है। उन लश्करों में शैत़ान के ज़ियादा क़रीब उस का दरजा होता है जो सब से ज़ियादा फ़ितना बाज़ होता है। उस का एक लश्कर वापस आ कर बताता है कि मैं ने फ़ुलां फ़ितना बरपा किया तो शैत़ान कहता है : तू ने कुछ भी नहीं किया। फिर एक और लश्कर आता है और कहता है : मैं ने एक आदमी को उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक उस के और उस की बीवी के दरमियान जुदाई नहीं डाल दी। येह सुन कर शैत़ान उसे अपने क़रीब कर लेता है और कहता है : तू कितना अच्छा है ! और अपने साथ चिमटा लेता है।

(مسلم،کتاب صفة القیامة۔الخ،باب تحریش الشیطان۔۔۔الخ،ص ۱۵۱۱، حدیث: ۲۸۱۳)

www.dawateislami.net

﴾63﴿ रिश्ते पर रिश्ता भेजना

रिश्ते पर रिश्ता भेजने में भी उस की दिल शिकनी है जिस की बात पहले तै हो चुकी हो, अगर वोह झगड़े पर उतर आए तो बा'ज़ औक़ात नौबत क़त्लो ग़ारत तक भी जा पहुंचती है। **सदरुश्शरीआ़,** बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : एक शख़्स की मंगनी हो जाने के बा'द दूसरे को पैग़ाम देना मन्अ़ है ख़्वाह महर बढ़ा कर निकाह़ करना चाहता हो या उस की इ़ज़्ज़त व वजाहत के सामने पहले को जवाब दे दिया जाएगा, बहर सूरत पैग़ाम देना ममनूअ़ है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 11, 2 / 724)

﴾64﴿ बैअ़ पर बैअ़ या इजारे पर इजारा करना

जो ख़रीदो फ़रोख़्त या इजारा कर रहे हों और किसी नतीजे पर पहुंच चुके हों तो बीच में तीसरे को टांग नहीं अड़ानी चाहिये कि मन्अ़ है चुनान्चे, **सदरुश्शरीआ़**, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : ۞ एक शख़्स के दाम चुका लेने के बा'द दूसरे को दाम चुकाना ममनूअ़ है इस की सूरत येह है कि बाएअ़ व मुश्तरी (या'नी ख़रीदने और बेचने वाला) एक समन पर राज़ी हो गए सिर्फ़ ईजाबो क़बूल ही या मबीअ़ (या'नी बिकने वाली चीज़) को उठा कर दाम दे देना ही बाक़ी रह गया है दूसरा शख़्स दाम बढ़ा कर लेना चाहता है या दाम उतना ही देगा मगर दुकानदार से उस का मेल (तअ़ल्लुक़) है या येह ज़ी वजाहत शख़्स है दुकानदार उसे छोड़ कर पहले शख़्स को नहीं देगा। ۞ जिस त़रह़ बैअ़ में इस की मुमानअ़त है इजारे में भी ममनूअ़ है मसलन किसी मज़्दूर से मज़्दूरी तै होने के बा'द या

www.dawateislami.net

मुलाज़िम से तनख़्वाह तै़ होने के बा'द दूसरे शख़्स को मज़दूरी या तनख़्वाह बढ़ा कर या उतनी ही दे कर मुक़र्रर करना। ❁ जिस त़रह़ ख़रीदार के लिये येह सूरत ममनूअ़ है बाएअ़ के लिये भी मुमानअ़त है मसलन एक दुकानदार से दाम तै़ हो गए दूसरा कहता है मैं इस से कम में दूंगा या वोह उस का मुलाक़ाती है कहता है : मेरे यहां से लो मैं भी इतने ही में दूंगा, या इजारे में एक मज़दूर से उजरत तै़ होने के बा'द दूसरा कहता है : मैं कम मज़दूरी लूंगा या मैं भी इतनी ही लूंगा, येह सब ममनूअ़ हैं।

(बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 11, 2 / 723)

﴾65﴿ क़ित़ार तोड़ना

शनाख़्ती कार्ड ऑफ़िस हो या पासपोर्ट का दफ़्तर, बैंक हो या ऐरपोर्ट या रेल्वे का काउन्टर, रश की सूरत में क़ित़ार बना लेने में सब का फ़ाएदा और वक़्त की बचत है, लेकिन यहां भी बा'ज़ लोग ज़ियादती करते हैं कि बा'द में आने के बा वुजूद क़ित़ार में घुसने की कोशिश करते हैं या फिर दीदह दिलैरी के साथ सब के ह़ुक़ूक़ पर लात मारते हुए सीधा खिड़की पर जा पहुंचते हैं और न जाने कितनों की दिल आज़ारी का सबब बनते हैं।

ह़िकायत : 58 क़ित़ार में खड़े रहे

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 1400 हिजरी में ह़रमैने त़य्यिबैन की ज़ियारत का इरादा किया और अपना पासपोर्ट वीज़ा लगवाने के लिये जम्अ़ करवा दिया। वीज़ा लग जाने

www.dawateislami.net

पर जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपना पासपोर्ट लेने के लिये मुतअ़ल्लिक़ा एमबेसी (Embassy सिफ़ारत ख़ाने) पहुंचे तो वीज़ा लेने वालों की एक त़वील क़ित़ार लगी हुई थी। आप भी क़ित़ार में खड़े हो गए। किसी जानने वाले ट्रेवल एजन्ट (Travel Agent) की नज़र आप पर पड़ी कि इतने आ'ला मर्तबे के ह़ामिल होने के बावुजूद क़ित़ार में खड़े हुए हैं तो उस ने बा'दे सलाम अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! क़ित़ार बहुत त़वील है, आप को कई घंटों तक धूप में इन्तिज़ार करना पड़ेगा, आइये मैं आप को (अपने तअ़ल्लुक़ात की बिना पर) खिड़की के क़रीब पहुंचा देता हूं। मगर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बड़ी नर्मी से मन्अ़ फ़रमा दिया, जिस की वज्ह येह थी कि अगर आप उस की पेशकश क़बूल फ़रमा कर आगे तशरीफ़ ले जाते तो पहले से क़ित़ार में खड़े होने वालों की ह़क़ तलफ़ी हो जाती।

﴾66﴿ किसी का राज़ फ़ाश करना

सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी कोई बात करे फिर इधर उधर देखे तो वोह बात अमानत है।

(ابوداؤد،کتاب الادب،باب فی نقل الحدیث،٤/٣٥١،حدیث:٤٨٦٨)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी अगर कोई शख़्स तुम से अकेले में कोई बात कहे और बात के दौरान या बात के दरमियान में इधर उधर देखे कि कोई सुन न ले तो वोह अगर्चे मुंह से न कहे कि येह किसी से न कहना मगर उस की येह ह़रकत बताती है कि वोह राज़ की है

www.dawateislami.net

लिहाज़ा इसे अमानत समझो उस का राज़ ज़ाहिर न करो किसी से येह बात न कहो। سُبْحٰنَ اللّٰه कैसी पाकीज़ा (तरबियत) है !

(मिरआतुल मनाजीह, 6 / 629)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राज़ अमानत होता है, इन्सान उसी को अपना राज़दार बनाता है जिस पर उसे ए'तिमाद होता है, लेकिन जब वोही शख़्स उस के ए'तिमाद को ठेस पहुंचाता है और राज़ को लोगों के सामने खोल देता है तो उसे सख़्त रंज पहुंचता है। मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ख़ियानत सिर्फ़ माल की ही नहीं होती बल्कि माल, राज़ और इ़स्मत वग़ैरा सब में होती है बल्कि माल में ख़ियानत से ब दरजहा बदतर (या'नी कहीं ज़ियादा बुरी) राज़दारी में ख़ियानत है। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 61)

हि़कायत : 59 राज़ फ़ाश नहीं करूंगी

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बारगाहे रिसालत में चल कर ह़ाज़िर हुईं और आप के चलने का अन्दाज़ सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ था। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी बेटी को ख़ुश आमदीद ! इस के बा'द उन्हें अपनी दाईं या बाईं जानिब बिठा कर सरगोशी में उन से कुछ इरशाद फ़रमाया जिसे सुन कर वोह रोने लगीं, फिर दोबारा सरगोशी की तो वोह मुस्कुराने लगीं। जब मैं ने उन से इस बारे में इस्तिफ़्सार किया तो उन्हों ने फ़रमाया : मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के राज़ को फ़ाश नहीं करूंगी।

www.dawateislami.net

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मैं ने उन से दोबारा इस बारे में सुवाल किया तो उन्हों ने बताया : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरगोशी करते हुए मुझे बताया कि हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हर साल एक मरतबा मेरे साथ क़ुरआने पाक का दौर करते थे लेकिन इस साल उन्हों ने दो मरतबा दौर किया है और मैं येह समझता हूं कि मेरा वक़्ते रुख़्सत क़रीब आ चुका है और मेरे घरवालों में से सब से पहले तुम मुझ से आ कर मिलोगी। येह बात सुन कर मैं रो पड़ी। इस के बा'द हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम अहले जन्नत की औरतों की सरदार हो या (फिर येह इरशाद फ़रमाया कि) मोमिनों की औरतों की सरदार हो, येह बात सुन कर मैं मुस्कुरा दी। (بخاری ،کتاب المناقب،باب علامات النبوة فی الاسلام،۲/۵۰۷،حدیث:۳۶۲۳)

हिकायत : 60 येह राज़ किसी पर ज़ाहिर न करना

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है : मैं लड़कों के साथ खेल रहा था कि इतने में सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, हमें सलाम किया और मुझे एक काम के सिलसिले में भेज दिया। (उस काम के सबब) मुझे अपनी वालिदा के पास हाज़िरी में ताख़ीर हो गई। जब मैं वापस पहुंचा तो वालिदए मोहतरमा ने मुझ से सबबे ताख़ीर दरयाफ़्त फ़रमाया। मैं ने अ़र्ज़ की, कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे एक काम से भेजा था। उन्हों ने

www.dawateislami.net

पूछा : किस काम से ? तो मैं ने जवाब दिया : येह एक राज़ है । इस पर वालिदए मोहतरमा ने इरशाद फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का राज़ किसी पर ज़ाहिर न करना ।

(مسلم،كتاب فضائل الصحابة،باب فضائل انس بن مالك، ص١٣٤٨، حديث: ٢٤٨٢)

हिकायत : 61 राज़ नहीं खोल सक्ता था

ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के शोहर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो कि बद्री सह़ाबी हैं, इन्तिक़ाल फ़रमा गए और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बेवा हो गईं तो आप के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अपनी साह़िबज़ादी से निकाह़ की पेशकश की । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : मैं इस बारे में ग़ौर करूंगा, फिर चन्द दिनों के बा'द जवाब दिया : मेरा येह ज़ेह्न बना है कि फ़िलह़ाल शादी न करूं । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि इस के बा'द मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास गया और उन्हें भी येही पेशकश की लेकिन वोह मेरी बात सुन कर ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया । ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ब निस्बत मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के रद्दे अ़मल से ज़ियादा रंज पहुंचा । इस के चन्द दिन बा'द सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी बेटी के लिये पैग़ामे निकाह़ भेजा तो मैं ने येह निकाह़ कर दिया । बा'द में जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने फ़रमाया : जब आप ने मुझे अपनी

www.dawateislami.net

साहिबज़ादी से निकाह़ की पेशकश की और मैं ने कोई जवाब न दिया तो ग़ालिबन आप को रंज हुवा होगा। मैं ने इस्बात में जवाब दिया तो उन्हों ने फ़रमाया : आप को जवाब देने से मुझे सिर्फ़ येह बात मानेअ़ (या'नी रुकावट) हुई कि मैं जानता था कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का ज़िक्र फ़रमाया है और मैं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का राज़ इफ़्शा नहीं कर सकता था। अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से निकाह़ न फ़रमाते तो मैं उन का रिश्ता क़बूल कर लेता। (بخاری،کتاب المغازی، باب:۱۲، ۳/۲۰، حدیث: ۴۰۰۵)

﴾67﴿ ख़ुशियां मनाने के नाम पर दूसरों को तक्लीफ़ देना

न्यू यर नाइट हो या बसन्त, यौमे आज़ादी हो या कोई और मेला ठेला, मंगनी की रस्म हो या मेहंदी का हल्ला गुल्ला ! ख़ुशियां मनाने के नाम पर ढोल ढमके, हवाई फ़ाइरिंग, आतश बाज़ी के पटाख़े फोड़ कर, बिग़ैर साइलन्सर मोटर साईकल चला कर, वनवे लंग कर के, कान फाड़ आवाज़ में मूसीक़ी की मह़फ़िलें सजा कर दीगर मुसलमानों, बच्चों, मरीज़ों और घरेलू ख़वातीन को नाक़ाबिले बयान अज़िय्यत व तक्लीफ़ में मुब्तला किया जाता है, اَلْاَمَان وَالْحَفِيْظ ऐसा करने वालों को याद रखना चाहिये कि एक दिन मरना है और बारगाहे जुल जलाल में ह़ाज़िर हो कर अपनी करनी का ह़िसाब देना और इस का अन्जाम देखना है।

शादियों में मत गुनह नादान कर
ख़ाना बरबादी का मत सामान कर

(वसाइले बख़्शिश, स. 715)

www.dawateislami.net

﴾68﴿ मुलाज़िमीन व ख़ादिमीन को तक्लीफ़ न दीजिये

बा'ज़ लोग अपने मुलाज़िमीन और घरेलू ख़ादिमीन से जानवरों से बदतर सुलूक करते हैं, बात बात पर उन की बे इ़ज़्ज़ती करते हैं, उन से ज़ियादा काम लेते हैं, इन्कार पर नोकरी से फ़ारिग़ कर देने की धमकी देते हैं, ऐसे अफ़राद याद रखें कि उन मुलाज़िमीन व ख़ादिमीन की भी ह़क़ तलफ़ी करना और उन को बिला वज्हे शरई तक्लीफ़ पहुंचाना जाइज़ नहीं। हमारे अकाबिरीन तो अपने ख़ुद्दाम से मिसाली हुस्ने सुलूक रखा करते थे चुनान्चे,

हिकायत : 62 ग़ुलाम को तक्लीफ़ न दी

मन्क़ूल है कि एक रात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां कोई मेहमान आया, उस वक़्त आप लिख रहे थे। चराग़ बुझने लगा तो मेहमान ने अ़र्ज़ की : मैं उठ कर ठीक कर देता हूं। इरशाद फ़रमाया : येह बात मेहमान की ख़ातिरदारी के ख़िलाफ़ है कि उस से ख़िदमत ली जाए। उस ने कहा : ग़ुलाम को जगा देता हूं, वोह येह काम कर लेगा। फ़रमाया : वोह अभी अभी सोया है। येह फ़रमा कर ख़ुद उठे और तेल की कुप्पी ले कर चराग़ में तेल भरा। मेहमान ने कहा : ऐ अमीरल मोमिनीन ! आप येह काम ख़ुद अन्जाम दे रहे हैं ! फ़रमाया : मैं जब इस काम के लिये गया तब भी उ़मर था और जब वापस लौटा तब भी उ़मर ही हूं, मेरे इस काम से मेरे मक़ामो मर्तबे में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा और लोगों में से बेहतरीन वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां आ़जिज़ी करने वाला हो। (احیاء علوم الدین، ۳/۴۳۵)

www.dawateislami.net

हिकायत : 63 ख़ादिमा की तक्लीफ़ का ख़याल

फ़ी ज़माना शरअ़न कोई ग़ुलाम मौजूद नहीं लेकिन अपने पास काम करने वाले मुलाज़िमीन और ख़ादिमीन का ख़याल रखना भी शेवए मुसलमानी है चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के बयान का ख़ुलासा है कि मैं जब मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان की ख़िदमत में बरेली शरीफ़ ह़ाज़िर हुवा तो आप ने दारुल इफ़्ता की ख़िदमत मेरे सिपुर्द फ़रमा दी। मैं दिन में मसाइल का जवाब लिखता और इ़शा के बा'द आप को सुनाया करता और जहां मुनासिब मा'लूम होता आप इस्लाह़ फ़रमाया करते थे, येह मजलिस उ़मूमन दो तीन घंटे की होती जब कि बसा औक़ात चार घंटे की भी हो जाती थी। इन्ही अय्याम में एक दफ़्आ़ जब कि सख़्त सर्दियों के दिन थे, कमरे में ह़ज़रत के लिये अंगेठी थी जो कुछ देर के बा'द ठन्डी होने लगी और हुक़्क़े की आग भी ख़त्म होने पर आई। अचानक आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अगर कोइला और होता तो अंगेठी ही गर्म हो जाती और तम्बाकू अभी पूरा जला नहीं है, वोह भी काम आ जाता। मैं ने अ़र्ज़ की : अन्दर ख़ादिमा को आवाज़ दे कर कोइला मांग लूं? फ़रमाया : दिन भर की थकी हारी बेचारी सो गई होगी, जाने दीजिये।

(जहाने मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, स. 328)

हिकायत : 64 ख़ादिम से कपडे़ पर सियाही गिर गई

मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन बुलबुल शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی के ख़ादिम ने क़लम सियाही में डुबो कर आप को पेश

www.dawateislami.net

किया तो बे ख़याली में सियाही के चन्द क़त्रे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़ीमती जुब्बे पर गिर गए, ख़ादिम ख़ौफ़ से कांपने लगा (कि न जाने अब क्या सज़ा मिलेगी) लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दरगुज़र करते हुए फ़रमाया : घबराओ नहीं ! फिर अश्आ़र पढ़े :

إِذَا مَا الْمِسْكُ طَيَّبَ رِيحَ قَوْمٍ　　كَفَانِيْ ذَاكَ رَائِحَةُ الْمِدَادِ

فَمَا شَيْءٌ بِأَحْسَنَ مِنْ ثِيَابٍ　　عَلَى حَافَاتِهَا حُمَمُ السَّوَادِ

तर्जमा : जब कस्तूरी क़ौम की ख़ुश्बू को उ़म्दा करे मुझे येही सियाही की ख़ुश्बू काफ़ी होगी। उन कपड़ों से बढ़ कर कोई चीज़ अच्छी नहीं जिन के किनारों पर कोइले की सियाही हो। (سير اعلام النبلاء، اسماعيل بن بلبل، ١٠/٥٦٦)

हिकायत : 65

येह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है

वक़्त बे वक़्त किसी को टोकते रहने, डांट पिला देने या झाड़ने की आ़दत से मुमकिन है कि वोह ऐसे वक़्त में हमारी मदद से इन्कार कर दे जब हम शदीद परेशानी में मदद के त़लबगार हों। इस बात को एक फ़र्ज़ी हिकायत से समझने की कोशिश कीजिये : चुनान्चे, एक नक चढ़ा रईस अपने नोकरों को वक़्त बे वक़्त डांटता झाड़ता रहता था जिस की वज्ह से नोकरों के दिल में उस की अ़दावत बैठ चुकी थी। उस रईस ने हर नोकर को उस की ज़िम्मेदारियों की तह़रीरी लिस्ट (List) बना कर दी हुई थी अगर कोई नोकर कभी कोई काम छोड़ देता तो रईस उसे वोह लिस्ट दिखा दिखा कर ज़लील करता। एक मरतबा वोह घुड़ सुवारी का शौक़ पूरा कर के घोड़े से उतर रहा था कि उस का पाउं रिकाब में उलझ गया इसी दौरान घोड़ा भाग खड़ा हुवा, अब रईस उल्टा लटका घोड़े के साथ साथ घिसट रहा

www.dawateislami.net

था। उस ने पास खड़े नोकर को मदद के लिये पुकारा मगर उसे तो बदला चुकाने का मौक़अ़ मिल गया था, चुनान्चे, उस ने अपने मालिक की मदद करने के बजाए जेब से उस की दी हुई लिस्ट (List) निकाली और दूर ही से दिखा कर कहने लगा कि इस में येह कहीं नहीं लिखा कि अगर तुम्हारा पाउं घोड़े की रिकाब में उलझ जाए तो उसे छुड़ाना मेरी ड्यूटी है। येह सुन कर रईस नोकरों से किये हुए बुरे सुलूक पर पछताने लगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾69﴿ ह़ज के दौरान तक्लीफ़ न दीजिये

ह़ज की सआ़दत मिलना बड़ी ख़ुश नसीबी है लेकिन इस अहम इ़बादत को अन्जाम देते वक़्त भी दीगर मुसलमानों को तक्लीफ़ देने से बचना बहुत ज़रूरी है चुनान्चे, सफ़र में, मत़ार (ऐरपोर्ट, Airport), दौराने त़वाफ़, ह़जरे अस्वद को बोसा देते वक़्त, मिना में, मैदाने अ़रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा में, और ख़ास त़ौर पर रमी करते वक़्त बहुत एह़तियात़ कीजिये कि किसी को हम से तक्लीफ़ न पहुंच जाए। कई बार ऐसा हुवा कि रमी के दौरान भगदड़ मची और देखते ही देखते सेंकड़ों ह़ुज्जाज जान से चले गए।

ह़जरे अस्वद को बोसा किस त़रह़ दें ?

सदरुश्शरीआ़, बदरुत़्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : मयस्सर हो सके तो ह़जरे अस्वद पर दोनों हथेलियां और उन के बीच में मुंह रख कर यूं बोसा दो कि आवाज़ न पैदा हो, तीन बार ऐसा ही करो येह नसीब हो तो कमाले

www.dawateislami.net

सआ़दत है । यक़ीनन तुम्हारे महबूब व मौला मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बोसा दिया और रूए अक़्दस उस पर रखा । ज़हे ख़ुश नसीबी कि तुम्हारा मुंह वहां तक पहुंचे और हुजूम के सबब न हो सके तो न औरों को ईज़ा दो, न आप दबो कुचलो बल्कि इस के इवज़ हाथ से छू कर उसे चूम लो और हाथ न पहुंचे तो लकड़ी से छू कर उसे चूम लो और येह भी न हो सके तो हाथों से उस की तरफ़ इशारा कर के उन्हें बोसा दे लो, मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुंह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं येही क्या कम है और हजर को बोसा देने या हाथ या लकड़ी से छू कर चूम लेने या इशारा कर के हाथों को बोसा देने को इस्तिलाम कहते हैं । (बहारे शरीअ़त, 1 / 1096)

रमल में भी एहतियात

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद लिखते हैं : पहले तीन फेरों में मर्द रमल करता चले या'नी जल्द जल्द छोटे क़दम रखता, शाने हिलाता जैसे क़वी व बहादुर लोग चलते हैं, न कूदता न दौड़ता, जहां ज़ियादा हुजूम हो जाए और रमल में अपनी या दूसरे की ईज़ा हो तो इतनी देर रमल तर्क करे । (बहारे शरीअ़त, 1 / 1097)

तक्लीफ़ देने की मुख़्तलिफ़ सूरतें

शैखुल हदीस वत्तफ़्सीर हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی तहरीर फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ या'नी मुसलमान का इस्लामी

www.dawateislami.net

निशान येह है कि तमाम मुसलमान उस की ज़बान और उस के हाथ से सलामत रहें। (بخاری،۱/۱۰،حدیث:۱۰) मत्लब येह है कि वोह किसी मुसलमान को कोई तक्लीफ़ न दे और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि मुसलमान को चाहिये कि वोह जो कुछ अपने लिये पसन्द करता है वोही अपने इस्लामी भाइयों के लिये भी पसन्द करे। (بخاری،۱/۱۶،حدیث:۱۳) ज़ाहिर है कि कोई शख़्स भी अपने लिये येह पसन्द नहीं करेगा कि वोह तक्लीफ़ों में मुब्तला हो और दुख उठाए तो फिर फ़रमाने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुताबिक़ हर शख़्स पर येह लाज़िम है कि वोह अपने किसी क़ौलो फ़े'ल से किसी को ईज़ा और तक्लीफ़ न पहुंचाए, इस लिये मुन्दरिजए ज़ैल बातों का ख़ास तौ़र पर हर मुसलमान को ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है।

(1) किसी के घर मेहमान जाओ या बीमार पुर्सी के लिये जाना हो तो इस क़दर ज़ियादा दिनों तक या इतनी देर तक न ठहरो कि घरवाला तंग हो जाए और तक्लीफ़ में पड़ जाए।

(2) अगर किसी की मुलाक़ात के लिये जाओ तो वहां इतनी देर तक मत बैठो या उस से इतनी ज़ियादा बातें न करो कि वोह उक्ता जाए या उस के काम में ह़रज होने लगे क्यूंकि इस से यक़ीनन उस को तक्लीफ़ होगी।

(3) रास्तों में चारपाई या कुरसी या कोई दूसरा सामान बरतन या ईंट पथ्थर वग़ैरा मत डालो क्यूंकि अक्सर ऐसा होता है कि लोग रोज़ाना की आ़दत के मुताबिक़ बे खटके तेज़ी के साथ चले आते हैं और इन चीज़ों से

www.dawateislami.net

ठोकर खा कर उलझ कर गिर पड़ते हैं बल्कि ख़ुद इन चीज़ों को रास्तों में डालने वाला भी रात के अंधेरे में ठोकर खा कर गिरता है और चोट खा जाता है।

(4) किसी के घर जाओ तो जहां तक हो सके हरगिज़ हरगिज़ उस से किसी चीज़ की फ़रमाइश न करो बा'ज़ मरतबा बहुत ही मा'मूली चीज़ भी घर में मौजूद नहीं होती और वोह तुम्हारी फ़रमाइश पूरी नहीं कर सकता ऐसी सूरत में उस को शर्मिन्दगी और तक्लीफ़ होगी और तुम को भी उस से कोफ़्त और तक्लीफ़ होगी कि ख़्वाह म ख़्वाह मैं ने उस से एक घटया दर्जे की चीज़ की फ़रमाइश की और ज़बान ख़ाली गई।

(5) हड्डी या लोहे शीशे वग़ैरा के टुकड़ों या ख़ारदार (कांटे वाली) शाख़ों को न ख़ुद रास्तों में डालो न किसी को डालने दो और अगर कहीं रास्तों में इन चीज़ों को देखो तो ज़रूर रास्तों से हटा दो वरना रास्ता चलने वालों को इन चीज़ों के चुभ जाने से तक्लीफ़ होगी और मुमकिन है कि ग़फ़्लत में तुम्हीं को तक्लीफ़ पहुंच जाए इसी त़रह़ केले और ख़रबूज़ा वग़ैरा के छिलकों को रास्तों पर न डालो वरना लोग फिसल कर गिरेंगे।

(6) खाना खाते वक़्त ऐसी चीज़ों का नाम मत लिया करो जिस से सुनने वालों को घिन पैदा हो क्यूंकि बा'ज़ नाज़ुक मिज़ाज लोगों को इस से बहुत तक्लीफ़ हो जाया करती है।

(7) जब आदमी बैठे हुए हों तो झाड़ू मत दिलवाओ क्यूंकि इस से लोगों को तक्लीफ़ होगी।

(8) तुम्हारी कोई दा'वत करे तो जितने आदमियों को तुम्हारे साथ उस ने बुलाया है ख़बरदार इस से ज़ियादा आदमियों को ले कर उस के घर

www.dawateislami.net

न जाओ शायद खाना कम पड़ जाए तो मेज़बान को शर्मिन्दगी और तक्लीफ़ होगी और मेहमान भी भूक से तक्लीफ़ उठाएंगे।

(9) अगर किसी मजलिस में दो आदमी पास पास बैठे बातें कर रहे हों तो ख़बरदार तुम इन दोनों के दरमियान में जा कर न बैठ जाओ कि ऐसा करने से इन दोनों साथियों को तक्लीफ़ होगी।

(10) औ़रत को लाज़िम है कि अपने शोहर के सामने किसी दूसरे मर्द की ख़ूब सूरती या उस की किसी ख़ूबी का ज़िक्र न करे क्यूंकि बा'ज़ शोहरों को इस से तक्लीफ़ हुवा करती है इसी त़रह़ मर्द के लिये ज़रूरी है कि वोह अपनी बीवी के सामने किसी दूसरी औ़रत के हुस्नो जमाल या उस की चाल ढाल का तज़किरा और ता'रीफ़ न करे क्यूंकि बीवी को इस से तक्लीफ़ पहुंचेगी।

(11) किसी दूसरे के ख़त़ को कभी हरगिज़ न पढ़ा करो मुमकिन है ख़त़ में कोई ऐसी राज़ की बात हो जिस को वोह हर शख़्स से छुपाना चाहता हो तो ज़ाहिर है कि तुम ख़त़ पढ़ लोगे तो उस को तक्लीफ़ होगी।

(12) किसी से इस त़रह़ की हंसी मज़ाक़ न करो जिस से उस को तक्लीफ़ पहुंचे इसी त़रह़ किसी को ऐसे नाम या अल्क़ाब से न पुकारो जिस से उस को तक्लीफ़ पहुंचती हो क़ुरआने मजीद में इस की सख़्त मुमानअ़त आई है।

(13) जिस मजलिस में किसी ऐबी आदमी के ऐब का ज़िक्र करना हो तो पहले देख लो कि वहां इस क़िस्म का कोई आदमी तो नहीं है वरना उस ऐब का ज़िक्र करने से उस आदमी को तक्लीफ़ और ईज़ा पहुंचेगी।

www.dawateislami.net

(14) दीवारों पर पान खा कर न थूको कि इस से मकान वाले को भी तक्लीफ़ होगी और हर देखने वाले को भी घिन पैदा होगी।

(15) दो आदमी किसी मुआ़मले में बात करते हों और तुम से कुछ पूछते गछते न हों तो ख़्वाह म ख़्वाह तुम उन को कोई राए मश्वरा न दो ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिये येह तक्लीफ़ देने वाली बात है।

बहर ह़ाल ख़ुलासा येह है कि तुम इस कोशिश में लगे रहो कि तुम्हारे किसी क़ौल या फ़े'ल या त़रीक़े से किसी को कोई तक्लीफ़ न पहुंचे और (न) तुम ख़ुद बिला ज़रूरत ख़्वाह म ख़्वाह किसी तक्लीफ़ में पड़ो। (जन्नती ज़ेवर, स. 548)

उम्मते महबूब का या रब बना दे ख़ैर ख़्वा
नफ़्स की ख़ातिर किसी से दिल में मेरे हो न बैर

(वसाइले बख़्शिश, स. 233)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾70﴿ दौराने सफ़र तक्लीफ़ न दीजिये

दौराने सफ़र किसी एक पर सारा बोझ डाल देने के बजाए कामों की आपस में तक़्सीम होनी चाहिये, एक मरतबा किसी सफ़र में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बकरी ज़ब्ह़ करने का इरादा किया और काम तक़्सीम कर लिया, किसी ने अपने ज़िम्मे ज़ब्ह़ का काम लिया तो किसी ने खाल

www.dawateislami.net

उधेड़ने का नीज़ कोई पकाने का ज़िम्मेदार हो गया । सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लकड़ियां जम्अ़ करना मेरे ज़िम्मे है । सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अ़र्ज़ गुज़ार हुए : आक़ा ! येह भी हम ही कर लेंगे । फ़रमाया : येह तो मैं भी जानता हूं कि तुम येह काम (ब ख़ुशी) कर लोगे मगर मुझे येह पसन्द नहीं कि तुम लोगों में नुमायां रहूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी इस को पसन्द नहीं फ़रमाता । (**हिकायत :** 66)

(اتحاف السادة المتقين،٨/٢١٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿71﴾ मुर्दे को तक्लीफ़ न दीजिये

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الْمَيِّتَ يُؤْذِيْهِ فِيْ قَبْرِهٖ مَا يُؤْذِيْهِ فِيْ بَيْتِهٖ या'नी मय्यित को जिस बात से घर में ईज़ा होती थी क़ब्र में भी उस से अज़िय्यत पाता है । (شرح الصدور،ص٢٩٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ ज़िन्दा के हाथों ज़िन्दा तक्लीफ़ उठाता है उसी त़रह़ मुर्दे भी ज़िन्दों के हाथों तक्लीफ़ उठाते हैं, आइये देखते हैं कि हम मुर्दों को तक्लीफ़ से किस त़रह़ बचा सकते हैं ?

www.dawateislami.net

मरने वाले के पेट पर भारी चीज़ रखने में एहतियात

इस के पेट पर लोहा या गीली मिट्टी या और कोई भारी चीज़ रख दें कि पेट फूल न जाए।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الأول،١/١٥٧)

मगर ज़रूरत से ज़ियादा वज़्नी न हो कि बाइसे तक्लीफ़ है।

(बहारे शरीअ़त, 1 / 809)

घरवालों के रोने से मय्यित को तक्लीफ़ होती है

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : إِنَّ الْمَيِّتَ يُعَذَّبُ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ या'नी घरवालों के रोने की वज्ह से मुर्दे पर अ़ज़ाब किया जाता है।

(بخاری،کتاب الجنائز،باب البکاء عند المریض،١/٤٤١،حدیث:١٣٠٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : मय्यित से मुराद वोह है जिस की जान निकल रही हो और अ़ज़ाब से मुराद तक्लीफ़ है या'नी अगर जान निकलते वक़्त रोने वालों का शोर मच जाए तो उस शोर से मरने वाले को तक्लीफ़ होती है, बल्कि बीमार के पास भी शोर न करना चाहिये कि इस से बीमार को ईज़ा पहुंचती है लिहाज़ा ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि किसी का गुनाह मय्यित पर क्यूं पड़ता है! (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 502)

www.dawateislami.net

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू मुह़म्मद मह़मूद बिन अह़मद ऐ़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़दीस के मा'ना येह हैं कि लोग मुर्दे पर रोते हैं तो उन का रोना सुन कर मुर्दे को सदमा होता है और उन के लिये इस का दिल कुढ़ता है। इस पर दलील येह ह़दीसे पाक है कि एक ख़ातून अपने बेटे पर रो रही थीं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें मन्अ़ किया और इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اَحَدَکُمْ اِذَابَکٰی اِسْتَعْبَرَلَہٗ صُوَیْحِبُہٗ فَیَاعِبَادَاللّٰہِ لَاتُعَذِّبُوْا اِخْوَانَکُمْ

जब तुम में कोई रोता है तो उस के रोने पर मुर्दे के भी आंसू निकल आते हैं तो ऐ ख़ुदा के बन्दो ! अपने भाइयों को तक्लीफ़ न दो।

(عمدة القاری، کتاب الجنائز، باب قول النبی یعذب المیت…الخ،٦/١٠٩، تحت الحدیث:١٢٨٨)

ज़ियारते क़ब्र का मोह़तात त़रीक़ा

ज़ियारते क़ब्र का त़रीक़ा येह है कि पाइंती की जानिब (या'नी क़दमों की त़रफ़) से जा कर मय्यित के मुंह के सामने खड़ा हो, सिरहाने से न आए कि मय्यित के लिये बाइ़से तक्लीफ़ है या'नी मय्यित को गर्दन फेर कर देखना पड़ेगा कि कौन आता है ?

(बहारे शरीअ़त, 1/809) (ردالمحتار،کتاب الصلاة،باب صلاة الجنازة،مطلب فی زیارة القبور، ٣/١٧٩)

मरने वाले को राह़त पहुंचाइये

इब्ने अबी शैबा ने ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) से रिवायत की, कि मोमिन को बा'दे मौत ईज़ा देना ऐसा ही है जैसे उसे ज़िन्दगी में सताना। मिरक़ात में है कि जिन चीज़ों से मोमिन ज़िन्दगी में राह़त पाता था

www.dawateislami.net

उन्ही चीज़ों से बा'दे मौत भी राहत पाता है, लिहाज़ा वहां तिलावत करना, ख़ुश्बूदार चीज़ें रखना वग़ैरा बेहतर है। (मिरआतुल मनाजीह, 2 / 496)

जूतों की आवाज़ से तक्लीफ़ होती है

अबुल इख़्लास ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़सन बिन अ़म्मार शुरुम्बुलाली ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मराक़िल फ़लाह़ में लिखते हैं : मुझ को मेरे उस्ताज़ अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़बर दी कि जूते की पहचल (या'नी आवाज़) से मुर्दे को ईज़ा होती है।

(مراقی الفلاح ،فصل فی زیارۃ القبور،ص ۱۵۲)

हिकायत : 67 क़ब्र पर बैठने वाले को तम्बीह

उ़मारा बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे एक क़ब्र पर बैठे देखा, फ़रमाया : ओ क़ब्र वाले ! क़ब्र से उतर आ, न तू साह़िबे क़ब्र को ईज़ा दे न वोह तुझे। (फ़तावा रज़विय्या, 9 / 434) इस मदनी ह़िकायत से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान जाते हैं और तदफ़ीन के दौरान مَعَاذَاللّٰہ बिला तकल्लुफ़ क़ब्रों पर बैठ जाते हैं।

हिकायत : 68 क़ब्र पर पाउं रखा तो आवाज़ आई

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुख़ैमर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : किसी शख़्स ने एक क़ब्र पर पाउं रखा, क़ब्र से आवाज़ आई : اِلَیْكَ عَنِّیْ وَلَاتُؤْذِنِی अपनी त़रफ़ हट, (या'नी दूर हो ! ऐ शख़्स मेरे पास से !) और मुझे ईज़ा न दे। (فتاوی رضویہ،۹/۴۵۲، شرح الصدور،ص۳۰۱)

www.dawateislami.net

हिकायत : 69

उठ तू ने मुझे ईज़ा दी

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मीना ताबेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : मैं क़ब्रिस्तान में गया, दो रक्अ़ात पढ़ कर एक क़ब्र पर लेटा रहा। ख़ुदा की क़सम ! मैं ख़ूब जाग रहा था कि सुना, साहिबे क़ब्र कहता है : قُمْ فَقَدْ اٰذَیْتَنِی उठ कि तू ने मुझे ईज़ा दी। (دَلَائِلُ النُّبُوَّۃِ لِلْبَیْہَقِی، ۷/ ۴۰)

क़ब्र पर पाउं रखना ह़राम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि क़ब्र पर पाउं रखने या सोने से क़ब्र वाले को ईज़ा होती है और बिला इजाज़ते शरई किसी मुसलमान को ईज़ा देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। लिहाज़ा किसी मुसलमान की क़ब्र पर पाउं न रखे, न किसी क़ब्र को रौंदे और न किसी क़ब्र पर बैठे और न ही टेक लगाए क्यूंकि इस से नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने मन्अ़ फ़रमाया है :

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

(1) मुझे आग की चिंगारी पर या तल्वार पर चलना मेरा पाउं जूते में सी दिया जाना ज़ियादा पसन्द है इस से कि मैं किसी मुसलमान की क़ब्र पर चलूं। (ابن ماجہ، ۲/ ۲۵۰، حدیث:۱۵۶۸)

(2) एक आदमी को आग की चिंगारी पर बैठा रहना यहां तक कि वोह उस के कपड़े को जला कर उस की खाल तक पहुंच जाए, उस के लिये बेहतर है इस से कि क़ब्र पर बैठे। (مسلم،ص۴۸۳،حدیث: ۹۷۱)

www.dawateislami.net

क़ब्र के क़रीब गन्दगी करना

क़ब्र पर रहने का मकान बनाना, या क़ब्र पर बैठना, या सोना, या उस पर बोलो बराज़ (या'नी पेशाब पाख़ाना) करना येह सब उमूर अशद्द (या'नी सख़्त तरीन) मकरूह क़रीब ब ह़राम हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 9 / 436) सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मुर्दे को क़ब्र में भी इस बात से ईज़ा होती है जिस से घर में उसे अज़िय्यत होती।

(فردوس الاخبار، ۱/۱۲۰، حدیث:۷۴۹)

रद्दुल मुह़तार में है : क़ब्रिस्तान में पेशाब करने को न बैठे : لِاَنَّ الْمَيِّتَ يَتَاَذّٰى بِمَا يَتَاَذّٰى بِهِ الْحَيُّ इस लिये कि जिस चीज़ से ज़िन्दों को अज़िय्यत होती है उस से मुर्दे भी ईज़ा पाते हैं। (ردالمحتار، ۱/۶۱۲)

﴾72﴿ बद आ'मालियों से तक्लीफ़ न दो

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : हर पीर और जुमा'रात को आ'माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर पेश होते हैं, और हर जुमुआ़ को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और वालिदैन के सामने पेश होते हैं, वोह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की चमक दमक बढ़ जाती है, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो ! और अपने फ़ौत शुदगान को अपनी बद आ'मालियों से तक्लीफ़ न दो।

(نوادر الاصول، الاصل التاسع والستون والمأة، جزء ۱، ص ۶۷۱، حدیث: ۹۲۵)

www.dawateislami.net

जानवरों को भी तक्लीफ़ न दीजिये

जिस त़रह़ हम पर इन्सानों के हुक़ूक़ होते हैं इसी त़रह़ जानवरों के भी हम पर हुक़ूक़ हैं, लिहाज़ा जानवरों को बिला वज्हे शरई तक्लीफ़ पहुंचाना जाइज़ नहीं । ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम वफ़्द की सूरत में एक बार बारगाहे फ़ारूक़ी में अ़ज़ीम फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी ले कर ह़ाज़िर हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम लोग कहां ठहरे हो ? मैं ने जगह के बारे में बताया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे साथ उस जगह तक आए और हर सुवारी को ग़ौर से देखते रहे, फिर फ़रमाया : तुम लोग इन सुवारियों के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरते ? तुम नहीं जानते कि इन जानवरों का भी तुम पर ह़क़ है ! (**ह़िकायत :** 70) (تاریخ دمشق، ٤٤/ ٢٩١ ملتقطاً)

﴿73﴾ जानवरों को कुर्सी न बना लो

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : उन जानवरों पर अच्छी त़रह़ सुवारी करो और (जब ज़रूरत न हो तो) उन से उतर जाओ, रास्तों और बाज़ारों में गुफ़्तगू करने के लिये उन्हें कुर्सी न बना लो क्यूंकि कई सुवारी के जानवर अपने सुवार से बेहतर और इस से ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले होते हैं ।

(جامع الاحادیث، ١/ ٤٠٤، حدیث: ٢٧٦٥)

www.dawateislami.net

हिकायत : 71

इस के बच्चे इसे लौटा दो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हम सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक सफ़र में थे। आप क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए तो हम ने एक चिड़िया देखी जिस के दो बच्चे थे, हम ने उन्हें पकड़ लिया, चिड़िया आई और फड़ फड़ाने लगी। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो दरयाफ़्त फ़रमाया : किस ने इसे इस के बच्चों के मुआ़मले में तक्लीफ़ पहुंचाई है ? इस के बच्चे इसे लौटा दो। (ابوداؤد، ۳/۷۵ حدیث:۲۶۷۵)

हां येहीं करती हैं चिड़िया फ़रियाद हां येहीं चाहती है हिरनी दाद

इसी दर पर शुतराने नाशाद गिलए रन्जो इ़ना करते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 113)

चिड़िया की शिकायत

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी चिड़िया को बिला ज़रूरत क़त्ल करेगा तो वोह चिड़िया क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में फ़रियाद करते हुए अ़र्ज़ करेगी : ऐ मेरे रब ! फ़ुलां ने मुझे बिला ज़रूरत क़त्ल किया था किसी नफ़्अ़ के लिये क़त्ल नहीं किया। (نسائی، ۳/۷۳ حدیث:۴۰۳۵)

www.dawateislami.net

हिकायत : 72 चिड़िया को तक्लीफ़ देने का अन्जाम

हज़रते अ़ल्लामा कमालुद्दीन दमैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं : "ज़-मख़्शरी" (जो कि मो'तज़िली फ़िर्क़े का एक मश्हूर आ़लिम गुज़रा है उस) की एक **टांग कटी हुई** थी, लोगों के पूछने पर उस ने इन्किशाफ़ किया कि येह मेरी **मां की बद दुआ़** का नतीजा है, क़िस्सा यूं हुवा कि मैं ने बचपन में एक **चिड़िया** पकड़ी और उस की टांग में डोरी बांध दी, इत्तिफ़ाक़ से वोह मेरे हाथ से छूट कर उड़ते उड़ते एक दीवार की दराड़ में घुस गई मगर डोरी बाहर ही लटक रही थी, मैं ने डोरी पकड़ कर ज़ोर से खींची तो **चिड़िया** फड़कती हुई बाहर निकल पड़ी, मगर बेचारी की **टांग** डोरी से कट चुकी थी, **मेरी मां** ने येह दर्दनाक मन्ज़र देखा तो सदमे से तड़प उठी और उस के मुंह से मेरे लिये येह **बद दुआ़** निकल गई : "जिस त़रह़ तू ने इस बे ज़बान की **टांग** काट डाली, **अल्लाह** तआ़ला तेरी टांग काटे।" बात आई गई हो गई, कुछ अ़र्से के बा'द तह़सीले इ़ल्म के लिये मैं ने "बुख़ारा" का सफ़र इख़्तियार किया, इसनाए राह सुवारी से गिर पड़ा, **टांग** पर शदीद चोट लगी, "बुख़ारा" पहुंच कर काफ़ी इलाज किया मगर तक्लीफ़ न गई बिल आख़िर टांग **कटवानी पड़ी**। (और यूं मां की बद दुआ़ रंग लाई) (حياةُ الحيوان الكبرٰى ٢٠ / ١٦٣)

नेक बन्दे च्यूंटियों को भी ईज़ा नहीं देते

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे की एक अ़लामत येह भी है कि वोह च्यूंटियों तक को ईज़ा देने से गुरेज़ करता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی اِنَّ الۡاَبۡرَارَ لَفِیۡ نَعِیۡمٍ ﴿۲۲﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नेकूकार ज़रूर चैन में हैं (پ۳۰، المطففین ۲۲) की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं : اَلَّذِیۡنَ لَا یُؤۡذُوۡنَ الذَّرّ या'नी नेक बन्दे वोह हैं जो च्यूंटियों को भी अज़िय्यत न दें। (تفسیر حسن بصری، ۵/ ۲٦٤) (गुस्से का इलाज, स. 27)

च्यूंटियों के लिये रोटी रखा करते

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़रीफ़ अ़दी बिन ह़ातिम त़ाई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ च्यूंटियों के लिये रोटी चूरा कर के रखा करते थे, और फ़रमाते थे : येह भी हमारी पड़ोसी हैं, इन का भी ह़क़ है।

(شعب الایمان، الباب الخامس والسبعون، ۷/ ٤۸۳، رقم: ۱۱۰۷۸-۷۹)

हि़कायत : 73

बेताब च्यूंटी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِيَه इन्सान तो इन्सान बिला वज्ह **जानवरों** बल्कि च्यूंटी तक को भी तक्लीफ़ देना गवारा नहीं करते ह़ालांकि अ़वामुन्नास की नज़र में इस की कोई वुक़्अ़त नहीं। एक मरतबा आप دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِيَه की ख़िदमत में पेश किये गए केलों के साथ इत्तिफ़ाक़न एक छिल्का भी आ गया जिस पर एक **च्यूंटी** बड़ी बेताबी से फिर रही थी। आप फ़ौरन मुआ़मला समझ गए लिहाज़ा फ़रमाया कि देखो येह **च्यूंटी** अपने क़बीले से बिछड़ गई है। क्यूंकि च्यूंटी हमेशा **अपने क़बीले** के साथ रहती है इस लिये बेताब है। बराहे मेहरबानी कोई इस्लामी भाई इस छिल्के को च्यूंटी समेत ले जाएं और वापस वहीं जा कर रख आएं जहां से उठाया गया है, यूं वोह छिल्का च्यूंटी समेत **अपनी जगह** पहुंचा दिया गया। (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 44)

www.dawateislami.net

हिकायत : 74

च्यूंटियों के हटने का इन्तिज़ार

इसी त़रह़ एक बार आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वॉश बेसिन (Washbasin) पर हाथ धोने के लिये पहुंचे मगर रुक गए, फिर इरशाद फ़रमाया कि "वॉश बेसिन में चन्द **च्यूंटियां** रेंग रहीं हैं, अगर मैं ने हाथ धोए तो येह बह कर मर जाएंगी !" लिहाज़ा कुछ देर इन्तिज़ार फ़रमाने के बा'द जब च्यूंटियां आगे पीछे हो गईं तो फिर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **हाथ धोए**।

(तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 45)

﴾74﴿ ज़ब्ह़ के वक़्त जानवर को ग़ैर ज़रूरी तक्लीफ़ न दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले नफ़्अ़ के लिये अगर्चे शरीअ़त ने जानवर ज़ब्ह़ करने की इजाज़त दी है लेकिन इस अ़मल के दौरान हर ऐसे काम से मन्अ़ भी किया है जो जानवर के लिये बिला सबब तक्लीफ़ का बाइ़स बने, चुनान्चे, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरशाद फ़रमाते हैं : हर वोह फ़े'ल जिस से जानवर को बिला फ़ाएदा तक्लीफ़ पहुंचे मकरूह है मसलन जानवर में अभी ह़यात बाक़ी हो ठन्डा होने से पहले उस की खाल उतारना उस के आ'ज़ा काटना या ज़ब्ह़ से पहले उस के सर को खींचना कि रगें ज़ाहिर हो जाएं या गर्दन को तोड़ना यूंहीं जानवर को गर्दन की त़रफ़ से ज़ब्ह़ करना मकरूह है बल्कि इस की बा'ज़ सूरतों में जानवर ह़राम हो जाएगा। (الهداية،كتاب الذبائح،٢/٣٥٠) (बहारे शरीअ़त, 3 / 315)

www.dawateislami.net

इस त़रह़ ज़ब्ह़ करे कि चारों रगें कट जाएं या कम से कम तीन रगें कट जाएं। इस से ज़ियादा न काटें कि छुरी गर्दन के मोहरे तक पहुंच जाए कि येह बे वज्ह की तक्लीफ़ है फिर जब तक जानवर ठन्डा न हो जाए या'नी जब तक उस की रूह़ बिल्कुल न निकल जाए उस के न पाउं वग़ैरा काटें न खाल उतारें। (البحرالرائق،کتاب الصلاۃ،باب مایفسد الصلاۃ...إلخ،۲/۵۷)

(बहारे शरीअ़त, 3 / 353)

जानवरों पर रह़्म की अपील

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "अब्लक़ घोड़े सुवार" के सफ़ह़ा 15 पर लिखते हैं : **गाए** वग़ैरा को गिराने से पहले ही क़िब्ले का तअ़य्युन कर लिया जाए, लिटाने के बा'द बिलख़ुसूस पथरीली ज़मीन पर घसीट कर क़िब्ला रुख़ करना बे ज़बान जानवर के लिये सख़्त अज़िय्यत का बाइ़स है। ज़ब्ह़ करने में इतना न काटें कि छुरी गर्दन के मोहरे (हड्डी) तक पहुंच जाए कि येह बे वज्ह की तक्लीफ़ है फिर जब तक जानवर मुकम्मल त़ौर पर ठन्डा न हो जाए न उस के पाउं काटें न खाल उतारें, ज़ब्ह़ कर लेने के बा'द जब तक रूह़ न निकल जाए छुरी कटे हुए गले पर मस (Touch) करें न ही हाथ। बा'ज़ क़स्साब जल्द "ठन्डी" करने के लिये ज़ब्ह़ के बा'द तड़पती गाए की गर्दन की ज़िन्दा खाल उधेड़ कर छुरी घोंप कर दिल की रगें काटते हैं, इसी त़रह़ बकरे को ज़ब्ह़ करने के फ़ौरन बा'द बेचारे की गर्दन चटख़ा देते हैं, बे ज़बानों पर इस त़रह़ के मज़ालिम न किये जाएं। जिस से बन पड़े उस के लिये ज़रूरी है

www.dawateislami.net

कि जानवर को बिला वज्ह ईज़ा पहुंचाने वाले को रोके। अगर बा वुजूदे कुदरत नहीं रोकेगा तो खुद भी गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार होगा। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़ह़ा 660 पर है : "जानवर पर ज़ुल्म करना ज़िम्मी काफ़िर पर (अब दुन्या में सब काफ़िर ह़र्बी हैं) ज़ुल्म करने से ज़ियादा बुरा है और ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना मुस्लिम पर ज़ुल्म करने से भी बुरा है क्यूंकि जानवर का कोई मुईन व मददगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा नहीं उस ग़रीब को इस ज़ुल्म से कौन बचाए !" (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ٦٦٢)

मरने के बा'द मज़लूम जानवर मुसल्लत़ हो सकता है

ज़ब्ह़ करने के बा'द रूह़ निकलने से क़ब्ल छुरियां चला कर बे ज़बान जानवरों को बिला वज्ह तक्लीफ़ देने वालों को डर जाना चाहिये कहीं मरने के बा'द अ़ज़ाब के लिये येही जानवर मुसल्लत़ न कर दिया जाए। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द 2 सफ़ह़ा 323 ता 324 पर है : इन्सान ने नाह़क़ किसी चोपाये को मारा या उसे भूका प्यासा रखा या उस से त़ाक़त से ज़ियादा काम लिया तो क़ियामत के दिन उस से उसी की मिस्ल बदला लिया जाएगा जो उस ने जानवर पर ज़ुल्म किया या उसे भूका रखा। इस पर दर्जे ज़ैल ह़दीसे पाक दलालत करती है। चुनान्चे, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में एक औ़रत को इस ह़ाल में देखा कि वोह

www.dawateislami.net

लटकी हुई है और एक बिल्ली उस के चेहरे और सीने को नोच रही है और उसे वैसे ही अ़ज़ाब दे रही है जैसे उस (औ़रत) ने दुन्या में क़ैद कर के और भूका रख कर उसे तक्लीफ़ दी थी। इस रिवायत का हुक्म तमाम जानवरों के ह़क़ में आ़म है। (اَلزَّواجِرُ ج۲ ص۱۷٤)

ह़िकायत : 75 मक्खी पर रह़्म करना बाइ़से मग़्फ़िरत हो गया

किसी ने ख़्वाब में ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی को देख कर पूछा : ما فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, पूछा : मग़्फ़िरत का क्या सबब बना ? फ़रमाया : एक **मक्खी** सियाही (Ink) पीने के लिये मेरे क़लम पर बैठ गई, मैं लिखने से रुक गया यहां तक कि वोह फ़ारिग़ हो कर उड़ गई। (لطائف المِنَن وَالْاَخلاق لِلشّعرانی ص۳۰۵)

رَحْمتِ حق "بہا" نہ می جوید
رَحْمتِ حق "بہانہ" می جوید

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत "बहा" या'नी क़ीमत नहीं मांगती, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो "बहाना" त़लब करती है)

मक्खी को मारना कैसा ?

याद रहे ! मक्खियां तंग करती हों तो उन को मारना जाइ़ज़ है ताहम जब भी हुसूले नफ़्अ़ या दफ़्ए़ ज़रर (या'नी फ़ाएदा ह़ासिल करने या

www.dawateislami.net

नुक़्सान ज़ाइल करने) के लिये मक्खी या किसी भी बे ज़बान की जान लेनी पड़े तो उस को आसान से आसान त़रीक़े पर मारा जाए ख़्वाह म ख़्वाह उस को बार बार ज़िन्दा कुचलते रहने या एक वार में मार सकते हों फिर भी ज़ख़्म खा कर पड़े हुए पर बिला ज़रूरत ज़र्बें लगाते रहने या उस के बदन के टुकड़े टुकड़े कर के उस को तड़पाने वग़ैरा से गुरैज़ किया जाए। अक्सर बच्चे नादानी के सबब च्यूंटियों को कुचलते रहते हैं उन को इस से रोका जाए। च्यूंटी बहुत कमज़ोर होती है चुटकी में उठाने या हाथ या झाड़ू से हटाने से उ़मूमन ज़ख़्मी हो जाती है, मौक़अ़ की मुनासबत से उस पर फूंक मार कर भी काम चलाया जा सकता है। (अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 15 ता 21)

हिकायत : 76 ऊंट वाले को मार क्यूं पड़ी ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन दारिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को देखा कि एक ऊंट वाले को मार रहे हैं और फ़रमा रहे हैं तुम अपने ऊंट पर इतना बोझ क्यूं लादते हो जिसे वोह उठाने की त़ाक़त नहीं रखता। (الامر بالمعروف والنهی عن المنکر، ص٤٥)

हिकायत : 77 एक मछली भी न चखी

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : मेरा ताज़ा मछली खाने का दिल कर रहा है। येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का ग़ुलाम "यरफ़ा" चार मील दूर किसी जगह से

www.dawateislami.net

ताज़ा मछलियों का एक टोकरा ख़रीद लाया। बा'दे अज़ां अपनी सुवारी और उस के कजावे वग़ैरा को धोया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : चलो ! मैं भी तुम्हारी सुवारी देख लूं। जब मुलाहज़ा किया तो फ़रमाया : तुम इस के कानों के नीचे का पसीना धोना भूल गए, तुम ने उ़मर की ख़्वाहिश पूरी करने के लिये इस जानवर को तक्लीफ़ में डाला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब उ़मर तुम्हारे टोकरे की एक मछली भी नहीं चखेगा।

(كنز العمال ، فضائل الصحابة ، جزء ١٢ ، ٦/٢٨٧ ، حديث : ٣٥٩٦٦)

﴾75﴿ जानवर लड़वाने से मन्अ़ फ़रमाया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जानवर लड़वाने से मन्अ़ फ़रमाया।

(ترمذی،کتاب الجهاد،باب ما جاء فی کراهية التحريش،٣/٢٧١، حديث: ١٧١٤)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : **अल्लाह** तआ़ला रह़्म फ़रमाए, आज मुसलमानों में मुर्ग़ लड़ाना, कुत्ते लड़ाना, ऊंट, बेल लड़ाने का बहुत शौक़ है येह ह़राम सख़्त ह़राम है कि इस में बिला वज्ह जानवरों को ईज़ा रसानी है, अपना वक़्त ज़ाएअ़ करना। बा'ज़ जगह माल की शर्त़ पर जानवर लड़ाए जाते हैं येह जुआ भी है ह़राम दर ह़राम है। जब जानवरों को लड़ाना ह़राम है तो इन्सान को लड़ाना सख़्त ह़राम है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 659)

हिकायत : 78

ज़ख़्मी गधा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक बार अपने सुन्नतों भरे बयान "जानवरों को सताना ह़राम है" में ज़िम्नन फ़रमाया कि मैं एक दिन अपने घर से नमाज़े ज़ोहर के लिये निकला तो देखा कि अपनी गली के थोड़े फ़ासिले पर एक **बीमार गधा** पड़ा है। उस में उठने की सकत न थी, बेचारे की गर्दन पर **ख़ारिश** के बाइस ज़ख़्म हो गया था। जिस के सबब उस ने गर्दन को ज़मीन से ऊपर उठा रखा था, गर्दन में **तक्लीफ़ बढ़ने** पर जैसे ही गर्दन ज़मीन पर रखना चाहता तो तक्लीफ़ के बाइस **दोबारा** गर्दन उठा लेता, वोह इन्तिहाई तक्लीफ़ और बेबसी के आ़लम में **मुब्तला** था। मैं ने जब उस की येह ह़ालत देखी तो मुझे उस पर **बहुत रह़म** आया कि येह (बे ज़बान) जानवर है किस से फ़रियाद करे। बहर ह़ाल मैं ने अपने घर से एक **पुरानी गुदड़ी** मंगवा ली और उस की **गर्दन के नीचे** रख दी (ताकि ज़मीन की सख़्ती की तक्लीफ़ से उस को नजात मिले) ऐसा करने से उसे **फ़िल वाक़ेअ़ तस्कीन** हुई, और उस ने अपनी गर्दन से गुदड़ी पर टेक लगा ली, आप मानें या न मानें, वोह मुझे सर उठा कर **शुक्रिया भरी नज़रों** से देखने लगा। (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 46)

मच्छर, टिड्डी और बिल्ली पर शफ़्क़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के जिस्म पर मच्छर बैठ जाता तो उसे न ही ख़ुद उड़ाते और न किसी को उड़ाने देते बल्कि फ़रमाते : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो ख़ून इस के ह़िस्से में लिख दिया है वही पी रहा है, और जब आप धूप में चल रहे होते और कोई टिड्डी आप के

www.dawateislami.net

कपड़ों में साया दार जगह पर बैठ जाती तो जब तक उड़ न जाती आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उसी जगह ठहरे रहते और फ़रमाते : इस ने हम से साया हासिल किया है। इसी त़रह़ जब आस्तीन पर बिल्ली सो जाती और नमाज़ का वक़्त हो जाता तो आस्तीन को काट देते मगर बिल्ली को न जगाते, और नमाज़ से फ़राग़त के बा'द आस्तीन दोबारा सी लेते।

(फ़ैज़ाने सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई, स. 11)

हिकायत : 79 ख़ारिश ज़दा कुत्ते की ख़बरगीरी

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक ख़ारिश ज़दा कुत्ते को देखा जिसे बस्ती वालों ने बाहर निकाल दिया था, आप उसे जंगल में ले गए और उस पर साइबान बनाया, नीज़ उसे खिलाते पिलाते और हर त़रह़ से उस का ख़याल रखते रहे, ह़त्ता कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की भरपूर तवज्जोह के नतीजे में जब वोह तन्दुरुस्त हो गया तो आप ने उसे गर्म पानी से नहला कर उजला कर कर दिया।

(फ़ैज़ाने सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई, स. 11)

हिकायत : 80 बिल्ली पर रह़्म रह़मते ख़ुदावन्दी का ज़रीआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को ख़्वाब में देखा गया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने दरबार में खड़ा कर के इरशाद फ़रमाया : तुम्हें मा'लूम है मैं ने तुम्हें क्यूं बख़्श दिया ? मैं अपने नेक आ'माल शुमार करने लगा जो नजात का ज़रीआ़ बन सकते थे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने उन आ'माल में से किसी अ़मल के सबब तेरी बख़्शिश नहीं फ़रमाई। मैं ने

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : इलाही ! फिर तू ने किस सबब से मेरी मग्फ़िरत फ़रमाई ? इरशाद फ़रमाया : एक मरतबा तुम बग़दाद की गली से गुज़र रहे थे कि तुम ने एक बिल्ली को देखा जिसे सर्दी ने कमज़ोर कर दिया था तो उस पर तरस खाते हुए तुम ने उसे अपने चूग़े (जुब्बे) में छुपा लिया ताकि वोह सर्दी से बच जाए, पस बिल्ली पर रह़म की वज्ह से मैं ने आज तुम पर रह़म फ़रमाया है। (حياة الحيوان ، باب الهاء تحت الهر ، ٢/ ٥٢٢)

ता़लिबे मग्फ़िरत हूं या अल्लाह
बख़्श है़दर का वासित़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

﴾76﴿ घरेलू बिल्ली और परन्दों का ख़याल रखिये

इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : जिस घर में उस की बिल्ली को उस की ख़ूराक और ज़रूरियात न मिलें और जिस के पिन्जरे में बन्द परन्दों की पूरी ख़बरगीरी न होती हो तो वोह कितनी ही इ़बादत करे मोह़सिनीन में शुमार नहीं होगा। (الجامع لاحكام القرآن،٥/ ١٢٢تحت الاية:٩٠)

तक्लीफ़ देने वाली बिल्ली का क्या किया जाए ?

सुवाल : बिल्ली तक्लीफ़ देती हो तो उस को बस्ती में छुड़वाना गुनाह तो नहीं है ?

जवाब : बिल्ली अगर ईज़ा देती हो तो उसे बाहर छोड़ देने में ह़रज नहीं और तेज़ छुरी से ज़ब्ह़ भी कर सकते हैं मगर छुड़वाना ऐसी जगह जाइज़ नहीं जहां से वोह अपने किसी रिज़्क़ तक न पहुंच सके। फ़क़त़।

(फ़तावा रज़विय्या, 24 / 660)

www.dawateislami.net

जानवर को चाबुक या आंकड़ा नहीं मारते थे

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النّورانی फ़रमाते हैं : जिस जानवर पर भी मुझे सुवार होने का मौक़अ़ मिले चाहे वोह ऊंट हो, गधा हो या कोई और जानवर मैं उस पर बहुत शफ़्क़त करता हूं और चाबुक रखना पसन्द नहीं करता, इस ख़ौफ़ से कि कहीं जानवर के सरकशी करते वक़्त मुझ पर नफ़्स की गर्मी ह़ावी न हो जाए और मैं उसे मारने लगूं, यूं ही जानवर के मालिक की इजाज़त से भी किसी को अपने साथ जानवर की पीठ पर सुवार नहीं करता, हां जब अन्दाज़ा हो कि जानवर को तक्लीफ़ नहीं होगी (तब किसी को बिठा लेता हूं), इसी त़रह़ उस पर सुवारी के दौरान या जब वोह लड़ खड़ाए और मुझे ज़मीन पर गिरा दे उसे गाली नहीं देता और न ही बद दुआ़ देता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दीरीनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब जानवर पर सुवार होते तो लाठी साथ नहीं रखते थे, और न ही आंकड़ा मारते और फ़रमाते : जब येह रास्ते से हटने लगेगा तो अपनी आस्तीन के ज़रीए़ इसे सीधा करना किफ़ायत कर जाएगा, क्यूंकि रोज़े क़ियामत जैसा मैं ने इसे मारा होगा वैसा ही मुझ से भी बदला लिया जाएगा, और मैं इस के जैसा खुद को लाठी से मारने की त़ाक़त नहीं रखता और न ही अपनी गुद्दी पर आंकड़ा मारने की हिम्मत है कि ख़ून निकलेगा।

(المنن الکبری، الباب الرابع عشر، ص٥٧٧)

हिकायत : 81

(77) परन्दों को निशाना बाज़ी के लिये इस्ति'माल करना

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا क़ुरैश के बच्चों के पास से गुज़रे, जो एक परन्दे को बांध कर उस पर निशाना बाज़ी कर रहे थे

www.dawateislami.net

जब कि उन्हों ने परन्दे के मालिक से येह तै किया हुवा था कि जो तीर (Arrow) निशाने पर न लगा वोह उस का होगा। जब उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आते देखा तो भाग गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह किस ने किया है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसा करने वाले पर ला'नत फ़रमाए, बेशक रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी ज़ी रूह (या'नी जानदार, Alive) को तीर अन्दाज़ी का निशाना बनाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।" (مسلم،ص۷۲۰۱،حدیث:۲۶۰۵)

हिकायत : 82

मगरमच्छ ने जान बचाई

अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی लिखते हैं कि मैं ने कम उ़म्री के ज़माने में दरियाए नील में तेरना शुरूअ़ कर दिया, दरिया चढ़ा हुवा था लिहाज़ा मैं जल्द ही थक गया और डूबने लगा। ठीक उसी वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक मगरमच्छ को भेज दिया जो मेरे पाउं के नीचे आ ठहरा जिस से मैं ने सुकून का सांस लिया और समझा कि मेरे पाउं किसी चट्टान पर हैं। फिर वोह मगरमच्छ पानी की सत्ह पर आ कर तेरने लगा और मुझे सहारा देता रहा यहां तक कि मैं किनारे तक पहुंच गया। उस मगरमच्छ ने डुबकी लगाई और मेरी निगाहों से ओझल हो गया, येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर करम हुवा कि मेरी जान बच गई। (لطائف المِنَن ص۵۶)

हिकायत : 83

अजमेरी गाएं

ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मुझे 1420 हिजरी (ब मुत़ाबिक़ 1999 ईसवी) में आ़शिक़ाने

www.dawateislami.net

रसूल के हमराह हिन्द के सफ़र का मौक़अ़ मिला । **सुल्तानुल हिन्द** ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अमारत में जो क़ाफ़िला रवाना हुवा मैं भी खुश क़िस्मती से उस में शामिल था । रात कमो बेश 3:00 बजे **अजमेर शरीफ़** के स्टेशन पर उतर कर मत़लूबा मक़ाम तक पहुंचने के लिये पैदल रवाना हुए । **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बरहना पा थे, येह देख कर तक़रीबन शुरका ने भी अदबन अपने पाउं से चप्पल उतार दिये । चलते चलते जब एक गली में दाख़िल होने लगे तो देखा कि **"चन्द गाएं"** बैठी हुई हैं । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने क़ाफ़िले को आगे बढ़ने से रोकते हुए इरशाद फ़रमाया कि हमारे इस गली से गुज़रने से **"गाएं"** तश्वीश में मुब्तला होंगी, इन के खड़े हुए कान इस बात की निशानदेही कर रहे हैं । आख़िरेकार मत़लूबा मक़ाम तक पहुंचने के लिये दूसरी गली में दाख़िल हो गए । (हुक़ूक़ुल इ़बाद की एह़तियातें, स. 16)

हिकायत : 84 शहद की मक्खी का डंक

अ़रब अमारात के क़ियाम के दौरान ग़ालिबन 4 रबीउ़ल आख़िर सिने 1418 हिजरी को क़ियाम गाह पर अ़लस्सुब्ह़ अंधेरे में शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का पाउं **एक शहद की मक्खी** पर पड़ गया । उस ने आप के पाउं के **तल्वे** पर डंक मार दिया, जिस पर आप ने बेताब हो कर क़दम उठा लिया और वोह **शहद की मक्खी** रेंगने लगी । एक इस्लामी भाई उस मक्खी को मारने के लिये दवा का स्प्रे (Flying Insect Killer) उठा लाए लेकिन आप ने फ़ौरन उस का हाथ **रोक दिया**

www.dawateislami.net

और फ़रमाया : "इस बेचारी का कुसूर नहीं, कुसूर मेरा ही है कि मैं ने बिग़ैर देखे ग़रीब पर पाउं रख दिया, अब वोह अपनी जान बचाने के लिये **डंक** न मारती तो और क्या करती ?" फिर फ़रमाया : "शहद की मक्खी के डंक में **अ़ज़ाबे क़ब्र** व जहन्नम की तज़्कीर या'नी याद है, येह तो मक़ामे शुक्र है कि मुझे शहद की मक्खी ने काटा, अगर इस की जगह कोई बिच्छू होता तो मैं क्या करता ?" (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 45)

डंक मच्छर का सहा जाता नहीं कैसे मैं फिर

क़ब्र में बिच्छू के डंक आह सहूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 84 मुरम्मम)

﴾78﴿ जिन्नात को भी तक्लीफ़ न दीजिये

रह़मत वाले आक़ा, दो जहां के दाता, शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है : तुम में से कोई शख़्स सूराख़ में पेशाब न करे । (سُنَنِ نَسائی ص١٤ حديث٣٤)

हिकायत : 85

जिन्न ने शहीद कर दिया

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **जुह़र** से मुराद या ज़मीन का सूराख़ है या दीवार की फटन (या'नी दराड़), चूंकि अक्सर सूराख़ों में ज़हरीले जानवर (या) च्यूंटियां वग़ैरा कमज़ोर जानवर या **जिन्नात** रहते हैं, च्यूंटियां पेशाब या पानी से तक्लीफ़ पाएंगी या सांप व जिन्न निकल कर हमें तक्लीफ़ देंगे, इस लिये वहां पेशाब करना मन्अ़ फ़रमाया गया । चुनान्चे, (ह़ज़रते सय्यिदुना)

www.dawateislami.net

सा'द इब्ने उ़बादा अन्सारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की वफ़ात इसी से हुई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक सूराख़ में पेशाब किया, जिन्न ने निकल कर आप को शहीद कर दिया। लोगों ने उस सूराख़ से येह आवाज़ सुनी :

نَحْنُ قَتَلْنَا سَیِّدَ الْخَزْرَجِ سَعْدَ بْنَ عُبَادَۃَ وَ رَمَیْنَاہُ بِسَھْمٍ فَلَمْ نُخْطِ فُؤَادَہ

तर्जमा : या'नी हम ने क़बीलए ख़ज़रज के सरदार सा'द बिन उ़बादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को शहीद कर दिया और हम ने (ऐसा) तीर मारा जो उन के दिल से आर पार हो गया। (مراۃ، ۱/۲۶۷،مرقاۃ،۲/۷۲،اَشِعۃُ اللّمعات ۱/۲۲۰)

हि़कायत : 86 बोसीदा हड्डियों से इस्तिन्जा न किया करें

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हम हु़ज़ूरे पाक साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थे कि एक सांप बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अपना मुंह सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कान मुबारक के क़रीब ले जा कर कुछ अ़र्ज़ की। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ठीक है"। इस के बा'द वोह लौट गया। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस के बारे में पूछा तो फ़रमाया कि "येह एक **जिन्न** था जिस ने मुझ से येह दरख़्वास्त की, कि आप अपनी उम्मत को हुक्म फ़रमाइये कि वोह लीद और बोसीदा हड्डियों से इस्तिन्जा न किया करें क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन में हमारा रिज़्क़ रखा है।" (آکام المرجان فی احکام الجان،الباب الحادی عشر فی ان الجن یاکلون ویشربون ،ص۳۲)

जिस हड्डी को जिन्नात लेते हैं उस पर उन्हें गोश्त मिलता है और जिस लीद (गोबर) को लेते हैं वोह दाना या फल बन जाता है। इस लिये येह इश्काल वारिद ही नहीं होता कि गोबर तो नापाक है इस का खाना जिन्नात के लिये कैसे जाइज़ है ? क्यूंकि माहिय्यत बदलने से नापाक चीज़ पाक हो जाती है। (माख़ूज़ अज़ नुज़्हतुल क़ारी, 4 / 678)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तक्लीफ़ न देने के फ़ज़ाइल

कौन सा मुसलमान अफ़्ज़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया : कौन सा मुसलमान अफ़्ज़ल है ? इरशाद फ़रमाया : مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।

(ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی ان المسلم من سلم الخ، ٤/٢٨٥، حدیث: ٢٦٣٧)

तक्लीफ़ न देने वाले का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : लोगों को ज़रर पहुंचाने से बचो कि इस से भी तुम को सदक़े का सवाब मिलेगा।

(بخاری، کتاب العتق، باب أیّ الرقاب أفضل، ٢/١٥٠، حدیث: ٢٥١٨) (बहारे शरीअ़त, 2 / 284)

www.dawateislami.net

जैसा करोगे वैसा भरोगे

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : न ख़ुद को ज़रर पहुंचने दे, न दूसरे को ज़रर पहुंचाए, जो दूसरे को ज़रर पहुंचाएगा **अल्लाह** तआ़ला उस को ज़रर देगा और जो दूसरे पर मशक़्क़त डालेगा **अल्लाह** तआ़ला उस पर मशक़्क़त डालेगा।

(المستدرك،كتاب البيوع،باب النهى عن المحاقلة ...إلخ، ٢/ ٣٦٩، حديث:٢٣٩٢) (बहारे शरीअ़त, 2 / 673)

तक्लीफ़ देह चीज़ से बचाना ईमान की एक शाख़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ईमान की सत्तर से कुछ ज़ाइद शाख़ें (या'नी ख़स्लतें) हैं, इन सब में **आ'ला** येह कहना है : "لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं) और सब से **अदना** "तक्लीफ़ देह चीज़ का रास्ते से हटाना है" और ह़या भी ईमान की एक शाख़ है।

(شعب الايمان،السابع والسبعون من شعب الايمان، ٧/ ٥٤٠، حديث: ١١٢٦٩)

एक नेकी का बदला जन्नत

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे रह़मत बुन्याद है :

مَنْ زَحْزَحَ عَنْ طَرِيْقِ الْمُسْلِمِيْنَ شَيْئًا يُّؤْذِيْهِمْ كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ بِهٖ حَسَنَةً وَّمَنْ كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ عِنْدَهٗ حَسَنَةً اَوْجَبَ لَهٗ بِهَا الْجَنَّةَ

या'नी जो मुसलमानों के रास्ते से कोई तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करता है तो

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बदले में उस शख़्स के लिये एक नेकी लिखता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के लिये एक नेकी लिख दे तो उस के लिये उस नेकी की वज्ह से जन्नत वाजिब फ़रमा देता है।

(مسند احمد، حدیث أبی الدرداء، ۱۰/۳۱۵، حدیث: ۲۷۵۴۹)

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 186)

भलाई का इन्आ़म

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

مَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللّٰهُ عَنْهُ بِهَا كُرْبَةً مِّنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

जो किसी मुसलमान की तक्लीफ़ दूर करे अल्लाह तआ़ला इस की बदौलत क़ियामत की मुसीबतों में से एक मुसीबत उस से दूर फ़रमाएगा।

(مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، ص ۱۳۹۴، حدیث: ۲۵۸۰)

(फ़तावा रज़विय्या, 5 / 667)

बारगाहे रिसालत में पेश किये जाने वाले आ'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मुझ पर मेरी उम्मत के अच्छे बुरे आ'माल पेश किये गए तो मैं ने उन के अच्छे आ'माल में से तक्लीफ़ देह चीज़ का रास्ते से दूर कर देना पाया और उन के बुरे आ'माल में से उस थूक को पाया जो मस्जिद में हो कि दफ़्न न किया गया। (مسلم، کتاب المساجد، باب النهی عن البصاق...الخ، ص ۲۷۹، حدیث: ۵۵۳)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस फ़रमाने आलीशान (मुझ पर मेरी उम्मत के अच्छे बुरे आ'माल पेश किये गए) के तहत तहरीर फ़रमाते हैं : या'नी ता क़ियामत मेरा जो उम्मती जो अच्छा बुरा अमल करेगा मुझे सब दिखा दिये गए। इस से मा'लूम हुवा कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हर उम्मती और उस के हर अमल से ख़बरदार हैं। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहें अंधेरे, उजयाले, खुली, छुपी, मौजूद व मा'दूम हर चीज़ को देख लेती हैं। जिस की आंख में مَازَاغَ का सुर्मा हो उस की निगाह हमारे ख़्वाबो ख़याल से ज़ियादा तेज़ है, हम ख़्वाबो ख़याल में हर चीज़ को देख लेते हैं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निगाह से हर चीज़ का मुशाहदा कर लेते हैं। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि यहां आ'माल में दिल के आ'माल भी दाख़िल हैं लिहाज़ा हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام हमारे दिलों की हर कैफ़िय्यत से ख़बरदार हैं। "तक्लीफ़ देह चीज़ का रास्ते से दूर कर देना" के तहत मुफ़्ती साहिब लिखते हैं : रास्ते से मुसलमानों का रास्ता मुराद है, या'नी जिस रास्ते से मुसलमान गुज़रते या गुज़र सकते हों वहां से कांटा, ईंट, पथ्थर दूर कर देना सवाब है।

(मिरआतुल मनाजीह, 1 / 439)

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र

मल्कूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 109)

www.dawateislami.net

हिकायत : 87 तक्लीफ़ देह दरख़्त काटने पर इन्आ़म में जन्नत मिली

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मैं ने एक शख़्स को जन्नत में मज़े से फिरते देखा उस दरख़्त की वज्ह से जिसे उस ने रास्ते के किनारे से काट दिया था जो लोगों के लिये बाइ़से तक्लीफ़ था।

(مسلم،کتاب البروالصلة،باب فضل ازالة...الخ، ص ١٤١٠،حدیث: ١٩١٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी वोह दरख़्त ख़ारदार था या बे ख़ार उस की जड़ रास्ते के किनारे पर थी मगर शाख़ें रास्ते पर फेली हुई थीं उस ने तक्लीफ़ दूर करने के लिये इसे जड़ से ही उखेड़ दिया ताकि आइन्दा भी शाख़ें न फेल सकें अगर येह दरख़्त उस की अपनी मिल्किय्यत था या खुद रौ था तब तो उस के काट देने और उस की लकड़ी घर ले जाने पर कुछ सुवाल ही नहीं पैदा होता और अगर किसी ग़ैर की मिल्किय्यत था तो उस ने फ़क़त़ दफ़्ए़ ईज़ा (या'नी तक्लीफ़ दूर करने) के लिये काट दिया होगा इस की लकड़ी पर क़ब्ज़ा न किया होगा। इस सूरत में इस ह़दीस से मस्अला मुस्तम्बत़ (अख़्ज़, ह़ासिल) होगा कि मूज़ी (अज़िय्यत देने वाली) चीज़ को ख़त्म कर देना जाइज़ है अगर्चे दूसरे की मिल्किय्यत हो, दीवाना कुत्ता जो किसी का पालतू था, सर्कस वालों का भागा हुवा शेर, सपेरों का छूटा हुवा सांप मार दिये जाएं, रास्ते में खोदा हुवा कुंवां पाट दिया जाए इस में मालिक की इजाज़त की ज़रूरत नहीं।

www.dawateislami.net

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे जन्नत में या शबे मे'राज में देखा या नमाज़े कुसूफ़ (या'नी सूरज ग्रहन के वक़्त पढ़ी जाने वाली नमाज़) में जब आप पर जन्नत पेश की गई या आ़म ह़ालत में। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 101)

तक्लीफ़ देह चीज़ हटाना सदक़ा है

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा देना सदक़ा है।

(بخاری،کتاب الجهاد،باب من اخذ ۔۔ الخ، ۲/۳۰۶،حدیث: ۲۹۸۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी रस्ते से कांटा, हड्डी, ईंट, पथ्थर गन्दगी ग़रज़ जिस से किसी मुसलमान राहगीर को तक्लीफ़ पहुंचने का अन्देशा हो उस को हटा देना भी नेकी है जिस पर सदक़े का सवाब और जोड़ का शुक्रिया है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 97)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन ख़लफ़ बत्ताल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَزَّاق फ़रमाते हैं : अगर येह सुवाल किया जाए कि रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाना सदक़ा कैसे हो सकता है? तो इस का जवाब येह है कि सदक़े का मा'ना है जिस पर सदक़ा किया जाए उसे फ़ाएदा पहुंचाना। रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाना मुसलमान भाई की इस तक्लीफ़ से ह़िफ़ाज़त का सबब बनता है तो गोया कि तक्लीफ़ देह चीज़ को रास्ते से हटाने वाला अपने भाई पर इस तक्लीफ़ से ह़िफ़ाज़त का सदक़ा करता है इस लिये इस अ़मल पर उसे सदक़े का सवाब मिलता है। येह ऐसा ही है जैसे कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी के शर

www.dawateislami.net

से बाज़ रहने को उस के अपने ऊपर सदक़ा क़रार दिया है। तक्लीफ़ देह चीज़ को रास्ते से हटाने और इस जैसे दीगर आ'माल में इस बात की तरग़ीब है कि नेक आ'माल की कसरत की जाए और किसी नेकी को छोटा न समझा जाए। (شرح ابن بطال،کتاب المظالم،باب اماطة الاذی،٦/٥٩١)

हिकायत : 88 जन्नत में दाख़िल किया गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक शख़्स दरख़्त की शाख़ पर गुज़रा जो बर सरे राह पड़ी थी। वोह बोला कि इसे मुसलमानों के रास्ते से हटा दो कहीं उन्हें तक्लीफ़ न दे, वोह जन्नत में दाख़िल किया गया।

(مسلم،کتاب البرو الصلة ، باب فضل ازالة الخ، ص ١٤١٠،حدیث :١٩١٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : वोह शाख़ या तो ख़ारदार थी जिस के कांटे लोगों को चुभ जाने का अन्देशा था और अगर बेख़ार थी तो इतनी मोटी थी जिस से राहगीर ठोकर खाते। इस ह़दीस से इशारतन मा'लूम हो रहा है कि मूज़ी चीज़ को रास्ते से हटाने में मुसलमानों की ख़िदमत की निय्यत करे न कि कुफ़्फ़ार की। यहां मिरक़ात ने फ़रमाया कि उस शख़्स ने हटाने की निय्यत ही की थी इस निय्यत पर बख़्शा गया नेकी का इरादा भी नेकी है और मुमकिन है कि उस ने हटा भी दी हो जिस का यहां ज़िक्र नहीं आया। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 101)

www.dawateislami.net

हिकायत : 89 रास्ते का कांटा हटाने ने बख़्शिश करा दी

हज़रते सय्यिदुना अबू मन्सूर बिन ज़कीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر नेक और परहेज़गार आदमी थे, जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत ज़ियादा रोए। पूछा गया : हज़रत ! आप मौत के वक़्त क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : मुझे ऐसे रास्ते पर जाना है जिस पर मैं कभी नहीं चला। आप के इन्तिक़ाल के बा'द आप के बेटे ने चौथे रोज़ अपने वालिदे मर्हूम को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : ऐ बेटे ! मुआ़मला तुम्हारे गुमान से भी मुश्किल रहा, मैं सब से अच्छे इन्साफ़ करने वाले की बारगाह में हाज़िर हुवा, मैं ने कई झगड़ा करने वालों को बहस करते देखा, मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने कहा : ऐ अबू मन्सूर ! तुम्हारी उ़म्र 70 साल हुई आज क्या ले कर आए हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने 30 ह़ज किये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने वोह क़बूल नहीं किये, मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! 40 हज़ार दिरहम मैं ने अपने हाथ से सदक़ा किये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने वोह क़बूल नहीं किये, मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! 60 साल मैं ने दिन में रोज़ा रखा और रात में इ़बादत की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तेरी येह इ़बादत भी क़बूल नहीं की, मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने 40 ग़ज़वात में शिर्कत की, इरशाद हुवा : येह भी क़बूल नहीं, मैं ने कहा : मैं हलाक हुवा। इतने में रब عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : येह मेरी शान के लाइक़ नहीं कि मैं तुझ जैसे आदमी को अ़ज़ाब दूं तुझे याद है ! एक मरतबा

www.dawateislami.net

तू अपने घर से बाहर कहीं जा रहा था कि रास्ते में तू ने एक कांटा देखा और मुसलमान को अज़िय्यत से महफ़ूज़ रखने की निय्यत से वोह कांटा रास्ते से हटा दिया था, मैं ने तेरे उसी अ़मल के सबब तुझ पर रह़्म किया और बेशक मैं भलाई करने वालों का सवाब ज़ाएअ़ नहीं करता।

इस ह़िकायत को ज़िक्र करने के बा'द शैख़ इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तह़रीर फ़रमाया : इस से मा'लूम हुवा : जब रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर करना रह़मत और मग़फ़िरत का ज़रीआ़ है तो लोगों से तक्लीफ़ को दूर करना, ख़ुसूसन मुसलमानों से तक्लीफ़ दूर करना, सब से बढ़ कर अपने अह्लो इ़याल से तक्लीफ़ को दूर करना कल क़ियामत में किस क़दर नफ़्अ़ मन्द होगा ! मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को नफ़्अ़ देने वालों में शामिल फ़रमाए न कि तक्लीफ़ देने वालों में।

(روح البيان، ٢٠/١٩٨)

रज़ाए ख़स्ता ! जोशे बह़रे इ़स्यां से न घबराना
कभी तो हाथ आ जाएगा दामन उन की रह़मत का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 39)

अल्लाह का प्यारा कौन ?

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلْخَلْقُ عِيَالُ اللّٰهِ فَاَحَبُّ النَّاسِ اِلَى اللّٰهِ مَنْ اَحْسَنَ اِلٰى عِيَالِهٖ मख़्लूक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़याल है, तो लोगों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से प्यारा वोह शख़्स है जो उस के इ़याल के साथ अच्छा बरताव करे।

(المعجم الاوسط، من اسمه محمد، ٤/١٥٣، حديث : ٥٥٤١)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इयाल के मा'ना परवर्दा (वोह लोग जिन्हें पाला जाए) बहुत मुनासिब हैं। बाल बच्चों को इयाल इसी लिये कहते हैं कि वोह साहि़बे ख़ाना के परवर्दा होते हैं, **अल्लाह** तआ़ला सब का राज़िक़ है, मख़्लूक़ उस की मरज़ूक़ है, लिहाज़ा उस की इयाल है या'नी परवर्दा। तुम उस शख़्स से बहुत ख़ुश होते हो जो तुम्हारे गुलामों लौंडियों बाल बच्चों से अच्छा सुलूक करे क्यूंकि वोह तुम्हारे परवर्दा हैं ऐसे ही जो कोई **अल्लाह** की मख़्लूक़ से भलाई करे **अल्लाह** उस से ख़ुश होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 582)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : इयाल से मुराद येह है कि मख़्लूक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मोह़ताज है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की ह़ाजत रवाई फ़रमाता है। मज़ीद नक़्ल फ़रमाते हैं : मख़्लूक़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इयाल कहना मजाज़न है, चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों के रिज़्क़ का ज़ामिन व कफ़ील है तो मख़्लूक़ इयाल की त़रह़ हो गई। अच्छे बरताव में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ हिदायत देना, ता'लीम देना, मेहरबानी करना, रह़्म करना, उन पर ख़र्च करना वग़ैरा दीनी व दुन्यावी भलाइयां शामिल हैं। आक़ा को अपने बन्दों पर किसी का एह़सान करना अच्छा लगता है। इस ह़दीस में मख़्लूक़ की ह़ाजात पूरी करने और इल्म, माल, इ़ज़्ज़त, जाइज़ सिफ़ारिश वग़ैरा जो आसान लगे उस के ज़रीए़ नफ़्अ़ पहुंचाने की फ़ज़ीलत मौजूद है।

(فیض القدیر ، حرف الخاء ، ٣/ ٦٧٤ ، تحت الحدیث : ٤١٣٥)

www.dawateislami.net

हिकायत : 90

खोटा दिरहम जाएअ़ कर देते

हज़रते सय्यिदुना सालेह़ दह्हान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास कोई खोटा दिरहम आ जाता तो उस के टुकड़े कर के फैंक देते, ताकि उस के ज़रीए़ किसी मुसलमान को धोका न दिया जा सके।

(حلية الاولياء، جابر بن زيد، ٣/ ١٠٤، رقم: ٣٣٣٨)

लोगों को अपने शर से बचाओ

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि कौन सा अ़मल ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है ? फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना और राहे ख़ुदा में जिहाद करना। मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : कौन से ग़ुलाम का आज़ाद करना अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : जो क़ीमत में ज़ियादा और मालिकों का पसन्दीदा हो। मैं ने अ़र्ज़ की : अगर ऐसा न कर सकूं ? फ़रमाया कि किसी कारीगर की मदद करो या किसी बे हुनर का काम संवार दो। मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि अगर येह भी न कर सकूं ? फ़रमाया कि लोगों को अपने शर से बचाए रखो क्यूंकि येह भी एक सदक़ा है जो तुम अपनी जान के लिये दोगे।

(بخاری، کتاب العتق، باب ای الرقاب افضل، ۲/ ۱۵۰ حدیث: ۲۵۱۸)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी कोशिश करो कि तुम से किसी को नुक़्सान न पहुंचे। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 181)

अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى हदीसे पाक के इस हिस्से "लोगों को अपने शर से बचाए रखो" के तहत इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के हवाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : लोगों को अपने शर से बचाने पर सवाब उसी सूरत में मिलेगा जब कि निय्यत और इरादा हो और अगर लोगों को अपने शर से बचाना बे ख़याली और ग़फ़्लत में हो तो इस सूरत में सवाब हासिल नहीं होगा।

(فتح الباری ،کتاب العتق، باب ای الرقاب افضل،٦/١٢٧ تحت الحديث:٢٥١٨)

हिकायत : 91

फ़िक़्हे अक्बर क्या है ?

हज़रते सय्यिदुना जरीर बिन उस्मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिद के साथ हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में हाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन के वालिद से हज़रते सय्यिदुना जरीर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में पूछा, बा'दे अज़ां इरशाद फ़रमाया : इसे फ़िक़्हे अक्बर की ता'लीम दो। उन्हों ने पूछा : फ़िक़्हे अक्बर क्या है ? इरशाद फ़रमाया : क़नाअत इख़्तियार करना और किसी को तक्लीफ़ न देना। (تاریخ الخلفاء ، عمر بن عبد العزیز ، ص ١٩٥)

क़ब्र की तक्लीफ़ से बचाव का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना अबू काहिल क़ैस बिन आइज़ अहमसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू काहिल ! जो लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उसे क़ब्र की तक्लीफ़ से बचाए।

(المعجم الكبير، ١٨/ ٣٦١، رقم : ٩٢٨)

क़ब्र में कुछ न दे सज़ा या रब *सांप लिपटें न मेरे लाशे से*

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

हिकायत : 92 तलबा को ज़हमत न दी

अजमेर शरीफ़ तदरीस के ज़माने में सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى के छोटे साहिबज़ादे जो हज़रत से बहुत मुशाबेह थे और आप उन से बहुत प्यार करते थे उन का इन्तिक़ाल हो गया। सदरुश्शरीआ عَلَيْهِ الرَّحْمَة के दौलत ख़ाने और तलबा की क़ियाम गाह के दरमियान तक़रीबन एक मील का फ़ासिला था। तलबा को इस सानेहे की बहुत देर से ख़बर हुई, जब पहुंचे तो सदरुश्शरीआ عَلَيْهِ الرَّحْمَة साहिबज़ादे की तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो चुके थे। तलबा अर्ज़ गुज़ार हुए : हुज़ूर ने हमें इत्तिलाअ़ न दी। इरशाद फ़रमाया : मुझे ख़याल हुवा कि गर्मी का वक़्त है, आप लोगों को तक्लीफ़ होगी लिहाज़ा दफ़्न कर दिया। (माहनामा अशरफ़िया, सदरुश्शरीआ, नम्बर स. 13)

हिकायत : 93 किसी की दिल शिक्नी न हो

मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द हज़रते अल्लामा मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان 3 अप्रैल 1974 ईसवी बुध को "ज़ाकिर नगर जमशेद पुर" में किसी के यहां क़ियाम फ़रमा थे, रात जल्से की वज्ह से काफ़ी

www.dawateislami.net

ताख़ीर हो गई, फ़ज्र से क़ब्ल बहुत क़लील वक़्त आराम करने को मिला, इस लिये बा'द नमाज़े फ़ज्र वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ हो कर आंखों में सुर्मा इस्ति'माल फ़रमाया और सोने का इरादा किया, इतने में जो लोग मौजूद थे उन को कोई साहिब हटाने लगे। इस पर ह़ज़रत ने फ़रमाया : इन लोगों से पूछ लें, शायद इन को कोई ह़ाजत हो, इसे नापसन्द फ़रमाया कि उन को हटाया जाए, गोया उन की ह़ाजत बर आरी को अपने आराम पर तरजीह़ दी और येह मा'मूल हमेशा ही का था कि जुम्ला ह़ाज़िरीन की ह़ाजात की तक्मील के बा'द ही सोने और आराम करने की कोशिश करते, हां ख़ुद से लोग ख़याल करते हुए उठ कर चले जाएं तो दूसरी बात है। "**हटो ! ह़ज़रत को आराम करने दो, आप लोग जाएं ह़ज़रत सोएंगे, आप लोग आराम करने दें**" इस क़िस्म के जुम्लों से नाराज़ होते थे कि शायद किसी की दिल शिकनी हो जाए या किसी की कोई अहम ज़रूरत पूरी होने से रह जाए। ग़रज़ कि ख़ल्क़ का वोह ख़याल फ़रमाते थे कि इस ज़माने में इस का तसव्वुर भी दुश्वार है। येह ख़ास औलियाउल्लाह की शान है और अख़्लाक़ की निहायत आ'ला मिसाल भी। (जहाने मुफ़्तिये आ'ज़म, स. 903)

जुल्मन ईज़ा देने की क़सम खा ली तो क्या करे ?

अगर किसी को जुल्मन ईज़ा देने की क़सम खाई तो उस क़सम का पूरा करना गुनाह है। उस क़सम के बदले कफ़्फ़ारा देना होगा। चुनान्चे, बुख़ारी शरीफ़ में है, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : अगर कोई शख़्स अपने अहल के मुतअ़ल्लिक़ उस को अज़िय्यत और ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के लिये क़सम खाए पस

www.dawateislami.net

ब ख़ुदा उस को ज़रर देना और क़सम को पूरा करना इन्दल्लाह (या'नी **अल्लाह** के नज़दीक) ज़ियादा गुनाह है इस से कि वोह उस क़सम के बदले कफ़्फ़ारा दे जो **अल्लाह** तआ़ला ने उस पर मुक़र्रर फ़रमाया है।

(بُخاری، ۲۸۱/٤ حدیث:٦٦٢٥، فتاوی رضویہ،۵۴۹/۱۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स अपने घरवालों में से किसी का ह़क़ फ़ौत (या'नी ह़क़ तलफ़ी) करने पर क़सम खा ले मसलन येह कि मैं अपनी मां की ख़िदमत न करूंगा या मां बाप से बात चीत न करूंगा, ऐसी क़समों का पूरा करना गुनाह है। उस पर वाजिब है कि ऐसी क़समें तोड़े और घरवालों के हुक़ूक़ अदा करे, ख़याल रहे यहां येह मत़लब नहीं कि येह क़समें पूरी न करना भी गुनाह मगर पूरी करना ज़ियादा गुनाह है बल्कि मत़लब येह है कि ऐसी क़सम पूरी करना बहुत बड़ा गुनाह है, पूरी न करना सवाब, कि अगर्चे रब عَزَّوَجَلَّ के नाम की बे अदबी क़सम तोड़ने में होती है इसी लिये उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब होता है मगर यहां क़सम न तोड़ना ज़ियादा गुनाह का मूजिब है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 198 मुलख़्ख़सन)

तक्लीफ़ पर सब्र कर के सवाब कमाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां दूसरों को तक्लीफ़ न देना कारे सवाब है वहीं उन की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ पर सब्र व शिकेबाई का मुज़ाहरा करना भी ह़ुसूले सवाब का ज़रीआ़ है, चुनान्चे : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दो जहां के आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह मोमिन जो लोगों से मेल

www.dawateislami.net

जोल रखता और उन के तक्लीफ़ देने पर सब्र करता है, उस का सवाब उस मोमिन से ज़ियादा है जो लोगों से मेल जोल नहीं रखता और उन के तक्लीफ़ पहुंचाने पर सब्र नहीं करता।

(ابن ماجه،كتاب الفتن،باب الصبر على البلاء،٤/٣٧٥،حديث:٤٠٣٢)

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो !

आशिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके

(वसाइले बख़्शिश, स. 412)

हिकायत : 94 अर्ज़े क्लीमी और इरशादे इलाही

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! लोगों की ज़बानों को मुझे तक्लीफ़ देने से रोक दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : अगर किसी के लिये ऐसा करना होता तो अपने लिये करता। (حلية الاولياء، وهب بن منبه، ٤/٤٥، رقم: ٤٦٩٦)

हिकायत : 95 औरत की बद अख़्लाक़ी पर सब्र

हज़रते सय्यिद अहमद कबीर रिफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى का एक मुरीद जो कई मरतबा ख़्वाब में आप को जन्नत में देख चुका था लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से उस का कोई ज़िक्र न किया था, एक दिन आप की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप की बीवी को आप से बद सुलूकी करते पाया और देखा कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ज़ियादती पर ख़ामोश हैं। वोह मुरीद येह

www.dawateislami.net

देख कर बे क़रार हो गया और दीगर अ़क़ीदत मन्दों के पास जा कर कहने लगा : येह ह़ज़रत पर इस क़दर ज़ियादती करती है और तुम ख़ामोश रहते हो ? किसी ने कहा : इस का महर पांच सौ दीनार है और ह़ज़रत ग़नी नहीं हैं। वोह आदमी गया और पांच सौ दीनार ले कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में पेश कर दिये, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : येह क्या है ? अ़र्ज़ की : उस औ़रत का ह़क़्क़े महर है जो आप के साथ बुरा सुलूक करती है, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया : अगर मैं इस की बद ज़बानी और बद सुलूकी पर सब्र न करता तो क्या तुम मुझे जन्नत में देख पाते ??? (फ़ैज़ाने सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई, स. 19)

तक्लीफ़ देने वाले को तक्लीफ़ देना

आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से फ़तावा रज़विय्या में एक सुवाल हुवा : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि एक शख़्स ज़ैद को तक्लीफ़ देता रहता है और तक्लीफ़ देने पर आमादा है, हर त़रीक़ से ता'वीज़ या जादू वग़ैरहा से और ज़ैद अब तक ख़ामोश है और सब तक्लीफ़ सह रहा है, एक दो शख़्स से मा'लूम हुवा है कि वोह अब जान लेने पर आमादा है, क़िस्सा येह है कि ज़ैद का मकान है, वोह येह कहता है कि मकान मुझ को मिल जाए और उस की दिली मन्शा येही है, ज़ैद का ज़ाती मकान है बिला वज्ह मांगता है, अब ज़ैद मुतह़म्मिल नहीं हो सका, अब ज़ैद भी येह चाहता है कि मैं हर त़रीक़ से उस को तक्लीफ़ रसा होऊं शरीअ़त कहां तक हुक्म देती है ?

www.dawateislami.net

जवाब इरशाद फ़रमाया : ईज़ा रसानी के इरादे पर ईज़ा नहीं दे सकता, अपने बचाव की तदबीर कर सकता है, जब तक कि उस का अ़ज़्म ऐसा न साबित हो कि बे ईज़ा दिये अपना बचाव न हो सकेगा तो उस वक़्त सिर्फ़ इतनी बात जिस में अपना बचाव हो सके कर सकता है, और जो ईज़ा उस ने पहुंचाई है उस का इ़वज़ इतना ही ले सकता है, इस से ज़ियादा करे तो उस का ज़ुल्म होगा, और अगर सब्र करे तो बहुत बेहतर। وَاللّٰہ تعالٰی اَعْلَم

(फ़तावा रज़विय्या, 24 / 349)

एह़सान क्या है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का फ़रमाने आ़लीशान है : एह़सान येह नहीं कि जो तुझ पर एह़सान करे तू भी उस के साथ एह़सान कर, येह तो उस के एह़सान का बदला होगा, एह़सान तो येह है कि जो तेरे साथ बुरा करे उस पर भी एह़सान कर।

(تاریخ دمشق ، عیسی ابن مریم ، ٤٧/ ٤٣٦)

मुआ़फ़ी मांग लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ कर लीजिये, सच्ची तौबा कर लीजिये और ठहरिये ! बन्दों की ह़क़ तलफ़ी के मुआ़मले में बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सिर्फ़ तौबा करना काफ़ी नहीं, बन्दों के जो जो ह़ुक़ूक़ पामाल किये हों वोह भी अदा करने होंगे, मसलन माली ह़क़ है तो उस का माल लौटाना होगा, दिल दुखाया है तो

www.dawateislami.net

मुआ़फ़ करवाना होगा । आज तक जिस जिस का मज़ाक़ उड़ाया, बुरे अल्क़ाब से पुकारा, त़ा'नाज़नी और त़न्ज़बाज़ी की, दिल आज़ार नक़्लें उतारीं, दिल दुखाने वाले अन्दाज़ में आंखें दिखाईं, घूरा, डराया, गाली दी, ग़ीबत की और उस को पता चल गया । झाड़ा, मारा, ज़लील किया, अल ग़रज़ किसी त़रह़ भी बे इजाज़ते शरई ईज़ा का बाइस बने उन सब से फ़र्दन फ़र्दन मुआ़फ़ करवा लीजिये अगर किसी फ़र्द के बारे में येह सोच कर बाज़ रहे कि मुआ़फ़ी मांगने से उस के सामने मेरी "पोज़ीशन डाऊन" हो जाएगी तो ख़ुदारा ग़ौर फ़रमा लीजिये ! क़ियामत के रोज़ अगर येही फ़र्द आप की नेकियां ह़ासिल कर के अपने गुनाह आप के सर डाल देगा उस वक़्त क्या होगा ! ख़ुदा की क़सम ! सह़ीह़ मा'नों में आप की "पोज़ीशन" की धज्जियां तो उस वक़्त उड़ेंगी और आह ! कोई दोस्त बरादर या अ़ज़ीज़ हमदर्दी करने वाला भी न मिलेगा। जल्दी कीजिये ! जल्दी कीजिये ! अपने वालिदैन के क़दमों में गिर कर, अपने अ़ज़ीज़ों के आगे हाथ जोड़ कर, अपने मा तह़्तों के पाउं पकड़ कर अपने इस्लामी भाइयों और दोस्तों से गिड़ गिड़ा कर आज दुन्या में मुआ़फ़ी मांग कर आख़िरत की इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की सई फ़रमा लीजिये ।

बद मुआ़श ने तौबा कर ली

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाना बेह़द मुफ़ीद है, आप अपने शहर में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त

www.dawateislami.net

में शिर्कत कीजिये, इन इजतिमाआ़त की बरकत से कैसे कैसे बिगड़े हुए लोगों की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस की एक झलक इस **मदनी बहार** में मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे, एक आ़लिम साहिब जो कि दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ हैं उन्हों ने बताया कि सिने 1995 ईसवी में एक शख़्स जिस पर कमो बेश 11 डकेतियों के केस थे जिन में एक क़त्ल का मुक़द्दमा भी शामिल है । एक साल जेल की सलाखों के पीछे भी रहा था । मोहकमए नहर में मुलाज़मत भी थी । तनख़्वाह 3000 थी मगर वोह नाजाइज़ ज़राएअ़ से मसलन दरख़्त फ़रोख़्त कर के, चोरी का पानी वग़ैरा दे कर माहाना 10,000 तक कर लेता । उस ने बड़ी बड़ी मूछें रखी थीं, देखने वाले को उस से वहशत होती । एक रोज़ मैं ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए उसे दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश की मगर उस ने मेरी दा'वत टाल दी, मैं ने हिम्मत नहीं हारी वक़्तन फ़ वक़्तन दा'वत पेश करता रहा । आख़िरे कार कमो बेश दो साल बा'द उस ने दा'वत क़बूल कर ली और वोह "**रीवॉल्वर**" के साथ इजतिमाअ़ में शरीक हो गया । इत्तिफ़ाक़ से उस दिन मेरा ही बयान था जो कि जहन्नम के अ़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ था । **जहन्नम की तबाहकारियां** सुन कर सख़्त सर्दियों का मौसिम होने के बा वुजूद **बद मआ़श** पसीने से शराबोर हो गया । बा'दे इजतिमाअ़ वोह रोता जाता और कहता जाता : हाए ! मेरा क्या बनेगा ! मैं ने बहुत सारे गुनाह किये हैं । फिर वोह तीन दिन बुख़ार के

www.dawateislami.net

आ़लम में रहा। उसे अपने गुनाहों का शिद्दत से एह़सास हो चुका था, उस ने तौबा कर ली और नमाज़ें भी पढ़ने लगा। **दूसरी** जुमा'रात उसे फिर इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली और **जन्नत** के मौज़ूअ़ पर बयान सुन कर उस को ढारस मिली। आहिस्ता आहिस्ता उस पर **मदनी रंग** चढ़ता चला गया। यहां तक कि वोह **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। उस ने घर से T.V निकाल बाहर किया (क्यूंकि इस में सिर्फ़ गुनाहों भरे चेनल्ज़ ही देखे जाते थे, "मदनी चैनल" शुरूअ़ न हुवा था) **दाढ़ी** और **सब्ज़ इमामा** सजाने की सआ़दत भी ह़ासिल कर ली। येह बयान देते वक़्त वोह दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में मश्ग़ूल तन्ज़ीमी त़ौर पर सूबाई सत़ह़ पर मजलिसे **ख़ुद्दामुल मसाजिद** की ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ है।

(नेकी की दा'वत, स. 181)

अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला मदनी माह़ोल
गुनहगारो आओ, सियह कारो आओ गुनाहों को देगा छुड़ा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 203)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
ترجمۂ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ١٣٤٠ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ٦٠٦ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ١٤٢٠ھ
الجامع لاحکام القرآن	ابو عبد اللہ محمد بن احمد الانصاری قرطبی، متوفی ٦٧١ھ	دار الفکر، بیروت
تفسیر خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ٧٤١ھ	اکوڑہ خٹک نوشہرہ
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر حسن بصری	امام حسن بن عبد اللہ بصری، متوفّٰی ١١٠ھ	باب المدینہ کراچی
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ٢٥٦ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ٢٦١ھ	دار ابن حزم، بیروت ١٤١٩ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ٢٧٩ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ
سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ٢٧٥ھ	دار احیاء التراث، بیروت ١٤٢١ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ٢٧٣ھ	دار المعرفۃ، بیروت ١٤٢٠ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ٢٤١ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ
سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ٣٠٣ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٦ھ
سنن الکبریٰ	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ٤٥٨ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٤ھ
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ٣٦٠ھ	دار احیاء التراث، بیروت ١٤٢٢ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ٣٦٠ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٠ھ
مستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ٤٠٥ھ	دار المعرفہ بیروت ١٤١٨ھ
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ٤٥٨ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ
فردوس الاخبار	الحافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ الدیلمی، متوفی ٥٠٩ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٨ھ
شرح السنۃ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ٥١٦ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٤ھ

www.dawateislami.net

الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی، متوفی ۷۳۹ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
نوادر الاصول	ابوعبداللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبہ امام بخاری، مصر ۱۴۲۹ھ
تاریخ مدینہ دمشق	علامہ علی بن حسن المعروف بابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
جامع الاحادیث	امام جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
حلیۃ الاولیاء	امام ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
الترغیب والترہیب	زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر	الامام مجدالدین المبارک بن محمد الجزری، متوفی ۶۰۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۲۰۱۱ء
عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
نزہۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک اسٹال، مرکز الاولیاء لاہور
شرح ابن بطال	ابوالحسن علی بن خلف بن عبدالملک متوفی ۴۴۹ھ	مکتبۃ الرشد الریاض، ۱۴۲۰ھ
شرح مسلم	امام محی الدین ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۰۱ھ
شرح ابوداود	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	مکتبۃ الرشد، ریاض، ۱۴۲۰ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
التیسیر بشرح جامع الصغیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	مکتبۃ الامام الشافعی، ریاض ۱۴۰۸ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ
مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، مرکز الاولیاء لاہور
سیر اعلام النبلاء	شمس الدین محمد بن احمد ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
الطبقات الکبری	محمد بن سعد الہاشمی البصری المعروف بابن سعد، متوفی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ

www.dawateislami.net

الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمد عبداللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
مکارم الاخلاق	الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
دلائل النبوۃ	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
سیرت ابن جوزی	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن جوزی، المتوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۴ھ
سیرت ابن عبدالحکم	ابومحمد عبداللہ بن عبدالحکم، المتوفی ۲۱۴ھ	مکتبۃ وھبۃ
الزواجر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
تاریخ المدینۃ المنورۃ	ابوزید عمر بن شبۃ النمیری البصری المتوفی، ۲۶۵ھ	دارالفکر، ۱۴۱۰ھ
شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
المنبہات	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	پشاور
المنبہات	ابوعبداللہ محمد بن علی حکیم ترمذی، متوفی ۲۵۵ھ	مکتبۃ القرآن، مصر
قوت القلوب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی، متوفّٰی ۳۸۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
آکام المرجان فی احکام الجان	علامہ بدرالدین ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ الشبلی، المتوفی ۷۶۹ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
کیمیائے سعادت	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ، تہران ۱۳۷۹ھ
مختصر منہاج القاصدین	الامام الشیخ احمد بن عبدالرحمٰن بن قدامۃ المقدسی، المتوفی ۶۸۲ھ	مکتبۃ دارالبیان ۱۳۹۸ھ
تنبیہ المغترین	ابوالمواہب عبدالوہاب بن احمد المعروف بالشعرانی، المتوفی ۹۷۳ھ	دارالمعرفۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
الرسالۃ القشیریۃ	امام ابوالقاسم عبدالکریم بن ہوازن قشیری، متوفی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
الابریز	احمد بن المبارک المغربی، المتوفی ۱۱۵۵ھ	موافق وزارۃ الاعلام السوریہ، ۱۴۰۴ھ
روض الریاحین	امام عبداللہ بن اسعد الیافعی، متوفّٰی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
المنن الکبری	ابوالمواہب عبدالوہاب بن احمد المعروف بالشعرانی، المتوفی ۹۷۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت 2005ء
حیاۃ الحیوان الکبریٰ	کمال الدین محمد بن موسیٰ دمیری، متوفی ۸۰۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دارصادر بیروت
اتحاف السادۃ المتقین	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفی ۸۵۰ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ
الامر بالمعروف والنھی عن المنکر	ابوبکر احمد بن محمد ہارون الخلال، المتوفی ۳۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۶ھ

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़फ़िरत	1	(2) एह़सान जता कर ईज़ा देना	18
गन्दुम की बाली (ह़िकायत)	1	नेकी कर दरिया में डाल	19
अच्छा कौन और बुरा कौन ?	4	जन्नत में नहीं जाएगा	20
मुसलमान का ख़ून, माल और इ़ज़्ज़त		एह़सान जताना कब बुरा है ?	20
मुसलमान पर ह़राम है	5	एह़सान जताने की बुन्याद	20
जिस ने मुसलमान को तक्लीफ़ दी उस		नुक़्सान उठाने वाले तीन अफ़राद	21
ने मुझे तक्लीफ़ दी	6	भलाई नहीं रहती (ह़िकायत)	22
किस क़दर बद तरीन जुर्म है !	7	एह़सान के बदले में दुआ़ भी त़लब न	
क़ियामत का ख़ौफ़ दिलाने पर बेहोश		करतें	22
हो गए (ह़िकायत)	8	चीज़ वापस कर के एह़सान किया है (ह़िकायत)	23
दूसरों को ईज़ा देने वालो ख़बरदार !	8	कोई चीज़ हाथ में न देते (ह़िकायत)	23
बद अख़्लाक़ी की दो अ़लामतें	9	थेली तो मिलती मगर देने वाले का	
ख़ुश ख़ुल्क़ी के दरजात	9	पता न चलता (ह़िकायत)	24
सज़ा का मुस्तह़िक़ है	10	(3) तीसरे फ़र्द की मौजूदगी में सरगोशी	
बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब	10	करना	24
छड़ी बाग़ में वापस रख आए (ह़िकायत)	11	(4) मेज़बान को तक्लीफ़ देना	26
दो अच्छी और दो बुरी ख़स्लतें	11	ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते	27
इ़बादत का ता़'ना देने का अन्जाम (ह़िकायत)	12	ने'मतों को ऐ़ब नहीं लगाया जाता	28
लोगों को तक्लीफ़ देने वाला मलऊ़न है	13	अपने घर में भी खाने में ऐ़ब न निकालें	28
लोगों को तक्लीफ़ देने वाले का अ़ज़ाब	13	मेरा लोटा गिरवी न होता (ह़िकायत)	29
आग में फेंक दिया जाएगा	14	पूछगछ न करे	30
ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी	15	खाने के बारे में तफ़्तीश न की जाए	31
खाल तक उतार लेंगे	15	ह़लाल को ह़लाल ही जानो	33
क्या अब भी बाज़ नहीं आएंगे ?	16	येह ह़राम है (ह़िकायत)	33
(1) मुसलमान को घूर कर देखना	16	मुर्दार ऊंट (ह़िकायत)	34
आंख से तक्लीफ़ पहुंचाना जाइ़ज़ नहीं	17	(5) मिल कर खाने में तक्लीफ़ न दीजिये	35

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
अनोखा दस्तर ख़्वान (हिकायत)	36	फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं	59
अपनी ज़रूरत की चीज़ दे देने की फ़ज़ीलत	37	किसी को बे वुकूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म	60
(6) मरीज़ को तक्लीफ़ न दीजिये	38	महब्बत भरे नाम से पुकारा	61
इन्हें मरीज़ की इयादत करना सिखा (हिकायत)	39	जब "गिलहरी" बड़ी हुई (हिकायत)	62
दरवाज़ा बन्द कर दो (हिकायत)	39	(11) रास्तों को तंग कर देना	63
तुम्हें तक्लीफ़ क्या है ? (हिकायत)	40	बन्द नालियां खुलवा दीं (हिकायत)	64
मरीज़ के पास ज़ियादा देर मत बैठो (हिकायत)	40	हुकूके आम्मा के एहसास की हिकायत	65
इयादत के 7 मदनी फूल	40	रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाओ	65
बे वुकूफ़ों का इयादत करना	41	आम रास्ते की तरफ़ बैतुल ख़ला वग़ैरा बनाना	66
(7) बिला इजाज़त किसी का ख़त देखना	41	रास्ते पर ख़रीदो फ़रोख़्त करने के तीन मसाइल	67
(8) पड़ोसी को तक्लीफ़ न दीजिये	43	रास्ते पर किसी को तक्लीफ़ न दो !	67
वोह ईमान वाला नहीं हो सकता	44	खेती के मालिक की शिकायत (हिकायत)	69
तुम हमारे साथ न बैठो (हिकायत)	45	रस्सी खुलवा दी (हिकायत)	71
40 घर पड़ोस में दाख़िल हैं	46	(12) वुरसा को तक्लीफ़ न दीजिये	71
हमसाए की बकरी को भी तक्लीफ़ न दो (हिकायत)	46	60 साल इबादत के बावुजूद दोज़ख़ का फ़ैसला	73
पड़ोसियों को तक्लीफ़ देने की मुख़्तलिफ़ सूरतें	47	(13) औलाद से यक्सां सुलूक न रखना	74
पड़ोसी के हुकूक़	47	मैं जुल्म पर गवाह नहीं बनता (हिकायत)	76
पड़ोसियों की ख़ातिर शोरबा ज़ियादा पका लो	48	(14) बच्चों को तक्लीफ़ न दीजिये	77
पड़ोसियों के लिये भी गोश्त ख़रीद लेते (हिकायत)	50	लड़के के ख़त्ने में भी ख़याल रखिये	78
(9) तक्लीफ़ देने वाला मज़ाक़ न कीजिये	50	(15) दा'वते वलीमा वग़ैरा में ग़रीबों का ख़याल न रखना	78
मिज़ाह और सुख़रिय्या में फ़र्क़	52	बद तरीन खाना	79
लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले का अन्जाम	52	कपड़ों को खाना खिला रहा हूं (हिकायत)	80
मज़ाक़ में भी डराने से रोका (हिकायत)	52	(16) ज़ख़ीरा अन्दोज़ी न कीजिये	81
अप्रैल फूल	53	इहतिकार क्या है ?	81
ग़लत ख़बर ने जान ले ली (हिकायत)	55	इहतिकार सिर्फ़ ग़ल्ले में होता है	82
अप्रैल फूल का धोका (हिकायत)	55	मुसलमानों की तक्लीफ़ पर ख़ुश होने वाला	82
अप्रैल फूल कैसे शुरूअ हुवा ? (हिकायत)	55	ग़ल्ला महंगा होने का इन्तिज़ार करने वाले की तफ़्हीम (हिकायत)	83
फ़स्ट यर फूल	57		
(10) नाम बिगाड़ना	58		

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
जितने का ख़रीदा है उसी में बेच दो (हिकायत)	84	(23) तन्ज़िया अन्दाज़े गुफ़्तगू इख़्तियार करना	102
पांच दीनार वापस कर दिये (हिकायत)	85	ज़बान से तक्लीफ़ देने वाली का अन्जाम	104
(17) बिला इजाज़त किसी की चीज़ इस्ति'माल न करें	86	(24) गुज़रगाह के बीच या किनारे पर बोलो बराज़ करना	106
लाठी भी बिला इजाज़त न ले	86	(25) मस्जिद में तक्लीफ़ न दीजिये	107
खुशदिली के बिग़ैर दूसरे की चीज़ हलाल नहीं	87	गुस्ले जुमुआ की इब्तिदा कैसे हुई ? (हिकायत)	107
दरख़्त की चन्द पत्तियां (हिकायत)	88	(26) गर्दनें न फलांगें	109
किसी की दीवार का साया ले लेना कैसा ?	88	जहन्नम का पुल	110
वक़्फ़ की चीज़ों का इस्ति'माल	88	(27) नोकदार चीज़ एहतियात से ले कर चलें	110
ज़ाती चराग़ जला लिया (हिकायत)	89	(28) मुंह में बदबू हो तो दूसरों को ईज़ा पहुंचती है	111
(18) तिलावत करते हुए तक्लीफ़ न दीजिये	91	बदबूदार मरहम लगा कर मस्जिद में आने की मुमानअ़त	112
तिलावत आवाज़ से करना बेहतर है मगर कब ?	91	कच्ची प्याज़ खाने से भी मुंह बदबूदार हो जाता है	112
हाजत से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ करना कैसा ?	92	मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं	113
(19) मुक़्तदियों को तक्लीफ़ न दीजिये	92	कच्ची प्याज़ वाले कचूमर और राएते से मोहतात रहिये	113
नमाज़ मुख़्तसर कर देते	93	बदबूदार मुंह ले कर मुसलमानों के मजमए में जाने की मुमानअ़त	114
तवील क़िराअत न करे	93	गोश्त, मछली बेचने वाले	114
(20) उस्ताज़ को तक्लीफ़ देना	95	(29) फ़िरिश्तों को तक्लीफ़ न दीजिये	115
इल्म की बरकत से महरूम रहेगा	95	फ़िरिश्तों को ईज़ा	116
उस्ताद के हुक़ूक़	95	मिस्वाक कर लिया करे	116
उस्ताज़ को धोका देना ज़ियादा बुरा है	96	(30) किसी की जगह या सीट पर क़ब्ज़ा जमाना	117
(21) बुज़ुर्गों को तक्लीफ़ देना (हिकायत)	97	अपनी जगह का ज़ियादा हक़दार कौन ?	117
विलायत का मे'यार (हिकायत)	98	(31) गाड़ी पर स्क्रेच डालना	118
बात न मानने का अन्जाम (हिकायत)	99	(32) गलियों में क्रिकेट, फुटबॉल वग़ैरा	
(22) तौबा के बा'द गुनाहों पर आर दिलाना	100		
खुद भी उसी गुनाह में मुब्तला होगा	101		

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
खेलना	119	(48) क़र्ज़ ख़्वाह को बिला वज्ह टालना	131
(33) पान की पिचकारी	119	अब मेरी रक़म भी लौटा दो (हिकायत)	131
(34) इस्तिन्जा ख़ाने का इस्ति'माल	120	क़र्ज़ की अदाएगी में अच्छी निय्यत का सिला	132
(35) ग़लत़ पार्किंग	120	(49) मक़रूज़ को धमकियां देना	132
(36) बिला ज़रूरत फ़ोन या sms करना	121	क़र्ज़ का सवाब	133
(37) ऊपर से कोई चीज़ फेंकना	122	इमाम बुख़ारी और एक मक़रूज़ (हिकायत)	133
(38) कचरा कूंडी बना लेना	122	(50) रिश्ते देखने का अन्दाज़	134
पालतू बिल्ला घर में ही दफ़्ना दिया (हिकायत)	123	नफ़्सियाती मरीज़ा बन गई (हिकायत)	135
(39) बिन मांगे मश्वरे देना	123	रिश्ते में नेक औ़रत का इन्तिख़ाब किया जाए	136
(40) किसी के घरेलू मुआ़मलात में दख़्ल अन्दाज़ी करना	124	उस ने क़त्ए़ रेह़्मी की	137
(41) हुजूम में धक्के मारना	125	बेटी को कहां बियाह रहे हैं ?	137
(42) वॉल चॉकिंग करना, इश्तिहार लगाना	125	तलाशे रिश्ता (हिकायत)	137
दीवार की कीचड़ (हिकायत)	126	रिश्ते का उसूल	139
(43) क़ुरबानी के जानवर के ख़ून वग़ैरा से किसी की दीवार वग़ैरा ख़राब करना	127	रिश्ता यूं भी होता है (हिकायत)	140
जब पड़ोसी की दीवार पर ख़ून के छींटे पड़े (हिकायत)	127	(51) क़ीमते ख़रीद पर तबसेरे	141
(44) नमाज़ी या सोने वाले के पास बुलन्द आवाज़ से बातें करना	128	(52) घिन दिलाने वाली ह़रकतें करना	142
बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू करने वालों को समझाया (हिकायत)	128	(53) हाथापाई की आ़दत	142
इस्लाह़ फ़रमा दी (हिकायत)	129	(54) बात काटना	142
(45) वक़्त पर दा'वत शुरूअ़ न करना	129	(55) केले वग़ैरा के छिलके प्लेटफ़ॉर्म पर फेंक देना	143
गोश्त भुनने की आवाज़ (हिकायत)	130	(56) महाफ़िल में लाऊड स्पीकर का इस्ति'माल	144
(46) ट्रेन, बस में सफ़ाई का ख़याल न रखना	130	अ़सा तोड़ दिया (हिकायत)	144
(47) घरेलू इस्ति'माल की शै उस की जगह पर न रखना	131	लाऊड स्पीकर का ग़लत़ इस्ति'माल न करें	145
		(57) बे मक़्सद मुलाक़ात में वक़्त ज़ाएअ़ करना	145
		मैं ख़ुद उन के पास पहुंच जाता हूं	146
		(58) गाड़ी चलाते हुए कीचड़ उड़ाना	146
		(59) मुसाफ़ह़े और मुआ़नक़े में कुछ	

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
ज़ियादा ही ज़ोर से दबाना	147	(71) मुर्दे को तक्लीफ़ न दीजिये	166
बेहोश हो गया (हिकायत)	147	मरने वाले के पेट पर भारी चीज़ रखने में एहतियात	167
(60) किसी को झूटा, बद दियानत या रिश्वत ख़ोर क़रार देना	147	घरवालों के रोने से मय्यित को तक्लीफ़ होती है	167
(61) सोई हुई ज़ौजा को छोटे छोटे कामों के लिये उठाना	148	ज़ियारते क़ब्र का मोहतात तरीक़ा	168
(62) मियां बीवी को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काना	149	मरने वाले को राहत पहुंचाइये	168
(63) रिश्ते पर रिश्ता भेजना	150	जूतों की आवाज़ से तक्लीफ़ होती है	169
(64) बैअ़ पर बैअ़ या इजारे पर इजारा करना	150	क़ब्र पर बैठने वाले को तम्बीह (हिकायत)	169
(65) क़िता़र तोड़ना	151	क़ब्र पर पाउं रखा तो आवाज़ आई (हिकायत)	169
क़िता़र में खड़े रहे (हिकायत)	151	उठ तू ने मुझे ईज़ा दी ! (हिकायत)	170
(66) किसी का राज़ फ़ाश करना	152	क़ब्र पर पाउं रखना ह़राम है	170
राज़ फ़ाश नहीं करूंगी (हिकायत)	153	क़ब्र के क़रीब गन्दगी करना	171
येह राज़ किसी पर ज़ाहिर न करना (हिकायत)	154	(72) बद आ'मालियों से तक्लीफ़ न दो	171
राज़ नहीं खोल सकता था (हिकायत)	155	(73) जानवरों को भी तक्लीफ़ न दीजिये	172
(67) ख़ुशियां मनाने के नाम पर दूसरों को तक्लीफ़ देना	156	जानवरों को कुर्सी न बना लो	172
(68) ख़ादिमीन को तक्लीफ़ न दीजिये	157	इस के बच्चे इसे लौटा दो (हिकायत)	173
गुलाम को तक्लीफ़ न दी (हिकायत)	157	चिड़िया की शिकायत	173
ख़ादिमा की तक्लीफ़ का ख़याल (हिकायत)	158	चिड़िया को तक्लीफ़ देने का अन्जाम (हिकायत)	174
ख़ादिम से कपड़े पर सियाही गिर गई (हिकायत)	158	नेक बन्दे च्यूंटियों को भी ईज़ा नहीं देते	174
येह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है (हिकायत)	159	च्यूंटियों के लिये रोटी रखा करते	175
(69) ह़ज के दौरान तक्लीफ़ न दीजिये	160	बेताब च्यूंटी (हिकायत)	175
ह़जरे अस्वद को बोसा किस त़रह़ दें ?	160	च्यूंटियों के हटने का इन्तिज़ार (हिकायत)	176
रमल में भी एहतियात	161	(74) ज़ब्ह़ के वक़्त जानवर को ग़ैर ज़रूरी तक्लीफ़ न दीजिये	176
तक्लीफ़ देने की मुख़्तलिफ़ सूरतें	161	जानवरों पर रह़म की अपील	177
(70) दौराने सफ़र तक्लीफ़ न दीजिये	165	मज़लूम जानवर मुसल्लत़ हो सकता है	178
		मक्खी पर रह़म करना बाइ़से मग़फ़िरत	

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा
हो गया (हि़कायत)	179
मक्खी को मारना कैसा ?	179
ऊंट वाले को मार क्यूं पड़ी ? (हि़कायत)	180
एक मछली भी न चखी (हि़कायत)	180
(75) जानवर लड़वाने से मन्अ़ फ़रमाया	181
ज़ख़्मी गधा (हि़कायत)	182
मच्छर, टिड्डी और बिल्ली पर शफ़्क़त	182
ख़ारिश ज़दा कुत्ते की ख़बरगीरी (हि़कायत)	183
बिल्ली पर रह़्म रह़मते खुदावन्दी का ज़रीआ़	183
(76) घरेलू बिल्ली और परन्दों का ख़याल रखिये	184
तक्लीफ़ देने वाली बिल्ली का क्या किया जाए ?	184
जानवर को चाबुक या आंकड़ा नहीं मारते थे	185
(77) परन्दों को निशाना बाज़ी के लिये इस्ति'माल करना (हि़कायत)	185
मगरमच्छ ने जान बचाई (हि़कायत)	186
अजमेरी गाएं (हि़कायत)	186
शहद की मक्खी का डंक (हि़कायत)	187
(78) जिन्नात को भी तक्लीफ़ न दीजिये	188
जिन्न ने शहीद कर दिया (हि़कायत)	188
बोसीदा हड्डियों से इस्तिन्जा न किया करें	189
तक्लीफ़ न देने के फ़ज़ाइल	190
कौन सा मुसलमान अफ़्ज़ल	190
तक्लीफ़ न देने वाले का सवाब	190
जैसा करोगे वैसा भरोगे	191
तक्लीफ़ देह चीज़ से बचाना ईमान की एक शाख़ है	191
एक नेकी का बदला जन्नत	191
भलाई का इन्आ़म	192
बारगाहे रिसालत में पेश किये जाने वाले आ'माल	192
तक्लीफ़ देह दरख़्त काटने पर इन्आ़म में जन्नत मिली (हि़कायत)	194
तक्लीफ़ देह चीज़ हटाना सदक़ा है	195
जन्नत में दाख़िल किया गया (हि़कायत)	196
रास्ते का कांटा हटाने ने बख़्शिश करा दी (हि़कायत)	197
अल्लाह का प्यारा कौन ?	198
खोटा दिरहम ज़ाएअ़ कर देते (हि़कायत)	200
लोगों को अपने शर से बचाओ	200
फ़िक्हे अक्बर क्या है ? (हि़कायत)	201
क़ब्र की तक्लीफ़ से बचाव का नुस्ख़ा	201
त़लबा को ज़ह़मत न दी (हि़कायत)	202
किसी की दिल शिकनी न हो (हि़कायत)	202
ज़ुल्मन ईज़ा देने की क़सम खा ली तो क्या करे ?	203
तक्लीफ़ पर सब्र का सवाब	204
अ़र्ज़े कलीमी और इरशादे इलाही (हि़कायत)	205
औ़रत की बद अख़्लाक़ी पर सब्र (हि़कायत)	205
किसी की तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ देना	206
एह़सान क्या है ?	207
मुआ़फ़ी मांग लीजिये	207
बद मुआ़श ने तौबा कर ली	208
मआख़िज़ो मराजेअ़	211

www.dawateislami.net

यादद्दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

ISBN
0133011

MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net